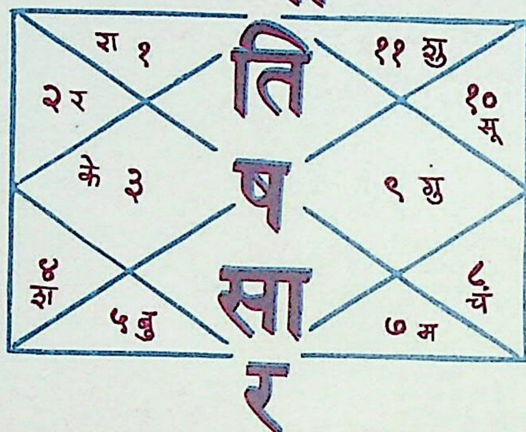
बालबोध ज्योतिषसार संग्रहः



(हिन्दी टीका सहित)

खेमराज श्रीकृष्णदास
प्रकाशन
बम्बई

बालबोधज्योतिषसारसंग्रह

अयोध्यामण्डलान्तर्वर्तिलखीमपुरखीरीनिवासि-
ज्योतिर्वित्पण्डितनारायणप्रसादमिश्र-
लिखितहिन्दीटीकासहित

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन
बम्बई

संस्करण : अप्रेल २०१६, सवंत् २०७३

नूल्य : ७० रुपये मात्र ।

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

प्रस्तावना

विफलान्यन्यशास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ।
सफलं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ।।

अन्य शास्त्र सब निष्फल हैं क्योंकि ज्योतिषशास्त्र की अपेक्षा अन्य शास्त्रों में केवल विवाद ही है, ज्योतिषशास्त्र सफल है जिसमें चन्द्र सूर्य साक्षी हैं।

जिन लोगों को ज्योतिषशास्त्र में अभ्यास कमती है उनके उपकार निमित्त यह—'बालबोधज्योतिषसारसंग्रह' ग्रन्थ हिन्दीटीका सहित हमने लिखकर प्रकाशित किया है, ज्योतिषशास्त्र के प्रायः सबही आवश्यक विषय इसमें आ गये हैं। यद्यपि इस विषय का ग्रन्थ श्रीभट्टाचार्य काशिनाथजी ने संग्रह करके 'शीघ्रबोध' नाम से प्रकाशित किया, तथापि शीघ्रबोध क्रमविरुद्ध ग्रन्थ है, क्योंकि प्रथम होडाचक्र की आवश्यकता थी सो भट्टाचार्यजी ने चौथे (अन्तिम) प्रकरण में लिखा है, इस बालबोध में सम्वत्सरादि क्रम से सब विषय समझकर लिखे गये हैं, पांच रत्नों से विभूषित यह बालबोध ग्रन्थ ज्योतिषशास्त्राध्ययनाभिलाषियों को प्रथम पढ़ने के योग्य है, इसमें पांच रत्न हैं—१ प्रथम संज्ञारत्न, २ द्वितीय योगरत्न, ३ तृतीय मुहूर्तरत्न, ४ चतुर्थ संस्काररत्न, ५ पंचम मिश्ररत्न, लेखक दोष से यदि इसमें कहीं कुछ अशुद्ध लेख हो गया हो उसको पंडितजन क्षमा करें यह हमारी विद्वज्जनों से प्रार्थना है। यह ग्रन्थ सर्वाधिकार सहित लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर प्रेसाध्यक्ष गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजी को दिया है।

सत्कृपाभाजन—

पण्डित नारायणप्रसादमिश्र,
लखीमपुर (खीरी अवध)

श्रीः

बालबोधज्योतिषसारसंग्रहविषयानुक्रमणिका

इति विषयानुक्रमणिका

श्री:

बालबोधज्योतिषसारसंग्रहः

हिन्दीटीकासहितः

आदौ गुरुवरं नत्वा बालबोधविवृद्धये ।
नारायणप्रसादेन क्रियते सारसंग्रहः ॥१॥

प्रथम सद्‌गुरु को प्रणाम करके बालकों के बोध की वृद्धि के निमित्त मिश्र नारायणप्रसाद ने 'ज्योतिषग्रन्थों का सारसंग्रह' किया॥१॥

पञ्चरत्नसमायुक्ते बालबोधाख्यसंग्रहे ।
संज्ञारत्नं च प्रथमं द्वितीयं योगसंज्ञकम् ॥२॥
मुहूर्ताख्यं तृतीयं तु संस्काराख्यं चतुर्थकम् ।
पञ्चमं मिश्ररत्नं च समासेन विलिख्यते ॥३॥

पांच रत्नों से संयुक्त बालबोधनामक इस संग्रहग्रन्थ में पहला संज्ञारत्न, दूसरा योगरत्न, तीसरा मुहूर्त्तरत्न, चौथा संस्काररत्न, पांचवां मिश्ररत्न ये संक्षेप से लिखे जाते हैं॥२-३॥

तत्रादौ संज्ञारत्नं प्रथमं प्रारभ्यते

संवत्सरज्ञान

सम्वत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्युतः ।
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥४॥

विक्रमीय संवत्सर के अंकों में नव संयुक्त करे और साठ का भाग देवे। जो शेष अंक रहे सो प्रभव आदि संवत्सर का नाम क्रमपूर्वक पंडितों करके जानना॥४॥

सम्वत्सरनाम

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥५॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥६॥

सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥७॥
हेमलम्बी विलम्बी च विकारी शार्वरो प्लवः ।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥८॥
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविराधकृत् ।
परिधावी प्रमादी च ह्यानन्दो रक्षसो नलः ॥९॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती ।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥१०॥

अब साठ संवत्सरों के नाम लिखते हैं, १ प्रभव, २ विभव, ३ शुक्ल, ४ प्रमोद, ५ प्रजापति, ६ अंगिरा, ७ श्रीमुख, ८ भाव, ९ युवा, १० धाता, ११ ईश्वर, १२ बहुधान्य, १३ प्रमाथी, १४ विक्रम, १५ वृष, १६ चित्रभानु, १७ सुभानु, १८ तारण, १९ पार्थिव, २० व्यय, २१ सर्वजित, २२ सर्वधारी, २३ विरोधी २४ विकृति, २५ खर, २६ नन्दन, २७ विजय, २८ जय, २९ मन्मथ, ३० दुर्मुख, ३१ हेमलम्बी, ३२ विलंबी ३३ विकारी, ३४ शार्वरी, ३५ प्लव, ३६ शुभकृत, ३७ शोभन, ३८ क्रोधी, ३९ विश्वावसु, ४० पराभव, ४१ प्लवंग, ४२ कीलक, ४३ सौम्य, ४४ साधारण, ४५ विरोधकृत, ४६ परिधावी, ४७ प्रमादी, ४८ आनन्द ४९ राक्षस, ५० नल, ५१ पिंगल, ५२ कालयुक्त, ५३ सिद्धार्थी, ५४ रौद्र, ५५ दुर्मति, ५६ दुन्दुभि, ५७ रुधिरोद्गारी, ५८ रक्ताक्षी, ५९ क्रोधन, ६० क्षय॥५-१०॥

अयंनज्ञान

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदाऽमरम् ।
भवति दक्षिणमन्यदृतुत्रयं निगदिता रजनीमरुतां च सा ॥११॥

शिशिरऋतु से तीन ऋतु (शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म,) में सूर्य की गति उत्तर दिशा को होती है, इसको उत्तरायण कहते हैं, यही देवताओं का दिवस है। शेष तीन ऋतुओं (वर्षा, शरद, हेमन्त) में सूर्य की गति दक्षिण को होती है, इस कारण इसको दक्षिणायन कहते हैं, यही देवताओं की रात्रि कहाती है॥११॥

संक्रान्त्यनुसार ऋतुज्ञान

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात्
षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः ।
ग्रीष्मश्च वर्षा च शरच्च तद्व-
द्धेमन्तनामा कथितश्च षष्ठः ॥१२॥

मकर आदि दो दो राशियों में सूर्य के भोगने से शिशिर आदि छः ऋतु होती हैं अर्थात् मकर कुंभ के सूर्य हो तो शिशिर ऋतु, मीन मेष के सूर्य हो तो वसन्त ऋतु, वृष मिथुन के सूर्य हो तो ग्रीष्म ऋतु, कर्क सिंह के सूर्य हो तो वर्षा ऋतु, कन्या तुला के सूर्य हो तो शरदृतु, वृश्चिक धन के सूर्य हो तो हेमन्त ऋतु होवे है ऐसा कहा है।।१२।।

मासानुसार ऋतुज्ञान

चैत्रादिद्विद्विमासाभ्यां वसन्ताद्यृतवश्च षट् ।
दाक्षिणात्याः प्रगृह्णन्ति दैवे पित्र्ये च कर्मणि ।।१३।।

चैत्र आदि दो दो मास में एक एक ऋतु होती है इस प्रकार बारह मास में छः ऋतुयें होती हैं, जैसे चैत्र वैशाख में वसन्त, ज्येष्ठ आषाढ़ में ग्रीष्म, श्रावण भाद्रपद में वर्षा, आश्विन (कुंवार) कार्तिक में शरद्, मार्ग पौष में हेमन्त, माघ फाल्गुन में शिशिर जानना, ये दक्षिणदेश में देवपितृकर्म में प्रसिद्ध हैं।।१३।।

मासज्ञान

मधुस्तथा माधवसंज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ नभोनभस्यौ ।
तथेषु ऊर्जश्च सहःसहस्यौ तपस्तपस्याविति ते क्रमेण ।।१४।।

मधु (चैत्र), माधव (वैशाख), शुक्र (ज्येष्ठ), शुचि (आषाढ़), नभ (श्रावण), नभस्य (भाद्रपद), इषु (आश्विन), ऊर्ज (कार्तिक), सहः (मार्गशिर), सहस्य (पौष), तप (माघ), और तपस्य (फाल्गुन) ये बारह मास हैं।।१४।।

मासभेदज्ञान

दर्शावधिं मासमुशन्ति चान्द्रं सौरं तथा भास्कर‌राशिभोगात् ।
त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमार्या नक्षत्रमिन्दोर्भगणाश्रयाच्च ।।१५।।

मास चार प्रकारके होते हैं-१ चान्द्रमास, २ सौरमास, ३ सावनमास, ४ नक्षत्रमास, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से अमावास्या तक चान्द्रमास कहाता है, सूर्य के एक राशि भोगने से सौरमास कहाता है, कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से पौर्णमासी तक सावनमास कहाता है, अश्विनी से रेवती पर्यन्त नक्षत्रों के भोग को नाक्षत्रमास कहते हैं।।१५।।

विवाहादौ स्मृतः सौरो यज्ञादौ सावनः स्मृतः ।
पितृकार्येषु चान्द्रः स्यादार्क्षं दानव्रतेषु च ।।१६।।

विवाह आदि कार्यों में सौरमास कहा है, यज्ञ आदि कार्यों में सावनमास कहा है, पितृकार्य में चान्द्रमास और दानव्रत में नाक्षत्रमास ग्रहण करना ऐसा कहा है।।१६।।

अधिमासक्षयमासज्ञाने आदौ अधिकमाससम्भवः

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।
घटिकानां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ॥१७॥

३२ महीने, १६ दिवस, ४ घड़ी व्यतीत हो जाने पर अधिकमास का संभव होता है॥१७॥

शाके बाणकराङ्कके विरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते
चैत्रेर्माधवकेऽनले शिवशिते ज्येष्ठेऽम्बरे चाष्टके ।
आषाढ़े नृपतौ शरे च नभसि भाद्रे च विश्वाङ्कके नेत्रे
चाश्विनकेऽधिमास उदितः शेषेऽन्यके स्यान्नहि॥१८॥

वर्तमान शालिवाहनशाके की अंकसंख्या में नौ सौ पचीस घटावे शेष अंकों में उन्नीस का भाग देवे जो शेष तीन वा ग्यारह रहे तो चैत्र वा वैशाख अधिक मास जानना, शून्य अथवा आठ शेष रहे तो ज्येष्ठ अधिक मास जानना, सोलह का अंक शेष रहे तो आषाढ़ अधिक मास जानना, पांच शेष रहे तो श्रावण अधिक मास जानना, तेरह अंक शेष रहे तो भाद्रपद अधिक मास जानना, तथा दो शेष रहे तो आश्विन (कुवार) अधिक मास जानना। इस प्रकार विचारकर अधिक मास कहना। शेष अंक रहने से अधिक मास नहीं होता है। उदाहरण-शके १८२६ में ९२५ घटाने से शेष अंक ९०१ में १९ का भाग दिया तो शेष ८ बचे इससे ज्येष्ठ अधिक मास आया सो जानना॥१८॥

क्षयमास

असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद-
द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्
तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ॥१९॥

जो चन्द्रमास संक्रान्तिरहित हो अर्थात् शुक्लप्रतिपदा के प्रारंभ से (एक मासभर) अमावास्या के अन्त तक संक्रांति का प्रवेश न हो वही अधिकमास होता है जो चान्द्रमास में कदाचित् दो संक्रांति हों तो क्षयमास जानना-कार्तिक आदि तीन मास (कार्तिक, मार्ग पौष) क्षय होते हैं, चैत्र आदि सात मास अधिक होते हैं, अन्य माघ फाल्गुन क्षय वा अधिक नहीं होते हैं, जिस संवत्सर में क्षयमास होगा उसी वर्ष में अधिक मास दो होंगे, परंतु यहां दो अमावास्याओं के बीच दो संक्रांतियों के प्रवेश होने से क्षयमास जानना॥१९॥

सौरादिमासप्रयोजन

वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरान्मासास्तथा च
तिथयस्तुहिनांशुमानात् ।
यत्कृच्छ्रसूतकचिकित्सितवासराद्यं
तत् सावनाच्च घटिकादिकमार्क्षमानात् ॥२०॥

वर्ष, अयन, ऋतु, युग आदि सौरमास से जानना, महीना और तिथियों का ज्ञान चान्द्रमास से और व्रत उपवास सूतक तथा औषधी आदि कामों में दिन का विचार सावनमास से, घटी आदिक का विचार नक्षत्रमास से जानना॥२०॥

पक्षज्ञान

पूर्वापरं मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सितनीलसंज्ञौ ।
पूर्वस्तु देवश्च परश्च पित्र्यः केचित्तु कृष्णे सितपञ्चमीतः ॥२१॥
आदौ शुक्लः प्रवक्तव्यः केचित् कृष्णेऽपि मासके ॥२२॥

एक मास के दो भाग पूर्व और पर नाम से शुक्ल और कृष्ण नाम वाले दो पक्ष कहाते हैं, तहां शुक्ल प्रतिपदा से पौर्णमासी तक शुक्लपक्ष, फिर कृष्णप्रतिपदा से अमावस्यातक कृष्णपक्ष होता है। शुक्लपक्ष, देवताओं का और कृष्णपक्ष पितरों का होता है। किसी आचार्य का यह भी मत है कि, शुक्ल (सुदी) पंचमी से वदी पंचमी तक शुक्लपक्ष, उपरान्त पन्द्रह दिन अर्थात् वदी पंचमी से सुदी पंचमी तक कृष्णपक्ष। यहां कोई शुक्लप्रतिपदा से अमावास्यातक, कोई कृष्णप्रतिपदा से अमावस्यातक मास मानते हैं। ये दोनों प्रकार के मास और पक्ष देशानुसार प्रचलित हैं।॥२१-२२॥

तिथिज्ञान

मासभाच्चान्द्रभं यावत् गणयेत्तावदेव तु ।
यावन्ति गणनाङ्कानि तावंत्यस्तिथयः क्रमात् ॥२३॥

मास के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र अर्थात् दिन के नक्षत्र तक गिनने से जितनी संख्या हों अर्थात् जितने नक्षत्र गणना में आवे उतनी संख्या की तिथि क्रम से जानना, परंतु यह स्थूल क्रम है। मासनक्षत्र इस प्रकार है कि, चैत्र का चित्रा, वैशाख का विशाखा, ज्येष्ठ का ज्येष्ठा, आषाढ़ का पूर्वाषाढ़ा, श्रावण का श्रवण, भाद्र का पूर्वाभाद्रपदा, आश्विन का अश्विनी, कार्तिक का कृत्तिका, मार्गशिर का मृगशिरा, पौष का पुष्य, माघ का मघा, फाल्गुन का पूर्वाफाल्गुनी। जो नक्षत्र जिस मास का है वह नक्षत्र उस मास की पूर्णिमा को होता है अर्थात् पूर्णिमान्त महीने से गिनती बराबर होती है।॥२३॥

प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया तदनन्तरम् ।
चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा ।।२४।।
नवमी दशमी चैवैकादशी द्वादशी ततः ।
त्रयोदशी ततो ज्ञेया ततः प्रोक्ता चतुर्दशी ।।२५।।
पौर्णिमा शुक्लपक्षे तु कृष्णपक्षे त्वमा स्मृता ।।२६।।

प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुदर्शी, शुक्लपक्ष में पौर्णिमा और कृष्णपक्ष में अमावस्या ये दोनों पक्ष में पन्द्रह पन्द्रह तिथियां कही हैं।।२४-२६।।

तिथिस्वामी

क्रमात्तिथीनां पतयोऽग्निधातृगौरीगणेशोऽहिगुहो रविश्च।
महेशदुर्गान्तकविश्वविष्णुकामेशसोमाः पितरो हि दर्शे ।।२७।।

अब क्रम से तिथियों के स्वामी कहते हैं। प्रतिपदा का स्वामी अग्नि, द्वितीया का ब्रह्मा, तृतीया का गौरी, चतुर्थी के गणेश, पंचमी के सर्प, षष्ठी के स्वामी कार्तिक, सप्तमी के सूर्यदेव, अष्टमी के महादेव, नवमी की दुर्गादेवी, दशमी के यम, एकादशी के विश्वेदेव, द्वादशी के विष्णु, त्रयोदशी के कामदेव, चतुर्दशी के शिव, पूर्णिमा का स्वामी चन्द्रमा, अमावस्या का स्वामी पितर जानना।।२७।।

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्यु ।
कनिष्ठमध्येष्टफलाश्च शुक्लकृष्णे भवन्त्युत्तममध्यहीनाः ।।२८।।

नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा प्रतिपदा आदि सब तिथियों के नाम क्रम से होते हैं। सो इस प्रकार कि प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी को नन्दा, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी, को भद्रा, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी को जया, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी को रिक्ता, पंचमी दशमी पूर्णिमा और अमावस्या को पूर्णा कहते हैं। ये तिथि शुक्लपक्ष में तो क्रम से प्रत्येक तीनों तिथि अनिष्ट, मध्यम, इष्ट फल देने वाली होती हैं और कृष्णपक्ष में सब कार्यों में उत्तम, मध्यम, अधम फल देने वाली होती हैं। जैसे शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से पंचमी तक अशुभ, षष्ठी से दशमी तक मध्यम और एकादशी से पूर्णमासी तक उत्तम होती हैं। कृष्णपक्ष में प्रतिपदा से पंचमी तक उत्तम, षष्ठी से दशमी तक मध्यम और एकादशी से अमावास्यातक अधम होती हैं।।२८।।

वर्जित पदार्थ

कूष्माण्डं बृहतीफलानि लवणं वर्ज्यं तिलाम्लं तथा
तैलं चामलकं दिवं प्रवसता शीर्षं कपालान्त्रकम् ।

निष्पावाश्च मसूरिका फलमथो वृन्ताकसंज्ञं मधु-द्यूतं
स्त्रीगमनं क्रमात् प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश ।।२९।।

प्रतिपदा को कुम्हड़ा, द्वितीया को कटेरी का फल, तृतीया को लवण, चतुर्थी को तिल, पंचमी को खटाई, षष्ठी को तेल, सप्तमी को आंवला, अष्टमी को नारियल, नवमी को काशीफल, दशमी को परवल, एकादशी को निष्पाव, द्वादशी को मसूर, त्रयोदशी को बैंगन, चतुर्दशी को मधु, पूर्णिमा को जूआ, अमावास्या को स्त्रीसंग वर्जित है, इस प्रकार प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्यन्त सोलहों तिथियों में ये वर्जित हैं।।२९।।

वारज्ञान

आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः ।
शुक्रः शनैश्चरश्चैते वासराः परिकीर्तिताः ।।३०।।

आदित्य (सूर्य) चन्द्र, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनैश्चर ये सात वार कहे हैं।।३०।।

गुरुश्चन्द्रो बुधः शुक्रः शुभाः वाराः शुभे स्मृताः ।
क्रूरास्तु क्रूरकृत्ये स्युः सदा भौमार्कसूर्यजाः ।।३१।।

बृहस्पति, चन्द्र, बुध, शुक्र ये वार शुभ कहे सो शुभ कार्य में शुभ फल को देते हैं, मंगल, सूर्य, शनैश्चर ये क्रूर वार सो क्रूर कर्म में सदा ग्रहण किये जाते हैं।।३१।।

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ।
बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ।।३२।।

पूर्वदिशा का स्वामी रवि, आग्नेयदिशा का स्वामी शुक्र, दक्षिणदिशा का स्वामी मंगल, नैर्ऋत्य का स्वामी राहु, पश्चिम का स्वामी शनि, वायव्य का स्वामी चन्द्र, उत्तर का स्वामी बुध, ईशान का स्वामी गुरु इस प्रकार ये दिशाओं के स्वामी हैं।।३२।।

वारकृत्य

सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः ।
भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिद्ध्यति ।।

चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र ये वार सब कार्यों में सिद्धिदायक होते हैं और रवि, मंगल, शनि इन वारों में जो काम करना कहा है वही काम सिद्ध होता है।।३३।।

वारदोषादोष

न वारदोषा प्रभवन्तिरात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् ।
दिवा शशाङ्कार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ।।

देवेज्य (बृहस्पति), देत्येज्य (शुक्र), दिवाकर (सूर्य) इन वारों का रात्रि में दोष नहीं है और शशाङ्क (चन्द्र) शनि, मंगल इन वारों का दिन को दोष नहीं है और बुधवार का दोष सर्वदा सब कामों में निन्दनीय है।।३४।।

दिनज्ञान

चैत्रादिद्विगुणा मासा गताश्च तिथिभिर्युताः ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषाङ्के दिन उच्यते ।।३५।।
श्रीदिनं कलहश्चैव आनन्दः कालकण्टकः ।
धर्मदिनं तपश्चैव सप्तमो जयनन्दनः ।।३६।।

चैत्र आदि माससंख्या को दूना करे और गत तिथि मिला देवे और सात का भाग देवे जो अंक शेष रहे वही दिन जानना। एक शेष रहे तो श्रीदिन, दो शेष रहे तो कलह, तीन शेष से आनन्द, चार शेष से कालकंटक, पांच शेष से धर्मदिन, छः शेष से तप, सात शेष से जयनन्दन नाम दिन जानना, ये दिन अपने नाम के समान फल देते हैं।।३५-३६।।

नक्षत्रज्ञान

द्विनिघ्नमासस्तिथियुग्विधूनो भशेषितः स्याद्डुशेषसंख्या ।
मासस्तु शुक्लादित एव बोध्यः कृष्णे द्विहीने मुनयो वदन्ति ।।३७।।

चैत्र आदि से वर्तमान मास संख्या तक गणना करके उस संख्या को दूना करे और तिथि संख्या को जोड़ देवे, शुक्लपक्ष हो तो एक घटा देवे, कृष्णपक्ष हो तो दो घटा देवे, मास संख्या चैत्र शुक्ल से गिने, तिथि को संख्या भी शुक्लप्रतिपदा से मिलावे, उसमें सत्ताईस का भाग देवे जो शेष रहे वही अश्विनी आदि से गिनकर नक्षत्र संख्या जानिये ऐसा मुनिजनक कहते हैं। उदाहरण-सम्वत् १९६२ में फाल्गुन शुक्लद्वादशी बुधवार को नक्षत्र जानना है तो चैत्र से फाल्गुन तक बारह मास हुए तो बारह को दूना किया तो चौबीस हुए शुक्ल प्रतिपदा से द्वादशी तक बारह संख्या जोड़ देने से छत्तीस हुए शुक्लपक्ष होने से एक घटाया तो पैंतीस रहे, इसमें सत्ताईस का भाग दिया तो ८ शेष रहे तो अश्विनी से आठवां नक्षत्र पुष्य हुआ।।३७।।

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततोऽश्लेषा मघा तथा ।।३८।।

पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः ।
हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ॥३९॥
अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ।
पूर्वाषाढोत्तराषाढस्त्वभिजिच्छ्रवणस्तथा ॥४०॥
धनिष्ठा शतताराख्यं पूर्वाभाद्रपदा ततः ।
उत्तराभाद्रपाच्चैव रेवत्येतानि भानि च ॥४१॥

१ अश्विनी, २ भरणी, ३ कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वाफाल्गुनी, १२ उत्तराफाल्गुनी, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाती, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ जेष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढ़ा, २१ उत्तराषाढ़ा, २२ अभिजित् २३, श्रवण, २४, धनिष्ठा, २५ शतभिषा, २६ पूर्वाभाद्रपदा, २७ उत्तराभाद्रपदा, २८ रेवती ये अट्ठाईस नक्षत्र हैं॥३८-४१॥

नक्षत्रस्वामी

दस्रौ यमोऽनलो धाता चन्द्रो रुद्रोऽदितिर्गुरुः ।
भुजङ्गमश्च पितरो भगोऽर्यमदिवाकरौ ॥४२॥
त्वष्टा वायुश्च शक्राग्नी मित्रः शुक्रश्च निर्ऋतिः ।
जलं विश्वे विधिर्विष्णुर्वासवो वरुणस्तथा ॥४३॥
अजैकपादहिर्बुध्न्यः पूषेति कथितो बुधैः ।
अष्टाविंशतिसंख्यानां नक्षत्राणामधीश्वराः ॥४४॥

अब नक्षत्रों के स्वामी कहते हैं, अश्विनी के स्वामी अश्विनीकुमार, भरणी के यम, कृत्तिका का अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा का चन्द्रमा, आर्द्रा के शिव, पुनर्वसु का अदिति, पुष्य के बृहस्पति, आश्लेषा के सर्प, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी का स्वामी भगदेवता, उत्तराफाल्गुनी का अर्यमा, हस्त के सूर्य, चित्रा के विश्वकर्मा, स्वाती का वायु, विशाखा के इन्द्र और अग्नि, अनुराधा के सूर्य, ज्येष्ठ का इन्द्र, मूल का निर्ऋति, पूर्वाषाढ़ा का जल, उत्तराषाढ़ा के विश्वेदेव, अभिजित् का विधि, श्रवण के विष्णु, धनिष्ठा का वसु, शतभिषा का वरुण, पूर्वाभाद्रपदा का अजचरण, उत्तराभाद्रपदा का अहिर्बुध्न्य, रेवती का पूषा, ये नक्षत्रों के स्वामी हैं॥४२-४४॥

होडाचक्रम्

चू चे चो ला	अश्विनी	हू हे हो डा	पुष्य	रू रे रो ता	स्वाती	जू जे जो सा	अभिजित्
ली लू ले लो	भरणी	डी डू डे डो	आश्लेषा	ती तू ते तो	विशाखा	सी सू से सो	श्रवण
आ ई ऊ ए	कृत्तिका	मा मी मू मे	मघा	ना नी नू ने	अनुराधा	गा गी गू गे	धनिष्ठा
ओ वा वी वू	रोहिणी	मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी	नो या यी यू	ज्येष्ठा	गो सा सी सू	शतभिषा
वे वो का की	मृगशिर	टे टो पा पी	उत्तराफाल्गुनी	ये यो भा भी	मूल	से सो दा दी	पूर्वाभाद्रपदा
कू घ ङ छ	आर्द्रा	पू ष ण ठ	हस्त	भू ध फ ढा	पूर्वाषाढ़ा	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपदा
के को हा ही	पुनर्वसु	पे पो रा री	चित्रा	भे भो जा जी	उत्तराषाढ़ा	दे दो चा ची	रेवती

नामराशिज्ञानम्

चू चे चो लाश्विनी ज्ञेया ली लू ले लो भरण्यथ ।
आ ई ऊ ए कृत्तिका स्यादो वा वी वू चु रोहिणी ॥४५॥
वे वो का की मृगशिरा कु घ ङ छार्द्रका मता ।
के को हा ही पुनर्भं च हू हे हो डा च पुष्यभम् ॥४६॥
डी डू डे धो तयाऽश्लेषा मा मी मू मे मघा तथा ॥
मो टा टी टू भवेत्पूर्वा टे टो पा प्युत्तरा स्मृता ॥४७॥
हस्तः पू ष ण ठ प्रोक्ता चित्रा पे पो र रि स्मृता ॥
रू रे रो ता स्मृता स्वाति ती तू ते तो विशाखिका॥४८॥

ना नी नू नेऽनुराधा स्याज्ज्येष्ठा नो या यि यु स्मृता ।।
ये यो भा भी भवेन्मूलं पूर्वाषाढा भु धा फ ढा ।।४९।।
भे भो जा ज्युत्तराषाढ़ा जू जे जो खाऽभिजित्स्मृता ।।
खी खू खे खो श्रवणभं गा गी गू गे धनिष्ठिका ।।५०।।
गो सा सी सू शतभिषा पू भा से सो द दि स्मृता ।।
उ भा दू था झ ञ ज्ञेया दे दो चा ची तु रेवती ।।५१।।

एक नक्षत्र में चार चरण होते हैं। यथा चू चे चो ला अश्विनी, ली लू ले लो भरणी इत्यादि पूर्वोक्त श्लोकों का अर्थ होडाचक्र पर से जान लेना।।४५-५१।।

द्वादशराशि

मेषो वृषश्च मिथुनः कर्कः सिंहश्च कन्यका ।
तुलालिधनुषश्चैव मृगकुंभझषा इति ।।५२।।

१ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह, ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुंभ, १२ मीन ये बारह राशियां हैं।।५२।।

राशिस्वामी

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधः कन्यामिथुनयोः कर्कस्याधिपतिर्विधुः ।।५३।।
स्यान्मीनधनुषोर्जीवः शनिर्मकरकुम्भयोः ।।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ।।५४।।

मेष और वृश्चिक का स्वामी भौम (मंगल), वृष और तुला का स्वामी शुक्र, कन्या और मिथुन का स्वामी बुध, कर्क का स्वामी चंद्रमा, मीन और धनु का स्वामी जीव (बृहस्पति), मकर और कुंभ का स्वामी शनि, सिंह का स्वामी सूर्य है यह उत्तम पंडितों ने कहा है।।५३-५४।।

राशिज्ञान

सप्तविंशतिभानां च नवभिर्नवभिः पदैः ।
अश्विनिप्रमुखानां च मेषाद्या राशयः स्मृताः ।।५५।।

अभिजित् को छोड़कर अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों के नौ नौ चरण की एक राशि मेष आदि है सो आगे लिखे अनुसार जानना।।५५।।

अश्विनी भरणी कृतिकापादमेकं मेषः १ ।
कृत्तिकायास्त्रयः पादा रोहिणीमृगशिरार्द्धं वृषभः २ ।
मृगशिरार्द्धमार्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः ३ ।

पुनर्वसुपादमेकं च पुष्यामाश्लेषान्तं कर्कः ४ ।
मघा पूर्वा उत्तराफाल्गुनीपादमेकं सिंहः ५ ।
उत्तराफाल्गुनीत्रयः पादाः हस्तश्चित्रार्द्धं कन्या ६ ।
चित्रार्द्धं स्वाती विशाखापादत्रयं तुला ७ ।
विशाखापादमेकमनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ८ ।
मूलं च पूर्वाषाढोत्तराषाढापादमेकं धनुः ९ ।
उत्तरायास्त्रयः पादाः श्रवणधनिष्ठार्द्धं मकरः १० ।
धनिष्ठार्द्धं शतभिषा पूर्वाभाद्रपदापादास्त्रयः कुंभः ११ ।
पूर्वाभाद्रपदापादमेकमुत्तराभाद्रपदारेवत्यन्तं मीनः ।।१२।।

अश्विनी के और भरणी के चार २ चरण, कृत्तिका का एक चरण मेष राशि होती है। कृतिका के तीन चरण, रोहिणी के चारों चरण और मृगशिरा आधी अर्थात् दो चरण आदि के, इन नव चरणों की वृषराशि होती है। इसी प्रकार मिथुन आदि राशियों को जानना सो चक्र में स्पष्ट समझ लेना। नौ नौ चरणों की एक एक राशि सो चक्र से जानना। जैसे चुन्नीलाल का पहला अक्षर अश्विनी के प्रथम चर चरण में है और मेषराशि है। एवं चिरौंजीलाल नाम से मीन राशि जानना। इसी प्रकार नाम के पहले अक्षर से राशि जान लेना।।

मेष	वृष	मि	क	सिं	क	तु	वृ	धनु	म	कुं	मी	राशि
चू	ई	का	ही	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी	न
चे	ऊ	की	हू	मी	पा	री	ना	यो	जा	गे	दू	व
चो	ए	कु	हे	मू	पी	रू	नी	भा	जी	गो	था	च
ला	ओ	घ	हो	मे	पू	रे	नू	भी	खी	सा	झ	र
ली	वा	ङ्	डा	मो	ध	रो	ने	भू	खू	सी	ञ	ण
लू	वी	छ	डी	टा	ण	ता	नो	धा	खे	सू	दे	ना
	व	के	डू	टी	ठ	ती	या	फा	खो	से	दो	मा
ला	व	का	डे	टू	पे	तू	यी	ढा	गा	सो	चा	क्ष
आ	वो	हा	डो	टे	पो	ते	यू	भे	गी	दा	ची	र

झञ मीने धने फाढा धङ युग्मे ठणा सुता ।
न प्रोक्ता ङञणा वर्णा गजडः स्याद्यथाक्रमात् ।।१।।

झ ञ अक्षर मीनराशि में है। फा ढा धनुराशि में और घ ङ मिथुनराशि में तथा ठा णा कन्याराशि में हैं और ङ ञ ण इन तीन अक्षरों का नाम धरते नहीं बनता सो

ङ के स्थान में ग अक्षर का नाम धरे, ञ के स्थान में ज अक्षर का नाम धरे और ण के स्थान में ड अक्षर का नाम धरे।।१।। आला मेष, उवा वृष, काछा मिथुन, डाहा कर्क, माटा सिंह, पाठा कन्या, राता तुला नोया वृश्चिक, भाधा धनु खागा मकर, गोसा कुंभ, दोचा मीन।।

अधोमुखनक्षत्र

मूलाग्नेयमघाद्विदैवभरणीसार्पाणि पूर्वात्रयं
ज्योतिर्विद्भिरधोमुखं हि नवकं भानामिदं कीर्तितम् ।
वापीकूपतडागगर्तपरिखाखातं विधेरुद्धृति-
क्षेपौ द्यूतबिलप्रवेशगणितारम्भाः प्रसिद्ध्यन्ति च ।।५६।।

मूल, कृत्तिका, मघा, विशाखा, भरणी, आश्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा पूर्वाभाद्रपदा ये नव नक्षत्र पंडितों ने अधोमुखसंज्ञक कहे हैं। इन अधोमुखसंज्ञा वाले नक्षत्रों में वापी (बावड़ी), कूप (कुवां), तडाग (तालाब), गर्त (गड़हा), परिखा (खाई), इनका खोदना, द्रव्य निकालना और रखना, द्यूत (जुआं खेलना) बिल में प्रवेश होना, गणित का आरम्भ ये काम करने से सिद्ध होते हैं।।५६।।

तिर्यङ्मुखनक्षत्र

ज्येष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरः पूषाऽनुराधानिल-
त्वाष्ट्राख्यानि वदन्ति भानि मुनयस्तिर्यङ्मुखान्येषु च
अश्वेभोष्ट्रलुलायरासभवृषोरभ्रादिदान्त्यश्विना
गन्त्रीयन्त्रहलप्रवाहगमनारम्भाः प्रसिद्ध्यन्ति च।।५७।।

ज्येष्ठा, पुनर्वसु, हस्त अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, स्वाति, चित्रा ये नव नक्षत्र मुनियों ने तिर्यङ्मुखसंज्ञक कहे हैं। इन तिर्यङ्मुखसंज्ञा वाले नक्षत्रों में अश्व (घोड़ा), इभ (हाथी), उष्ट्र (ऊंट), लुलाय (भैंसा), रासभ (गधा), वृष (बैल), मेढ़ा, सूकर, कुत्ता इनका, ग्रहण करना और गंत्री यंत्र (कोल्हू आदि), हल इनका चलाना तथा यात्रा आदिक कार्य सिद्ध होते हैं।।५७।।

ऊर्ध्वमुखनक्षत्र

पुष्यार्द्राश्रवणोत्तराशतभिषक्ब्राह्मश्रविष्ठाह्वया-
न्यूर्ध्वास्यानि नवोदितानि मुनिभिर्धिष्ण्यान्यथैतेषु च ।
प्रासादध्वजधर्मवारणगृहप्राकारसत्तोरणो-
च्छ्रायारायविधिर्हितो नरपतेः पट्टाभिषेकादि च।।५८।।

पुष्य, आर्द्रा, श्रवण, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, शतभिषा, रोहिणी, धनिष्ठा ये नव नक्षत्र मुनियों ने ऊर्ध्वमुख संज्ञक कहे हैं। इन ऊर्ध्वमुख

संज्ञावाले नक्षत्रों में देवमन्दिर बनवाना, ध्वजा बनवाना तथा घर, कोट, भीत का निर्माण करना, तोरण (बन्दनवार) बँधवाना, बाग लगवाना, राज्याभिषेक (राजतिलक) ये कार्य सिद्ध होते हैं।।५८।।

ध्रुवस्थिरनक्षत्र

रोहिणीसहितमुत्तरात्रयं कीर्तयन्ति मुनयो ध्रुवाह्वयम् ।
बीजहर्म्यनगराभिषेचनारामशान्तिषु हितं स्थिरेषु च ।।५९।।

रोहिणी, तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपदा) ये नक्षत्र मुनियों ने ध्रुवस्थिर संज्ञक कहे हैं। इन ध्रुवस्थिरसंज्ञा वाले नक्षत्रों में बीज बोना, हर्म्य (अटारी) तथा नगर में प्रवेश, राजतिलक, बाग लगाना ये कार्य शुभ होते हैं। भावार्थ यह कि, ध्रुव स्थिर नक्षत्रों में स्थिर कार्य करना।।५९।।

मृदुनक्षत्र

त्वाष्ट्रमित्रशशिपूषदैवतान्यामनन्ति मुनयो मृदून्यथ ।
मित्रकार्यरतिभूषणाम्बरोद्गीतिमङ्गलविधानमेषु तु ।।६०।।

चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती इन नक्षत्रों को मुनियों ने मृदुसंज्ञक कहा है इन मृदुसंज्ञा वाले नक्षत्रों में मित्र कार्य, स्त्रीप्रसंग, आभूषण और वस्त्रधारण, गाना आदि अनेक मङ्गल कार्य करना।।६०।।

लघुनक्षत्र

अश्विनीगुरुभमर्कदैवतं साभिजिल्लघुचतुष्टयं मतम् ।
पुण्यभूषणकलारतौषधज्ञानशिल्पगमनेषु सिद्धिदम्।६१।।

अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित् ये चार नक्षत्र लघुसंज्ञक हैं इनमें दूकान खोलना, आभूषण धारण करना, क्रीड़ा करना, औषधी बनाना, कारीगरी का काम खोलना, यात्रा करना ये काम सिद्ध होते हैं।।६१।।

तीक्ष्णनक्षत्र

मूलशुक्रशिवसार्पदैवतान्युल्लपन्त्यथ च तीक्ष्णसंज्ञया ।
भूतयक्षनिधिमंत्रसाधनं भेदबन्धवधकर्म चात्र तु ।।६२।।

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा आश्लेषा इन नक्षत्रों की तीक्ष्ण संज्ञा कही है। इनमें भूत और यक्ष आदिकों की पीड़ा का निवारण करना, द्रव्य निकालना, मंत्रसाधन भेद, बन्धन ये कर्म शुभ होते हैं।।६२।।

चरनक्षत्र

वैष्णवत्रययुतः पुनर्वसुर्मारुतं च चरपञ्चकं त्विदम् ।
दन्तवाजिकरभादिवाहनारामयानविधिषु प्रशस्यते ।।६३।।

श्रवण, धनिष्ठा, शतिभिषा, पुनर्वसु, स्वाति ये पांच नक्षत्र चरसंज्ञक हैं, इनमें हाथी, घोड़ा आदि अनेक प्रकार के वाहन रखना, बाग में जाना, पालकी रथ आदि की सवारी करना इन कामों में ये चार नक्षत्र शुभ जानना।।६३।।

उग्रनक्षत्र

पूर्विकात्रितयमान्तकं मघात्युग्रपञ्चकमिदं जगुर्बुधाः ।
शाठ्यनाशविषघातबन्धनोत्साहशस्त्रदहनादिषु स्मृतम् ।।६४।।

तीनों पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा,) भरणी, मघा ये पांच नक्षत्र पंडितों ने उग्रसंज्ञक कहे हैं, इनमें शठता करना, नाश, विषघात, बन्धन, उत्साह, शस्त्र चलाना, जलाना आदि कर्म करना कहा है।।६४।।

मिश्रनक्षत्र

हव्यवाहभयुतं द्विदैवतं मिश्रसंज्ञमथ मिश्रकर्मसु ।
स्वाभिधानसमकर्मसाधनं कीर्तितानि सकलानि सूरिभिः ।।६५।।

कृत्तिका, विशाखा इन दो नक्षत्रों की मिश्रसंज्ञा है, सो मिश्रकामों में अर्थात् मिले हुये कार्य इन नक्षत्रों में करना, इन नक्षत्रों के समान कर्म करने योग्य हैं ऐसा सम्पूर्ण पंडितों ने कथन किया है।।६५।।

पञ्चक

वासवोत्तरदलादिपञ्चके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम् ।
प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहः शय्यकाविरचनं च वर्जयेत्।६६।।

धनिष्ठा के उत्तरार्ध से लेके रेवतीपर्यन्त नक्षत्रों को पंचक कहते हैं, अर्थात् कुंभ और मीन का चन्द्रमा पंचक कहाता है, इस पंचक में दक्षिण दिशा की यात्रा, घर का छवाना, प्रेतदाह, तृण (घासफूस) और काष्ठ (लकड़ी) का संग्रह (इकट्ठा करना) तथा शय्या (खाट) आदि बनवाना इत्यादि कार्य नहीं करे।।६६।।

परकृतमखिलं निहन्ति पुष्यो ।
न खलु निहन्ति परन्तु पुष्यदोषम् ।
ध्रुवममृतकरोऽष्टमेऽपि पुष्ये
विहितमुपैति सदैव कर्मसिद्धिम् ।।६७।।

पुष्य दूसरे के दोष और अष्टम स्थान स्थित चन्द्र के दोष को दूर करता है परंतु पुष्य के दोष को दूसरा दूर नहीं कर सकता है, पुष्य में किया हुआ सब कार्य सिद्ध होता है, आठवें चन्द्रमा हो तो भी पुष्य में कार्य करे।।६७।।

सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां
तथैव पुष्यो बलवानुडूनाम् ।
चन्द्रे विरुद्धेऽप्यथ गोचरेऽपि
सिद्ध्यन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये ।।६८।।

जिस प्रकार चतुष्पदों (चौपायों) में सिंह बलवान् है उसी प्रकार नक्षत्रों में पुष्यनक्षत्र बलवान् है, चन्द्रमा अनिष्ट अर्थात् चौथा, आठवां, बारहवां हो और गोचर में भी अरिष्ट हो तो भी पुष्य में किया हुआ कार्य सिद्ध होता है।।६८।।

ग्रहेण विद्धोऽप्यशुभान्वितोऽपि
विरुद्धतारोऽपि विलोमगोऽपि
करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं
विहाय पाणिग्रहणं तु पुष्यः ।।६९।।

ग्रहों से विद्ध, अशुभग्रह से युक्त अथवा तारा इसके प्रतिकूल हो तो भी पुष्य में किया हुआ कार्य सिद्ध होता है, परंतु विवाह में पुष्य वर्जित है।।६९।।

योगज्ञान

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चन्द्रमेव च ।
गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादृक्षशेषतः ।।७०।।

पुष्य नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक गिने और श्रवण नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने। दोनों संख्याओं को युक्त कर सत्ताईस का भाग देवे जो शेष रहे वही योग विष्कंभ से गिनकर जाने। उदाहरण-संवत् १९६२ फाल्गुन शुदी पूर्णिमा शनिवार को योग जानना है, सूर्य पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के हैं पुष्य नक्षत्र से पूर्वाभाद्रपदा पर्यन्त १८ संख्या हुई और श्रवण से दिन नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी तक १७ संख्या हुई और दोनों संख्याओं को युक्त करने से ३५ संख्या हुई। सत्ताईस का भाग देने से शेष ८ रहे विष्कंभ से गिना तो आठवां धृति योग है सो जानना।।७०।।

योगों के नाम

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ।।७१।।
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।
वज्रसिद्धी व्यतीपातो वरीयान् पारिघः शिवः ।।७२।।
सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेन्द्रौ वैधृतिः क्रमात् ।
सप्तविंशतियोगास्तु कुर्युर्नामिसमं फलम् ।।७३।।

१ विष्कम्भ, २ प्रीति ३ आयुष्यमान, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगण्ड, ७ सुकर्मा, ८ धृति, ९ शूल, १० गण्ड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३ व्याघात, १४ हर्षण, १५ वज्र, १६ सिद्धि, १७ व्यतीपात, १८ वरीयान् १९ परिघ, २० शिव, २१ सिद्ध, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ ऐन्द्र, २७ वैधृति, ये सत्ताईस योग नाम के तुल्य फल करते हैं। अर्थात् जो इनके नामों का अर्थ है वही फल जानना।।७१-७३।।

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः ।
सवैधृतिस्तु व्यतिपातनामा सर्वोप्यनिष्टः परिघस्य चार्धम् ।।७४।।
तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नव पञ्च शूले ।
गण्डेऽतिगण्डे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ।।७५।।

इन पूर्वोक्त योगो में जो विरुद्ध योग हों उनके आदि को चतुर्थांश (चौथा भाग) वर्जित हैं, व्यतीपात और वैधृति संपूर्ण वर्जित है और परिघयोग आधा वर्जित है, विष्कंभ और वज्र की तीन २ घड़ी, व्याघात की नव घड़ी और शूल की पांच घडी, गण्ड और अतिगंड की छः घड़ी शुभ कार्य में वर्जित है।।७४-७५।।

करणज्ञान

तिथिं च द्विगुणीकृत्य एकहीनं च कारयेत् ।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ।।७६।।

तिथि संख्या को दूना करे एक उसमें हीन करें अर्थात् घटा देवे और सात का भाग देवे जो अंक शेष रहे वह करण बव आदि से गिनकर जाने।।७६।।

बवाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततो भवेत्तैतिलनामधेयम् ।
गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानि सप्त ।।

अथवा-बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
गरश्च वणिजो विष्टिः सप्तैतानि चराणि च ।।७७।।
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमे दले ।
चतुष्पदश्च नागश्च अमावास्यादले द्वये ।।७८।।
शुक्लप्रतिपदायाश्च किंस्तुघ्नः प्रथमे दले ।
स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगुर्बुधाः ।।७९।।
शुक्लप्रतिपदायान्ते बवाख्यः करणो भवेत् ।
एकादशैव ज्ञेयानि चरस्थिरविभागतः ।।८०।।

१ बव, २ बालव, ३ कौलव, ४ तैतिल, ५ गर, ६ वणिज, ७ विष्टि (भद्रा ये सात करण चरसंज्ञक हैं। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के पश्चिम दल अर्थात् परार्ध में शकुनि करण होता है और अमावस्या के पूर्वदल में चतुष्पद करण तथा परदल में नागकरण होता है। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के पूर्वदल में किंस्तुघ्नकरण होता है ये चार करण स्थिर संज्ञक हैं अर्थात् ये चारों स्थिर रहते हैं। शुक्लप्रतिपदा के अंत में बवनाम करण होता है, फिर बालव फिर कौलव फिर तैतिल इसी प्रकार सातों करण सब तिथियों में बार बार आते हैं। एवं ग्यारह करण चर और स्थिर भेद से दो प्रकार के होते हैं। उदाहरण-जैसे शुक्लपक्ष की दशमी को करण जानना है तो दश के दूने वीस में एक घटाया तो रहे १९ सात का भाग देने से शेष रहे ५ पांचवां गर करण दशमी के परदल में जानना। तिथि की गणना शुक्लप्रतिपदा से जानना। आगे चक्र लिखते हैं उसमें स्पष्ट समझ लेना।।७७-८०।।

कृष्णपक्षकरणचक्र

प्रतिप.	द्विती.	तृतीया	चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी	अष्टमी	तिथयः
बालव कौलव	तैतिल गर	वणिज विष्टि	बव बालव	कौलव तैतिल	गर वणिज	विष्टि बव	बालव कौलक	पूर्वदल परदल
नवमी	दशमी	एकाद.	द्वादशी	त्रयोद.	चतुर्द.	अमावस्या		तिथयः
तैतिल गर	वणिज विष्टि	बव बालव	कौलव तैतिल	गर वणिज	विष्टि शकुनि	चतुष्पद नाग		पूर्वदल परदल

शुक्लपक्षकरणचक्र

प्रतिप.	द्विती.	तृतीया	चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी	अष्टमी	तिथयः
किंस्तुघ्न बव	बालव कौलव	तैतिल गर	वणिज विष्टि	बव बालव	कौलव तैतिल	गर वणिज	विष्टि बव	पूर्वदल परदल
नवमी	दशमी	एकाद.	द्वादशी	त्रयोद.	चतुर्द.	पूर्णिमा		तिथयः
बालव कौलव	तैतिल गर	वणिज विष्टि	बव बालव	कौलव तैतिल	गर वणिज	विष्टि बव		पूर्वदल परदल

पौष्टिकस्थिरशुभानि बवाख्ये बालवे द्विजहितान्यपि कुर्यात् ।
कौलवे प्रमदमित्रविधानं तैतिले शुभगताश्रयकर्म ।।८१।।

पौष्टिक (व्रतादि), स्थिर (देवालय निर्माणादि) शुभकर्म बव करण में करे और बालव करण में ब्राह्मणों का हितकर्म करे, कौलव करण में उन्माद और मित्रता करे, तैतिल करण में विवाहादि मंगल कार्य करे।।८१।।

गरे च बीजाश्रयकर्षणानि वाणिज्यके स्थैर्यवणिक्क्रियाश्च ।
न सिद्धिमायाति कृतं च विष्ट्यां
विषारिघातादिषु तन्त्रसिद्धिः ।।८२।।

गर करण में बीज बोना, हल चलाना आदि काम करे, वणिज करण में स्थिर कर्म (देवप्रतिष्ठा, मन्दिर बनाना, हाट में बैठना आदि कर्म) और व्यापार कर्म करे, विष्टि करण (भद्रा) में कोई भी शुभ कार्य सिद्धिप्रद नहीं होता, परंतु क्रूर कर्म विषघातादि कर्म वर्जित नहीं हैं।।८२।।

मंत्रौषधानि शकुनौ तु सपौष्टिकानि
गोविप्रराज्यपितृकर्म चतुष्पदे तु ।
सौभाग्यदारुणधृतिध्रुवकर्म नागे
किंस्तुघ्ननाम्नि निखिलं शुभकर्म कार्यम् ।।८३।।

शकुनिकरण में मंत्र, औषध, ग्रहपूजा आदि कर्म को, चतुष्पद करण में गौ, ब्राह्मण, राज्य और पितृसम्बंधी कार्य करे, नाग करण में सौभाग्य कर्म, युद्ध में जाना, धीरज और विद्याभ्यास आदि कर्म करे, किंस्तुघ्न करण में सम्पूर्ण शुभ कार्य करे।।८३।।

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णे पक्षे परे दले ।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वे दले स्मृता ।।८४।।
एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्ले पक्षे परे दले ।
अष्टम्यां पूर्णिमायां च भद्रा पूर्वे दले स्मृता ।।८५।।

कृष्णपक्ष में दशमी और तृतीया को परदल (उत्तरार्ध) में भद्रा होती है, सप्तमी और चतुर्दशी को पूर्वदल (पूर्वार्द्ध) में भद्रा होती है। तथा शुक्लपक्ष में एकादशी और चतुर्थी को परदल में भद्रा होती है अष्टमी और पूर्णमासी को पूर्वदल में भद्रा होती है, इसी को विष्टिकरण कहते हैं।।८४-८५।।

कराली नन्दनी रौद्री दुर्मुखी सुमुखी तथा ।
मिश्री च वैष्णवी हंसी ह्यष्टौ नामानि भद्रया ।।८६।।

१ कराली, २ नन्दनी, ३ रौद्री, ४ दुर्मुखी, ५ सुमुखी, ६ मिश्री, ७ वैष्णवी, ८ हंसी, भद्रा के ये आठ नाम हैं। कोई पंडित कहते हैं कि, कृष्णपक्ष में तीज को कराली,

सप्तमी को नन्दनी, दशमी को रौद्री, चतुर्दशी को दुर्मुखी और शुक्लपक्ष में चतुर्थी को सुमुखी, अष्टमी को मिश्री, एकादशी को वैष्णवी, पूर्णिमा को हंसी नामवाली भद्रा होती है परंतु इस बात का कोई विशेष प्रमाण नहीं मिला।।८६।।

भद्रावासज्ञान

मीने मेषे च सिंहे अलिनि निवसते स्वर्गलोके च भद्रा
कन्यायां तौलिसंस्थे धनुषि च मकरे नागलोके स्थितिश्च ।
कर्के कुंभे वृषे स्यान्मिथुनहिमकरे वर्तते मर्त्यलोके ज्ञेया
चन्द्रप्रवाहात्त्रिभुवन विजया मर्त्यसंस्था विवर्ज्या ।।८७।।

मीन, मेष, सिंह, वृश्चिक इनका चन्द्रमा हो तो भद्रा का वास स्वर्गलोक में जानना और कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा हो तो पाताल लोक में भद्रा का वास जानना तथा कर्क, कुंभ, वृष, मिथुन इनका चन्द्रमा हो तो भद्रा मर्त्यलोक में जानना इस प्रकार चन्द्रमा की गति से गमन करने वाली भद्रा त्रिभुवन को विजय करती है। मर्त्य (मनुष्य) लोक में स्थित भद्रा शुभ कार्य में वर्जित है।।८७।।

भद्राङ्गज्ञान

नाड्यस्तु पञ्चवदनेऽथ गले तथैका ।
वक्षो दशैकसहितं नियतं चतस्रः ।
नाभ्यां कटौ षडथ पुच्छलया च तिस्रो ।
विष्टेर्बुधैरभिहितोऽङ्गविभाग एषः ।।८८।।

भद्रास्थिति का प्रमाण ३० घड़ी का है। उसमें ५ घड़ी मुख में धरे १ घड़ी कंठ में, ११ घड़ी वक्षस्थल में, ४ घड़ी नाभि में और ६ घड़ी कटि (कमर) में, ३ पुच्छ में इस प्रकार पंडितों ने भद्रा का अंगविभाग वर्णन किया है।।८८।।

भद्राङ्गफल

मुखे कार्यध्वस्तिर्भवति मरणं चाथ गलके
धने हानिर्वक्षस्यथ कटितटे बुद्धिविलयः ।
कलिर्नाभौ देशे विजयमथ पुच्छे च जगदुः
शरीरे भद्रायाः पृथगिति फलं पूर्वमुनयः ।।८९।।

भद्रा के मुखवाली घड़ी में कार्य करे तो कार्य विध्वंस हो जाय, कंठ में की घड़ी में कार्य करे तो मरण होवे, वक्षः स्थल की घटिका में कार्य करे तो धन की हानि होवे, कटि (कमर) की घड़ी में कार्य करे तो बुद्धि का विनाश होवे, नाभि में की, घड़ी में कार्य करने से कलह होवे, पुच्छ की घड़ी में कार्य होवे तो विजय होवे। इस प्रकार

भद्रा के शरीर विभाग से पूर्व मुनियों ने पृथक् २ फल कहा है॥८९॥

चन्द्रमावासज्ञान

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च कन्यामकरे च याम्याम् ।
युग्मे तुले कुंभसुपश्चिमायां कर्कालिमीनेषु तथोत्तरायाम् ॥९०॥

मेष, सिंह, धनु इन राशियों का चन्द्रमा पूर्व दिशा में जानना, वृष, कन्या, मकर में दक्षिण दिशा में चन्द्रमा का वास जानना, मिथुन, तुला और कुम्भ का चन्द्रमा पश्चिम दिशा में जानना, कर्क, वृश्चिक, मीन का चन्द्रमा उत्तर दिशा में जानना॥९०॥

अलौ मेषसिंहेऽरुणे युद्धकारी वृषे कर्कटे तौलिके श्वेतसिद्धिः
धनुर्मीनयुग्मेषु पीते च लक्ष्मीर्मृगे कुंभकन्याशशीश्यामभृत्युः ॥९१॥

वृश्चिक, मेष और सिंह का चन्द्रमा रक्त वर्ण और युद्धकारी जानना, वृष, कर्क, तुला इनका चन्द्रमा श्वेतवर्ण और सिद्धि प्रदाता जानना। धनु, मीन, मिथुन का चन्द्रमा पीत वर्ण और लक्ष्मी का बढ़ाने वाला जानना तथा मकर, कुंभ, कन्या का चन्द्रमा श्यामवर्ण और मृत्युकारी जानना॥९१॥

इति श्रीमन्मिश्रशोभारामसुतज्योतिर्वित्पंडितनारायणप्रसादविलिखिते बालबोधाख्यज्योतिषसारसंग्रहे संज्ञारत्नं प्रथमं समाप्तम् ॥१॥



योगरत्नम्

अथ योगरत्नं द्वितीयं प्रारभ्यते

तत्रादौ सिद्धियोगज्ञान

आदित्ये चाष्टमी हस्ते अश्विनी चोत्तरात्रयम् ।
मूलं पुष्यो धनिष्ठा च सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥१॥

रविवार को अष्टमी तिथि, हस्त, अश्विनी तीनों उत्तरा, मूल, पुष्य, धनिष्ठा ये नक्षत्र होवें तो सिद्धयोग कहा है॥१॥

सोमे च नवमी पुष्ये श्रवणे रोहिणी मृगः ।
दशम्यां वरुणं भं च सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥२॥

सोमवार को नवमी दशमी तिथि और पुष्य, श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, शतभिषा, नक्षत्र हो तो सिद्धियोग कहा है॥२॥

भौमे षष्ठी तृतीया च अष्टमी च त्रयोदशी ।
मूलाश्विनी मृगाश्लेषा सिद्धान्युत्तरभाद्रपात् ॥३॥

मंगलवार को तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि हो, मूल, अश्विनी, मृगशिरा, आश्लेषा, उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र हो तो सिद्धियोग जानना।।३।।

बुधवारे द्वितीया च सप्तमी द्वादशीषु च ।
मृगाऽनुराधापुष्याश्च सिद्धा कृत्तिकरोहिणी ।।४।।

बुधवार को द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथि और मृगशिरा, अनुराधा, पुष्य, कृत्तिका, रोहिणी नक्षत्र हो तो सिद्धियोग होता है।।४।।

गुरौ च दशपंचम्यां पौर्णमास्यां विशाखयोः ।
पौष्णाश्विन्याऽनुराधा च सिद्धा पुष्यं पुनर्वसुः ।।५।।

गुरुवार को दशमी, पंचमी, पौर्णमासी तिथि और विशाखा, रेवती, अश्विनी, अनुराधा, पुष्य, पुनर्वसु नक्षत्र हो तो सिद्धियोग जानना।।५।।

शुक्रे प्रतिपदा षष्ठचैकादशी च त्रयोदशी ।
रेवती पूर्वभाश्विन्यौ श्रुतिश्चित्रादितिः शुभा ।।६।।

शुक्रवार को प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी, त्रयोदशी तिथि और रेवती, पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी, श्रवण, चित्रा, पुनर्वसु नक्षत्र हो तो सिद्धियोग जानना।।६।।

शनौ चतुर्थी नवमी चतुर्दशी च रोहिणी ।
श्रवणं च मघा स्वाती पूर्वाफाल्गुनि सिद्धिदा ।।७।।

शनिवार को चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथि और रोहिणी, श्रवण, मघा, स्वाती, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो तो सिद्धियोग जानना।।७।।

विरुद्धयोग

सूर्ये विशाखा भरणी द्वादशी च चतुर्दशी ।
अनुराधा मघा ज्येष्ठा विरुद्धा सप्तमी सदा ।।८।।

रविवार को विशाखा, भरणी, द्वादशी, चतुर्दशी, अनुराधा, मघा, ज्येष्ठा सप्तमी सदा विरुद्ध जानना अर्थात् रविवार को ये नक्षत्र और तिथि त्याज्य हैं।।८।।

चन्द्रे चित्रोत्तराषाढा पूर्वाषाढाविशाखयोः ।
एकादश्यां त्रयोदश्यां षष्ठी यत्नेन वर्जयेत् ।।९।।

चन्द्रवार को चित्रा, उत्तराषाढ़ा, पूर्वाषाढ़ा, विशाखा, एकादशी, त्रयोदशी और षष्ठी हो तो विरुद्धयोग जानना ये यत्नपूर्वक त्याग करे।।९।।

भौमे आर्द्रा धनिष्ठा च प्रतिपत् पूर्वभाद्रपत् ।
शतभिषक् चोत्तराषाढा दशमी च विवर्जयेत् ।।१०।।

मंगलवार को आर्द्रा, धनिष्ठा, प्रतिपदा, पूर्वाभाद्रपदा, शतभिषा, उत्तराषाढ़ा और

दशमी वर्जित करे॥१०॥

बुधे धनिष्ठा भरणी अश्विनी मूलसंयुता ।
तृतीया नवमी चैव प्रतिदद्रेवती त्यजेत् ॥११॥

बुधवार को धनिष्ठा, भरणी, अश्विनी, मूल, तृतीया, नवमी, प्रतिपदा, रेवती ये त्याग करे॥११॥

जीवेऽष्टमी चतुर्थ्यां तु आर्द्रा चोत्तरफाल्गुनी ।
रोहिणी शतभिषक् षष्ठी कृत्तिका मृगवर्जिता ॥१२॥

वृहस्पतिवार को अष्टमी, चतुर्थी, आर्द्रा, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी, शतभिषा, षष्ठी, कृत्तिका, मृगशिरा ये वर्जित हैं॥१२॥

भार्गवे रोहिणी ज्येष्ठा द्वितीया सप्तमीषु च ।
पुष्याश्लेषा मघा चैव सर्वकर्मणि वर्जयेत् ॥१३॥

शुक्रवार को रोहिणी, ज्येष्ठा, द्वितीया, सप्तमी, पुष्य आश्लेषा, मघा ये सब कामों में त्याग करे॥१३॥

सौरे चित्रोत्तराषाढा रेवती त्रीणि सप्तमी ।
षष्ठी चोत्तरफाल्गुन्या पूर्वाषाढा विवर्जयेत् ॥१४॥

शनिवार को चित्रा, उत्तराषाढ़ा, रेवती, अश्विनी, भरणी, सप्तमी षष्ठी, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा त्याग करे॥१४॥

कर्क (क्रकच) योग

षष्ठी तु शनिवारेण शुक्रेणैव तु सप्तमी ।
अष्टमी गुरुवारेण नवमी चन्द्रजेन तु ॥१५॥
दशमी भौमवारेण सोमे ह्येकादशी तथा ।
सूर्ये च द्वादशी प्रोक्ता कर्कयोगाः प्रकीर्तिताः ॥१६॥

शनिवार को षष्ठी, शुक्रवार को सप्तमी, बृहस्पति को अष्टमी, बुधवार को नवमी, मंगलवार को दशमी, सोमवार को एकादशी, रविवार को द्वादशी हो तो कर्क (क्रकच) योग कहा है॥१५-१६॥

चरयोग

रवौ पूषा गुरौ पुष्यःशनै मूलं भृगौ मघा ।
सौम्ये ब्राह्म्यं विशा भौमे चन्द्रेर्द्रा चरयोगकः ॥१७॥

रविवार को रेवती, गुरुवार को पुष्य, शनिवार को मूल, शुक्रवार को मघा, बुधवार

को रोहिणी, भौमवार को विशाखा, सोमवार को आर्द्रानक्षत्र हो तो चरयोग जानना।।१७।।

दग्धयोग

बुधे तृतीया कुजे पञ्चमी च षष्ठयां गुरावष्टमी
शुक्रवारे। एकादशी सोमशनिर्नवम्यां द्वादश्य-
थार्केष्विति दग्धयोगः ।।१८।।

बुधवार के दिन तृतीया तिथि हो, मंगलवार को पंचमी, बृहस्पति को षष्ठी, शुक्रवार को अष्टमी, सोमवार को एकादशी, शनिवार को नवमी, रविवार को द्वादशी हो तो दग्धयोग होता है।।१८।।

सिद्धियोग

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा जया भौमे प्रकीर्तिता ।
शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धियोगा उदाहृताः ।।१९।।

शुक्र को नन्दा १।६।११ तिथि, बुध को भद्रा २।७।१२ तिथि, भौमवार (मंगल) को जया ३।८।१३ तिथि, शनिवार को रिक्ता ४।९।१४ तिथि, गुरुवार को पूर्णा ५।१०।१५ तिथि हो तो सिद्धियोग कहा है।।१९।।

अमृतसिद्धियोग

आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा शनिरोहिणी च ।
सोमे च विष्णुर्भृगुरेवती च भौमाश्विनी चामृतसिद्धियोगः ।।२०।।

रविवार को हस्तनक्षत्र हो, गुरुवार को पुष्य हो, बुधवार को अनुराधा हो, शनिवार को रोहिणी हो, सोमवार को श्रवण, शुक्रवार को रेवती और मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र हो तो अमृतसिद्धियोग जानना।।२०।।

मुशलवज्रयोग

चन्द्रे चित्रा भृगौ ज्येष्ठा शनौ चैव तु रेवती ।
चन्द्रजे तु धनिष्ठोक्ता रवौ तु भरणी तथा ।।२१।।
उषाश्चैव तु भौमे च गुरौ चैवोत्तरा तथा ।
अयं मुशलवज्राख्ययोगो वर्ज्यः शुभे बुधैः ।।२२।।

चन्द्रवार को चित्रा, भृगुवार को ज्येष्ठा, शनिवार को रेवती, बुधवार को धनिष्ठा; रविवार को भरणी, भौमवार को उत्तराषाढ़ा, गुरुवार को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो मुशलवज्रयोग जानना, यह मुशलवज्रयोग पंडितों ने शुभ कार्य में वर्जित कहा है।।२१-२२।।

यमघण्टयोग:

रवौ मघा बुधे मूलं गुरौ चैव तु कृत्तिका ।
भौमे चार्द्रा शनौ हस्त:शुक्रे चैव तु रोहिणी ।।२३।।
चन्द्रे विशाखा योगोऽयं यमघण्ट:प्रकीर्तित: ।।२४।।

रविवार को मघा, बुधवार को मूल, गुरुवार को कृत्तिका, भौमवार को आर्द्रा, शनिवार को हस्त और शुक्रवार को रोहिणी नक्षत्र हो तो यमघण्ट योग कहा है।।२३-२४।।

यमदंष्ट्रयोग

मघा धनिष्ठा सूर्ये तु चन्द्रे मूलविशाखके ।
कृत्तिका भरणी भौमे सौम्ये पूषा पुनर्वसु: ।।२५।।
गुरौ ऊषाश्विनी शुक्रे रोहिणी चानुराधिका ।
शनौ विष्णु: शतभिषक् यमदंष्ट्रा प्रकीर्तिता ।।२६।।

रविवार को मघा धनिष्ठा हो, चन्द्रवार को मूल विशाखा हो, मंगलवार को कृत्तिका भरणी हो, बुधवार को रेवती पुनर्वसु हो, गुरुवार को उत्तराषाढ़ा अश्विनी हो, शुक्रवार को रोहिणी अनुराधा हो, शनिवार को श्रवण वा शतभिषा नक्षत्र हो तो यमदंष्ट्रायोग कहा है सो शुभ कार्य में वर्जित है।।२५-२६।।

मृत्युयोग

रवौ भौमे भवेन्नन्दा भद्रा जीवशशाङ्कयो: ।
जया शुक्रे बुधे रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ।।२७।।

रवि और भौमवार को नन्दा १।६।११। तिथि हो, गुरु और चन्द्रवार को भद्रा २।७।१२ तिथि हो, शुक्रवार को जया ३।८।१३ तिथि हो, बुधवार को रिक्ता ४।९।१४ तिथि हो, शनिवार को पूर्णा ५।१०।१५ तिथि हो तो मृत्युदायक योग जानना।।२७।।

उत्पातादियोग चक्र

वार	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
उत्पात	वि	पू षा	ध	रे	रो	पु	उ फा
मृत्यु	ऽनु	उ षा	श	अ	मृ	ऽश्ले	ह
काल	ज्ये	ऽभि	पू भा	भ	आ	म	चि
सिद्धि	मू	श्र	उ भा	कृ	पु	पू फा	स्वा

उत्पातादियोग

विशाखादिचतुष्कं तु भास्करादिक्रमेण तु ।
उत्पातमृत्युकालाख्यसिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥२८॥

विशाखा आदि चार नक्षत्र रविवार आदि वारों में क्रम से हों तो उत्पात, मृत्यु, काल, सिद्धि ये योग क्रम से कहे हैं सो चक्र में स्पष्ट जानना॥२८॥

आनन्दादियोग

आनन्दाख्यः कालदण्डश्च धूम्रो धाता सौम्यो ध्वांक्षकेतुः क्रमेण । श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ ॥२९॥ उत्पातमृत्युः किल काणसिद्धिः शुभोऽ-मृताख्यो मुशलं गदश्च । मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्याः प्रवर्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ॥३०॥

१ आनन्द, २ कालदंड, ३ धूम्र, ४ धाता (प्रजापति), ५ सौम्य, ६ ध्वांक्ष, ७ केतु, (ध्वज), ८ श्रीवत्स, ९ वज्र, १० मुद्गर, ११ छत्र, १२ मित्र, १३ मानस, १४ पद्म, १५ लुंब, १६ उत्पात, १७ मृत्यु, १८ काण, १९ सिद्धि, २० शुभ, २१ अमृत, २२ मुशल, २३ गद, २४ मातंग, २५ राक्षस, २६ चर, २७ सुस्थिर, २८ प्रवर्धमान ये अट्ठाईस योग हैं सो अपने नाम के समान फलदायक होते हैं॥२९-३०॥

आनन्दादियोगचक्र

योग	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
आनंद	अ	मृ	ऽश्ले	ह	अनु	उ षा	श
कालदं	भ	आ	म	चि	ज्ये	ऽभि	पू
धूम्र	कृ	पु	पू	स्वा	मू	श्र	उ
प्रजाप.	रो	पु	उ	वि	पू	ध	रे
सौम्य	मृ	ऽश्ले	ह	ऽनु	उ	श	अ
ध्वांक्ष	आ	म	चि	ज्ये	ऽभि	पू	भ
ध्वज	पु	पू	स्वा	मू	श्र	उ	कृ

श्रीव.	पु	उ	वि	पू	ध	रे	रो
वज्र	ऽश्ले	ह	ऽनु	उ	श	अ	मृ
मुद्गर	म	चि	ज्ये	ऽभि	पू	भ	आ
छत्र	पू	स्वा	मू	श्र	उ	कृ	पु
मित्र	पू	वि	पू	ध	रे	रो	पु
मानस	ह	ऽनु	उ	श	अ	मृ	ऽश्ले
पद्म	चि	ज्ये	ऽभि	पू	भ	आ	म
लुंब	स्वा	मू	श्र	उ	कृ	पु	पू
उत्पात	वि	पू	ध	रे	रो	पु	उ
मृत्यु	ऽनु	उ	श	अ	मृ	ऽश्ले	ह
काण	ज्ये	ऽभि	पू	भ	आ	म	चि
सिद्धि	मू	श्र	उ	कृ	पु	पू फा	स्वा
शुभ	पू	ध	रे	रो	पु	उ फा	वि
अमृत	उ	श	अ	मृ	ऽश्ले	ह	ऽनु
मुशल	ऽभि	पू	भ	आ	म	चि	ज्ये
गद	श्र	उ	कृ	पु	पू	स्वा	मू
मातंग	ध	रे	रो	पु	उ फा	वि	पू
राक्षस	श	अ	मृ	ऽश्ले	ह	ऽनु	उ
चर	पू	भ	आ	म	चि	ज्ये	ऽभि
सुस्थिर	उ	कृ	पु	पू	स्वा	मू	श्र
प्रवर्ध	रे	रो	पु	उ	वि	पू	ध

आनन्दादियोगज्ञान

सूर्येऽश्विभात् तुहिनरोचिषि चन्द्रधिष्ण्यात् सार्पाच्च
भूमितनयेऽथ बुधे च हस्तात्। मैत्राद् गुरौ भृगसुते खलु
वैश्वदेवात् छायासुते वरुणभात् क्रमशः स्युरेवम्॥३१॥

रविवार को अश्विनी से आनन्दादि योग की गणना करे; सोमवार को मृगशिरा से, मंगलवार को आश्लेषानक्षत्र से, बुधवार को हस्तनक्षत्र से, गुरुवार को अनुराधा से, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ा से, शनिवार को शतभिषा से आनन्दादि योग की गणना करे। जैसे-रविवार को अश्विनीनक्षत्र हो तो आनन्दयोग, भरणी हो तो कालदंड़ योग, कृत्तिका हो तो धूम्रयोग एवं प्रजापति आदियोग जानना। सो आगे चक्र में स्पष्ट जानना॥३१॥

ध्वांक्षादियोग में वर्ज्य घटी

ध्वांक्षे वज्रे मुद्‌गरे चेषुपाड्यो वेदा नाड्यः पद्मलुम्बे
गदेऽश्वाः। धूम्रे काणे मूशले भूर्द्वयं द्वे रक्षो मृत्यूत्पात-
कालश्च सर्वे ॥३२॥

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्‌गरयोग के आदिकी पांच घड़ी वर्जित हैं। पद्म लुंब की चार घड़ी, गद की ७ घड़ी, धूम्र की १ घड़ी, काण की २ घड़ी मुशल की २ घड़ी वर्जित हैं और राक्षस, मृत्यु, उत्पात, काल समस्त वर्जित हैं अर्थात् इन योगों की सम्पूर्ण ६० घटी वर्जित हैं॥३२॥

त्रिपुष्करयोग

भद्रा तिथी रविजभूतनयार्कवारे द्वीशार्यमाजचरणादि-
तिवह्निविश्वे। त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धो त्रैगु-
ण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे ॥३३॥

भद्रा २।७।१२ तिथि, शनि, मंगल रविवार, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, पुनर्वसु, कृत्तिका, उत्तराषाढ़ा ये तिथि वार नक्षत्र हों तो त्रिपुष्करयोग होता है। मृत्यु, विनाश और वृद्धि एक वार होने से तीन वार मृत्यु, विनाश और वृद्धि होवे है इसी से इसका नाम त्रिपुष्करयोग है। धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा इन नक्षत्रों का पूर्वोक्त वार और तिथियों के योग से दो वार मृत्यु, विनाश और वृद्धि जानना इसको द्विपुष्कर योग जानना॥३३॥

अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि ।
अयोगो हन्यते तेन सिद्धियोगः प्रवर्त्तते ॥३४॥

यदि अयोग और सुयोग दोनों एक ही दिन हों तो आयोग को दूर करके सिद्धियोग

होता है अर्थात् अयोग विनष्ट हो जाता है और सिद्धियोग अपना शुभ फल करता है।।३४।।

रवियोग

सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसंमिते ।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसंघविनाशकाः ।।३५।।

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने अर्थात् जिस नक्षत्र पर सूर्य हो उससे दिन नक्षत्र तक गणना करे, यदि ४।९।६।१३।२० संख्या हो तो रवियोग होता है, सो दोष समूह को विनाश करता है।।३५।।

कपिलाषष्ठीयोग

आश्विने कृष्णपक्षे च षष्ठ्यां भौमेऽथ रोहिणी ।
व्यतीपातस्तदा षष्ठी कपिलाऽनन्तपुण्यदा ।।३६।।

आश्विन मास (कुँवार) कृष्णपक्ष, पष्ठी तिथि, (मंगल) वार, रोहिणी नक्षत्र और व्यतीपातयोग ये सब एक ही साथ हो तो कपिलाषष्ठी योग कहाता है, यह योग अनन्त पुण्य का देने वाला है।।३६।।

गोविन्दद्वादशीयोग

यदा चापे जीवो भवति घटराशौ दिनमणिस्तथा तारा-
नाथः स्वभवनगतः फाल्गुनसिते । यदाऽर्को द्वादश्यामदि-
तिभयुतः शोभनयुतस्तदा गोविन्दाख्यं हरिदिवसमस्मि-
न्भुवितले ।।३७।।

जो धनराशि में बृहस्पति हो, कुंभराशि में सूर्य हो, चन्द्रमा अपने घर (कर्कराशि) में हो और फाल्गुन शुक्लपक्ष हो, रविवार को द्वादशी हो, पुनर्वसुनक्षत्र, शोभनयोग हो ये सब एक ही साथ होने से गोविन्दनामक हरिदिवस होता है सो यह योग पृथ्वीतल में स्नान दान पुण्य के निमित्त बहुत ही श्रेष्ठ होता है।।३७।।

पुष्करयोग

विशाखास्थो यदा भानुःकृत्तिकासु च चन्द्रमाः ।
संयोगः पुष्करो नाम पुष्करेष्वतिदुर्लभः ।।३८।।

विशाखानक्षत्र का सूर्य हो, कृत्तिकानक्षत्र का चन्द्रमा हो ऐसे संयोग का नाम पुष्करयोग है पुष्कर क्षेत्र में यह योग परम दुर्लभ है।।३८।।

वारुणीयोगः

वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णत्रयोदशी ।
गङ्गायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैःसमा ।।३९।।

शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणी स्मृता ।
शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि ॥४०॥
महामहेति विख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत् ॥४१॥

शतभिषा नक्षत्र चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के दिन हो तो वारुणी योग होता है सो गंगाजी में स्नान दान करने से सैकड़ों सूर्यग्रहण के समान पुण्यफल देनेवाला यह योग जानना। उसी दिन यदि शनिवार भी हो तो महावारुणी योग कहा है। शुभयोग हो और शनिवार शतभिषानक्षत्र यदि हो तो महावारुणी योग होता है यह तीन करोड़ कुल को उद्धार करता है।।३९-४१।।

व्यतीपातयोग

पञ्चाननस्थौ गुरुभूमिपुत्रौ मेषे रविः स्याद्यदि शुक्लपक्षे ।
मासाभिधाना करभेण युक्ता तिथिर्व्यतीपात इतीह योगः ॥४२॥

सिंह राशि पर बृहस्पति और मंगल हो, मेष राशि में सूर्य हो और यदि शुक्लपक्ष हो तथा वैशाख मास तथा तिथि द्वादशी हो तो व्यतीपात नामक योग जानना।।४२।।

युगादि

वैशाखे च तृतीया च नवमी कार्तिके सिता ।
त्रयोदशी भाद्रपदे माघे दर्शो युगादयः ॥४३॥

वैशाख शुक्लपक्ष की तृतीया को त्रेतायुग, कार्तिक शुक्ल नवमी को कृतयुग, भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी को कलियुग, माघ कृष्णा अमावास्या को द्वापरयुग प्रवृत्त भया। ये युगादि तिथियां हैं।।४३।।

इति श्रीमन्मिश्रशोभारामसुतज्योतिर्वित्पण्डितनारायण प्रसादमिश्र-
विलिखिते बालबोधाख्यज्योतिषसारसंग्रहे
योगरत्नं द्वितीयं समाप्तम् ॥२॥



मुहूर्तरत्नम्

अथ मुहूर्तरत्नं तृतीयं प्रारभ्यते

तत्रादौ वर्ज्ययोग

सर्वेषु शुभकार्येषु क्रूरयोगान्परित्यजेत् ।
दग्धं विद्धं च नक्षत्रं तिथिदग्धं च वर्जयेत् ॥१॥

सम्पूर्ण शुभ कार्यों में क्रूर योगों को त्याग देवे, दग्ध और वेधयुक्त नक्षत्र और दग्ध तिथि वर्जित करे॥१॥

अर्धप्रहरकस्त्याज्यः कुलिको विष्टिरेव च ।
एकार्गलं ग्रहर्क्षं च जन्मर्क्षं पर्वमेव च ॥२॥

प्रहरार्द्ध (अर्धयाम), कुलिकयोग, भद्रा, एकार्गल, ग्रहण का नक्षत्र, जन्मनक्षत्र, पर्व ये त्याग करे॥२॥

चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावास्या च पूर्णिमा ।
पुण्यानि पञ्च पर्वाणि संक्रांतिर्दिनपस्य च ॥३॥

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा, संक्रांति का दिन ये पांच पुण्य पर्व हैं॥३॥

दुष्टयोगे तिथौ रिक्ते क्षीणे चन्द्रेऽधिमासके ।
माङ्गल्ये शुभयात्रां च न कुर्याद्धितमिच्छता ॥४॥

दुष्टयोग और रिक्ता तिथि ४।९।१४ क्षीण चन्द्रमा, मलमास ये शुभकार्य और उत्तम यात्रा में वर्जित करे अर्थात् इनमें मंगल कार्य अपने हित की इच्छा से नहीं करे॥४॥

शुभसमयज्ञान

विवाहं च क्षौरकर्म प्रतिष्ठा व्रतबन्धनम् ।
अयने चोत्तरे कुर्यादुदिते भार्गवे गुरौ ॥५॥
उदिते च तथा चन्द्रे शुभयोगे शुभे दिने ।
कृष्णस्य दशमी यावच्छुभकर्माणि कारयेत् ॥६॥

विवाह, क्षौर (मुंडन) प्रतिष्ठा, व्रतबन्ध (यज्ञोपवीत) ये कार्य उत्तरायण सूर्य और शुक्र बृहस्पति के उदय में करे तथा चन्द्रमा का उदय हो, शुभ योग और शुभ दिन हो, कृष्णपक्ष की दशमी तक शुभ कार्य करे॥५-६॥

चन्द्रफल

निजराशौ स्वोच्चराशौ श्रेष्ठं चन्द्रबलं सदा ।
जन्मस्थःकुरुते पुष्टिं द्वितीये च धनागमम् ॥७॥
तृतीये राज्यसन्मानं चतुर्थे कलहागमम् ।
पञ्चमे मतिविभ्रंशो भवेच्चन्द्रे न संशयः ॥८॥
धनधान्यागमं षष्ठे सन्तोषः स्यात्तु सप्तमे ।
अष्टमे प्राणसन्देहो नवमे क्लेश एव च ॥९॥

दशमे कार्यनिष्पत्तिर्ध्रुवमेकादशे जयः ।
द्वादशेन शशाङ्केन मृत्युरेव न संशयः ।।१०।।

जो चन्द्रमा अपनी राशि (कर्क) में वा अपनी उच्चराशि (वृष) में हो तो चन्द्रमा सदा उत्तम बली जानना। पहला चन्द्रमा पुष्टि को करता है, दूसरा चन्द्रमा धन का आगम करता है, तीसरा चन्द्रमा राज्य और सन्मान करता है; चौथा चन्द्रमा कलह का आगम करता है, पांचवां चन्द्रमा होवे तो बुद्धि का नाश निःसन्देह होवे, छठे चन्द्रमा में धन धान्य का आगम होवे, सातवें चन्द्रमा में सन्तोष होवे, आठवें चन्द्रमा में प्राणों का सन्देह होवे, नववें चन्द्रमा में क्लेश होवे, दशवें चन्द्रमा में कार्य का उदय होवे, ग्यारहवें चन्द्रमा में अवश्य जय होवे, बारहवें चन्द्रमा में निःसन्देह मृत्यु होवे।।७-१०।।

चन्द्रबल

तिथिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ।
वारस्याष्टगुणं प्रोक्तं करणं षोडशान्वितम् ।।११।।
चन्द्रःशतगुणं प्रोक्तं तस्माच्चन्द्रबलं स्मृतम् ।
द्वात्रिंशद्गुणितं योगे तारा षष्टिगुणान्विता ।।१२।।
शुक्लपक्षे बली चन्द्रः कृष्णे तारा बलीयसी ।
द्विपञ्चनवमः श्रेष्ठः प्राक्पक्षे गौरवः शशी ।।१३।।

तिथि में एक गुण कहा है, नक्षत्र में चार गुण, वार के आठ गुण कहे हैं, करण सोलह गुणों से युक्त होता है, चन्द्रमा सौ गुण वाला कहा है, इस कारण चन्द्रबल मुख्य कहा है, बत्तीस गुण योग के जानना, तारा साठ गुणों से युक्त होता है, शुक्लपक्ष में चन्द्रमा बली होता है और कृष्णपक्ष में तारा बलवती है, दूसरा पांचवां, नववां, चन्द्रमा श्रेष्ठ होता है शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा गुरुभाव को प्राप्त होता है।।११-१३।।

ताराज्ञान

जन्मभाद्गणयेदादौ दिनधिष्ण्यावधिःकिल ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं तारा विनिर्दिशेत् ।।१४।।
जन्मतारा द्वितीया च षष्ठी चैव चतुर्थिका ।
अष्टमी नवमी तारा षट् च तारा शुभावहा ।।१५।।
यद्यपि बलवांश्चन्द्रो मुनिभिः कथितः शुभः ।
शमयति तथा दुरितं त्रिपञ्चसप्तवर्जिता तारा ।।१६।।

जन्मनक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने और नव का भाग देवे शेष रहे वही तारा जानना जन्म तारा और दूसरा, छठा, चौथा, आठवां नववां ये छः तारा शुभ जानना। यद्यपि बलवान् चन्द्रमा मुनियों ने शुभ कहा है तथा दोषों को दूर करता है, तथा तीसरा पांचवां, सातवां तारा वर्जित हैं॥१४-१६॥

स्त्रीवस्त्रधारण

हस्तादिपञ्चकेऽश्विन्यां धनिष्ठायां च पूषणि ।
गुरौ शुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥१७॥

हस्त से पांच नक्षत्र (हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा), अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती ये नक्षत्र और गुरु, शुक्र, बुध इन वारों में स्त्री नवीन वस्त्र धारण करे॥१७॥

पुरुषवस्त्रधारण

लग्नं मीनश्च कन्या च मिथुनं च वृषः शुभः ।
पूषा पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ॥१८॥

मीन, कन्या, मिथुन, वृष ये लग्न शुभ हैं, रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा ये नक्षत्र और शुभ वार में पुरुष नवीन वस्त्र धारण करे॥१८॥

सूर्ये चाल्पधनं व्रणः शशिदिने क्लेशः सदा भूमिजे
वस्त्राणां बहुता बुधे सुरगुरौ विद्यागमः संपदः ।
नानाभोगयुतं प्रमोदशयनं दिव्याङ्गना भार्गवे सौरे स्युः
खलु रोगशोककलहा वस्त्रे धृते नूतने ॥१९॥

रविवार को वस्त्र धारण करने से थोड़ा धन प्राप्त होता है, सोमवार को वस्त्र धारण करने से व्रण उत्पन्न होता है, भौमवार को नवीन वस्त्र धारण करने से सदा क्लेश रहता है। बुधवार को नवीन वस्त्र धारण करने से बहुत वस्त्र प्राप्त होते हैं, बृहस्पति को धारण करने से विद्या और धन की प्राप्ति जानना, शुक्रवार को धारण करने से नाना प्रकार के भोगों सहित आनन्द और दिव्यांगनाओं से प्रीति होती है, शनिवार को धारण करने से कलह तथा शोक प्राप्त होता है॥१९॥

रक्तवस्त्रं स्त्रिया भौमदिनेऽपि धार्यम् ।

लाल रंग के वस्त्र मंगलवार के दिन स्त्रियों को धारण करना चाहिये।

देवप्रतिष्ठादिमुहूर्त

मूलादिद्वितयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः ।
जलवाप्यर्चने हेयाः शुक्रमन्दार्कभूमिजाः ॥२०॥

आर्द्रा शतभिषाश्लेषा विशाखा भरणीद्वयम् ।
त्याज्या च द्वादशी रिक्ता षष्ठी चन्द्रक्षयोऽष्टमी ॥२१॥
प्रतिपच्च तिथिर्वारौ त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ।
मूर्तिदेवप्रतिष्ठा स्यात् स्थिरलग्नोत्तरायणे ॥२२॥

मूल, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मृगशिरा, हस्त ये नक्षत्र ग्राह्य हैं और शुक्र, शनि, सूर्य, मंगल ये वार त्यागकर शेष वार कूप वापी तडागादि पूजन में श्रेष्ठ हैं। आर्द्रा शतभिषा, आश्लेषा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका ये नक्षत्र त्याज्य हैं और द्वादशी, रिक्ता (४।९।१४) तिथि, षष्ठी, अमावास्या, अष्टमी, प्रतिपदा ये तिथियां त्याज्य हैं और शनि मंगल वार त्याज्य हैं तथा स्थिर लग्न में उत्तरायण सूर्य में देवमूर्ति की प्रतिष्ठा करे॥२०-२१॥

गृहारंभे भूमिशयनज्ञान

प्रद्योतनात्पश्चनगाङ्कसूर्यनवेन्दुषड्विंमितानि भानि ।
शेते मही नैव गृहं विधेयं तडागवापीखननं न शस्तम्॥२३॥

सूर्य के नक्षत्र से पांचवां ५, सातवां ७, नववां ९, बारहवां १२ उन्नीसवां १९, छब्बीसवां २६, इन नक्षत्रों में भूमिशयन (पृथ्वीसुप्त) जानना, इनमें गृहारम्भादिक और तालाब, बावड़ी, कूप खोदना श्रेष्ठ नहीं जानना॥२३॥

वास्तुकर्म मुहूर्त

पूर्वाषाढादितिद्वन्द्वे विधियुग्मे हरित्रये ।
उत्तराफाल्गुनी हस्तत्रयं मूलं च रेवती ॥२४॥
मैत्राश्विनी च लग्नानि सिंहः कन्या घटो वृषः ।
मिथुनं मकरो ग्राह्यो वास्तुकर्मणि कोविदैः ॥२५॥
श्रावणश्चाथ वैशाखः कार्तिकफाल्गुनस्तथा ।
मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तुकर्मणि शस्यते ॥२६॥
वज्रव्याघातशूलाश्च व्यतीपातश्च गण्डकः ।
विष्कम्भपरिघौ हेयौ वारौ भूमिजभास्करौ ॥२७॥

पूर्वाषाढ़ा, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, रेवती, अनुराधा, अश्विनी ये नक्षत्र और सिंह, कन्या, कुंभ, वृष, मिथुन, मकर ये लग्न वास्तुकर्म में पण्डितों करके ग्रहण करने योग्य हैं। तथा श्रावण, वैशाख, कार्तिक, फाल्गुन, मार्गशीर्ष ये महीने वास्तुकर्म में शुभ हैं।

वज्र व्याघात, शूल, व्यतीपात, गंड, विष्कंभ, परिघ ये योग और मंगलवार रविवार त्याग करे॥२४-२७॥

गृहारम्भवर्ज्य

त्रिवेदवेदाग्नियुगाग्निवेदत्रिकेषु भानोः शशिभं गृहेषु ।
दाहो विनाशः स्थिरता धनं श्रीः शून्यं च दारिद्र्यमृतिः क्रमेण ॥२८॥

सूर्य स्थित नक्षत्र से चन्द्र (दिन) नक्षत्र तक गिने सो चक्र में देख कर जानना॥२८॥

सूर्यभात् गृहारम्भचक्र

३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	विनाश	स्थिरता	धनला.	श्रीला.	शून्य	दारि.	मृति

द्वारशाखावरोपणमुहूर्त

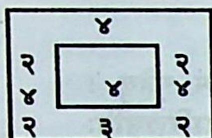
मूले भौमे त्रिऋक्षं गृहपतिमरणं पञ्चगर्भे सुखं स्यान्मध्ये
देयाष्टऋक्षं धनसुखसुखदं पुच्छदेशेष्ट हानिः । पश्चाद्देयं
त्रिऋणं गृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्यर्क्षाच्चान्द्रऋक्षं
प्रतिदिनगणयेद्धौम चक्रं विलोक्य ॥२९॥

सूर्यनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनकर इस क्रम से फल जानना कि, पहले ३ नक्षत्र मूल में गृहपति का मरण करे, फिर ५ नक्षत्र गर्भ में सुख कारक जानना, अनन्तर ८ नक्षत्र मध्य में धन सुत और सुख देवे, फिर ८ नक्षत्र पृच्छभाग में मित्रहानि करे, तदनन्तर ३ नक्षत्र गृहपति को भाग्य पुत्र धन और सुख देवे। इस प्रकार सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र का गिनकर फल जानना॥२९॥

द्वारशाखाचक्र

अर्काच्चत्वारि ऋक्षाणि ऊर्ध्वे चैव प्रदापयेत् ।
द्वौ द्वौ कोणेषु दद्याद्वै शाखायां च चतुश्चतुः ॥३०॥
अधश्च त्रीणि देयानि मध्ये चत्वारि दापयेत् ।
ऊर्ध्वं तु लभते राज्यमुद्वासं कोणकेषु च ॥३१॥
शखायां लभते लक्ष्मीं मध्ये राज्यप्रदं तथा ।
अधस्थे मरणं प्रोक्तं द्वारचक्रं प्रकीर्तितम् ॥३२॥

द्वारशाखाचक्र



सूर्यनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने उसमें ४ नक्षत्र द्वारशाखा के ऊपर रक्खे, दो दो नक्षत्र चारों कोणों में रक्खे दोनों शाखाओं में चार चार नक्षत्र रक्खे, नीचे देहली में तीन नक्षत्र रक्खे, बीच में चार नक्षत्र रक्खे, ऊपर के ४ नक्षत्र में द्वारशाखा रोपण करे तो राज्य प्राप्त होवे, कोणों में दो दो नक्षत्र उद्वासन कारक जानने, शाखाओं में के चार २ नक्षत्रों में लक्ष्मी प्राप्त होवे तथा मध्य के ४ नक्षत्र में द्वारशाखा रक्खे तो राज्य को देवे, नीचे के तीन नक्षत्र मरण कारण कहे हैं। इस प्रकार यह द्वारचक्र कहा है॥३०-३२॥

कपाटचक्र

कृताकराब्धियुग्मरामभन्तकश्च वारिधिः ।
करौ समुद्रसूर्य भाद्दिनर्क्षके फलं वदेत् ॥
धनागमं विनाशसौख्यबन्धनं मृतिः क्षतिः ।
शुभं च रोगसौख्यदं शुभं कपाटचक्रयोः ॥३३॥

सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने पहले ४ नक्षत्र धनागम करे, २ नक्षत्र विनाश करे, ४ नक्षत्र सौख्यकारक जानने, २ नक्षत्र बन्धनकारी, ४ जानने ३ नक्षत्र मृत्युकारक जानने, २ नक्षत्र क्षयकारक जानने, ४ नक्षत्र शुभ जानने, २ नक्षत्र रोग कारक जानने, ४ नक्षत्र सौख्यकारी जानने, यह कपाट (किवाड़) चढ़ाने का चक्र है सो शुभ जानकर चढ़ावे॥३३॥

सूर्यभात्कपाटचक्र

४	२	४	२	३	२	४	२	४
धनागम	विनाश	सौख्य	बन्धन	मृति	क्षय	शुभ	रोग	सौख्य

गृहप्रवेशमुहूर्त

चित्राऽनुराधा मृगपौष्णपुष्यस्वाती श्रविष्ठा श्रवणं च मूलम् । वारेष्वसूर्यक्षितिजेष्वरिक्ता तिथौ प्रशस्तो भवनप्रवेशः ॥३४॥

चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, पुष्य, स्वाति, धनिष्ठा, श्रवण, मूल ये नक्षत्र शुभ हैं और रविवार, भौमवार तथा रिक्ता (४।९।१४) तिथि को त्याग करे तो गृहप्रवेश शुभ जानना॥३४॥

गृहप्रवेशे कलशचक्र

प्रवेशः कलशेऽर्कक्षात् पञ्चनागाष्टषट्क्रमात् ।
अशुभं च शुभं ज्ञेयमशुभं च शुभं तथा ।।३५।।

सूर्यनक्षत्र से दिननक्षत्रतक ५ नक्षत्र अशुभ, ८ नक्षत्र शुभ, ८ नक्षत्र अशुभ, ६ नक्षत्र शुभ जानने। यह गृहप्रवेश समय में कलशचक्र है।।३५।।

कलशचक्र

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

हलप्रवाहमुहूर्त

अनुराधाचतुष्कं च मघादितियुगे करे ।
स्वाती श्रुतिविधिद्वन्द्वेरेवत्यामुत्तरासु च ।।३६।।
गोस्त्रीयुग्मे हलः कार्यो मीने हेयः शनिः कुजः ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च द्वितीया द्वयपर्व च ।।३७।।

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, मघा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, तीनों उत्तरा तथा वृष, कन्या, मिथुन, मीन इनमें हल प्रवाह कर्म करे अर्थात् हल चलावे; शनि और मंगलवार त्याग करे तथा षष्ठी, रिक्ता (४।९।१४) तिथि, द्वादशी, द्वितीया, अमावास्या इन तिथियों को त्यागकर हल प्रवाहकर्म करे।।३६-३७।।

हलचक्र विधि

त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पञ्चत्रिभिः पञ्चत्रिभिर्द्वयम् ।
सूर्यभाद्दिनभं यावद्धानिवृद्धी हले क्रमात् ।।३८।।

सूर्यनक्षत्र से दिननक्षत्र तक ३।३।३।५।३।५।३।२ हानि वृद्धि हलचक्र में क्रम से जानना।।३८।।

हलचक्र

३	३	३	५	३	५	३	२
हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि

बीजोप्तिमुहूर्त

हस्तत्रये मघापुष्ये त्र्युत्तरे रोहिणीद्वये ।
धनिष्ठारेवतीयुग्मे तथा मूलाऽनुराधयोः ।।३९।।
शुभे वारे तिथौ श्रेष्ठा बीजोप्तिस्त्वथ राहुभात् ।
अष्टाग्नीन्दुत्रयं चैकं त्रयेन्दुत्रिचतुष्टयम् ।।४०।।
असच्छुभं क्रमाज्ज्ञेयं दिनर्क्षं फणिचक्रभम् ।।४१।।

हस्त, चित्रा, स्वाति, मघा, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, धनिष्ठा, रेवती, अश्विनी, मूल अनुराधा तथा शुभ वार और शुभ तिथि में बीजोप्ति कर्म करे अर्थात् बीज बोवे, राहु के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने और फल देख के चक्र से बीजोप्ति कर्म बताना।।३९-४१।।

बीजोप्तिमुहूर्तचक्र

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

धान्यच्छेदन

पूर्वोत्तरा मघाश्लेषा ज्येष्ठार्द्रा श्रवणद्वये ।
भरणीद्वितये मूले मृगे पुष्ये करत्रये ।।४२।।
धान्यच्छिदा शुभारिक्ता हित्वा भौमशनैश्चरौ ।।४३।।

तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, मघा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, श्रवण, धनिष्ठा, भरणी, कृत्तिका, मूल, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति इन नक्षत्रों में धान्यच्छेदन करना शुभ जानना अर्थात् खेत में से अन्न को काटना, रिक्ता (४।९।१४) तिथि और मंगल, शनिवार को त्याग देवे।।४२-४३।।

कणमर्दन

अनुराधा श्रवे मूले रेवत्यां च मृगे त्रिभे ।
ज्येष्ठायां चैव रोहिण्यां शुभं स्यात्कणमर्दनम् ।।४४।।

अनुराधा, श्रवण, मूल, रेवती, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, रोहिणी इन नक्षत्रों में शुभ वार और शुभ तिथि में कणमर्दन कर्म शुभ जानना अर्थात् अन्न को भूसी से पृथक् बैलों के चरणों द्वारा किया जाता है जिसको दांय चलाना कहते हैं।।४४।।

धान्यस्थिति

पुनर्भे मृगशीर्षेऽन्त्येऽनुराधा श्रवणत्रये ।
हस्तत्रयेऽश्विनी पुष्ये रोहिण्यामुत्तरात्रये ॥४५॥
गुरौ शुक्रे रवीन्द्वोः सत्कोष्ठादौ धान्यरक्षणे ॥४६॥

पुनर्वसु, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अश्विनी, पुष्य, रोहिणी, तीनों उत्तरा तथा गुरु, शुक्र, रवि, चन्द्र इन नक्षत्र और वारों में कोठा आदि में अन्न रखना श्रेष्ठ होता है॥४५-४६॥

बीजसंग्रह

हस्तत्रये पुनर्वस्वोः रोहिण्यां श्रवणद्वये ।
स्थिरे लग्ने शुभे वारे विचन्द्रे बीजसंग्रहः ॥४७॥

हस्त, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा ये नक्षत्र हों स्थिर लग्न, शुभ वार में चन्द्रवार को त्याग के बीज संग्रह करे॥४७॥

नवान्नभोजन

हस्ताचित्राऽनुराधान्त्ये रोहिणी श्रवणद्वये ।
मृगाश्विन्युत्तरास्वर्के शुभे वारे तिथावपि ॥४८॥
नवान्नस्य विधानं च प्राशनं फलमूलयोः ।
विना नन्दां विषघटीं मधुपौषार्किभूमिजान् ॥४९॥

हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिरा, अश्विनी, तीनों उत्तरा ये नक्षत्र और रविवार सहित शुक्रवार तथा शुभ तिथि हों तो नवीन अन्नभोजन करना शुभ है, मूल (कन्द) फल इनका भोजन भी शुभ कहा है परंतु नन्दा तिथि (१।६।११) और विषघटी तथा चैत्र पौषमास और शनि, भौमवार न होवे॥४८-४९॥

बुधर्क्षात्पुत्रपुत्रेषुपुत्रवेदयुगेन्दुकम् ।
सच्छुभं शुभमर्थघ्नं शुभं व्यर्थं शुभं क्रमात् ॥५०॥

बुध के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने सो चक्र में देख शुभाशुभ फल जान के बतावे॥५०॥

बुधभान्नवान्नचक्र

५	५	५	५	४	२	१
शुभ	शुभ	शुभ	अर्थघ्न	शुभ	व्यर्थ	शुभ

चुल्लीचक्र

सूर्यभादङ्गवेदाष्टरामशत्रुशुभाशुभम् ।
चुल्लीचक्रे क्रमात् ज्ञेयं शुभाशुभविचक्षणम् ।।५१।।

सूर्य के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने और चक्र में शुभाशुभ देख के चुल्लीस्थापन करने को बतावे।।५१।।

सूर्यभात् चुल्लीचक्र

६	४	८	३	६
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

मार्जनी

हरिः सूर्यचित्रादितिर्मैत्रपुष्ये मृगे रोहिदस्त्रे विरिक्ते च भौमे । त्यजेत्कुम्भमीनेऽप्यलौ लग्नगेहे पवित्रं तु कृत्ये रवेर्यामलानि ।।५२।। सूर्यभाद्रामरामाङ्गरागतर्काङ्गभेषु च । असच्छुभं क्रमात् ज्ञेयं मार्जनीसंज्ञके शुभे ।।५३।।

श्रवण, हस्त, चित्रा, पुनर्वसु, अनुराधा, पुष्य, मृगशिरा, रोहिणी अश्विनी ये नक्षत्र मार्जनी (बुहारी) बांधने के निमित्त शुभ हैं, रिक्ता (४।९।१४) तिथि और भौमवार को त्याग करे कुंभ, मीन, वृश्चिक लग्न ग्रह में पवित्रता करने के निमित्त शुभ जानना ऐसा सूर्ययामल में कहा है। सूर्य के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनकर चक्र में शुभ अशुभ फल देख के बताना।।५२-५३।।

मार्जनीचक्र

३	३	६	३	६	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

वठियामुहूर्त

दोहा-सूर्यऋक्षते षट् भले, पट् खोटे शुभ चारि ।
नाग अशुभ शुभ चारि है, बठिया धरौ विचारि।।५४।।

सूर्य के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने और चक्र में देख के बठिया रखना।।५४।।

बठियाचक्र

६	६	४	८	४
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

क्रयविक्रयमुहूर्त

पुष्यं भाद्रपदायुग्मं स्वाती च श्रवणाश्विनी ।
हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथाऽऽश्लेषा च रेवती ।।५५।।
ग्राह्यानि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ।
चन्द्रभार्गवजीवाश्च वाराः शकुन उत्तमः ।।५६।।

पुष्य, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, स्वाती, श्रवण, अश्विनी, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, मृगशिरा, अनुराधा, आश्लेषा रेवती ये नक्षत्र ग्रहण करे और चन्द्र, शुक्र, गुरुवार तथा उत्तम शकुन में क्रय विक्रय (खरीदने बेचने) का कर्म पंडित बतावे।।५५-५६।।

कोल्हूमुहूर्त

सूर्यभात्पञ्चपञ्चेषु रामयुग्मशरत्रिकम् ।
न सच्छुभमसद्दुःखं क्लेशं शुभमतोऽशुभम् ।।५७।।
कोल्हूचक्रे साभिजितै ज्ञेयमेवं विचक्षणैः ।।५८।।

सूर्य के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करे और चक्र के अनुसार शुभाशुभ देख के कोल्हू चलाने को बतावे।।५७-५८।।

सूर्यभात् कोल्हूचक्र

५	५	५	३	२	५	३
अशुभ	शुभ	अशुभ	दुःख	क्लेश	शुभ	अशुभ

नवीनपात्रे भोजनमुहूर्त

चरमृदुलघुभे सल्लग्नके चैत्रपौषे ।
क्षितिजरविजनन्दाऽपेयनाडीं विहाय ।

प्रतिसमनवजातोऽन्नस्य शत्याशन सत् ।
ध्रुवरणसहितैस्तः कांस्यपात्रादिभोज्यम् ॥५९॥
मुखे त्रीणि ३ शोकं रसे ६ कण्ठपुष्टिः
त्रयो ३ रोगकुक्षे धनं राम ३ वामे ।
त्रये ३ पृष्ठव्याधिः सुखं राम ३ मध्ये
रसे ६ हानिभार्कादधो भुञ्जिपात्रम् ॥६०॥

चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा), मृदु (मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा), लघु, (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्) ध्रुव, (तीनों उत्तरा, रोहिणी) इन नक्षत्रों में तथा उत्तम लग्न में चैत्र पौषमास और मंगल, शनिवार नन्दा (१।६।११) तिथि, विषघटी को त्यागकर नवीन कांस्यादिपात्र में भोजन करना शुभ है। सूर्य के नक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने और चक्र में शुभ अशुभ फल देख के नवीन कांस्य आदि के पात्र में भोजन करने को बतावे॥६०॥

नवीनपात्रे भोजनचक्र

३	६	३	३	३	३	६
मुख	कण्ठ	दुःख	वा.कु.	पृष्ठ	मध्य	अध
शोक	पुष्टि	रोग	धन	व्याधि	सुख	हानि

भैषज्यकर्म

पौष्णद्वये चादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च । मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदन्ति सन्तः ॥६१॥

रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा, मूल, मृगशिरा इन नक्षत्रों में और शुभवार शुभ तिथि में औषधि देना शुभ है ऐसा पंडितजन कहते हैं॥६१॥

रोगोत्पत्ति में अशुभ

स्वात्याश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु शाक्रे भौमे सूर्यजे सूर्यवारे । नन्दारिक्तास्वेव रोगस्य चाप्तिर्मृत्युर्ज्ञेयः शङ्करो रक्षितापि ॥६२॥

स्वाती, आश्लेषा, आर्द्रा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा ये नक्षत्र, भौम, शनि, रविवार नन्दा (१।६।११), रिक्ता (४।९।१४) तिथि में जो रोग की उत्पत्ति हो तो शंकर रक्षिता हो तो भी मृत्यु होवे ऐसा जानना।।६२।।

रोगमुक्तस्नान

इन्दोर्वारि भार्गवे च ध्रुवेषु सर्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु ।
पित्र्ये चान्त्ये चैव कुर्यात्कदाचिन्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जन्तोः ।।६३।। लग्ने चरे सूर्यकुजेज्यवारे रिक्तातिथौ चन्द्रबले च हीने । केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे स्नानं हितं रोगविमुक्तिकानाम् ।।६४।।

चन्द्र, शुक्रवार और रोहिणी, तीनों उत्तरा, आश्लेषा, पुनर्वसु, स्वाति, मघा, रेवती इन नक्षत्रों में रोग रहित होकर कभी स्नान न करे । चर लग्न हो, रवि, भौम, गुरुवार हो, रिक्तातिथि हो, चन्द्रमा हीनबली हो, केन्द्र (१।४।७।१०) तथा त्रिकोण (५।९) में पाप ग्रह हों तो रोग से मुक्त हुआ पुरुष स्नान करे तो शुभ है।।६३-६४।।

वाणिज्यकर्म

अनुराधोत्तरापुष्ये रेवतीरोहिणी मृगे ।
हस्तचित्राश्विभे कुर्याद्वाणिज्यं दिवसे शुभे ।।६५।।

अनुराधा, तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्विनी ये नक्षत्र और शुभ दिन में वाणिज्य कर्म करे।।६५।।

जलाशयारंभमुहूर्त

अनुराधामघाहस्ते रेवतीषूत्तरात्रये ।
रोहिणीयुगले पुष्ये धनिष्ठाद्वितये तथा ।।६६।।
पूर्वाषाढाभिधे भे च शुभे मासि शुभे दिने ।
वापीकूपतडागानमारम्भः कथितो बुधैः ।।६७।।

अनुराधा, मघा, हस्त, रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाषाढ़ा ये नक्षत्र शुभ मास और शुभ दिन में बावड़ी, कुवां तालाब आदि जलाशयों का आरंभ पंडितों ने शुभ कहा है।।६६-६७।।

जलाशयादि में वारफल

रविवारे जलं नास्ति सोमे पूर्णजलं भवेत् ।
वालुका भौमवारे तु बुधे बहुजलं भवेत् ।।६८।।

गुरौ च मधुरं तोयं शुक्रे क्षारं प्रजायते ।
शनैश्चरे जलं नास्ति कीर्तितं वारजं फलम् ॥६९॥

रविवार को जलाशय का आरंभ करे तो जल न निकले, चन्द्रवार को पूर्ण जल होवे, भौमवार को वालू निकले, बुध को बहुत जल होवे, गुरुवार को जल मीठा निकले, शुक्र को जल खारा निकले, शनिवार को जल न निकले यह वारफल कहा॥६८-६९॥

कूपचक्र

सजलखण्डजले सजलाजले शुभजलं लवणं च
शिलाजलम् । लवणमुष्णकराद्दिनभावधि
नव फलानि विदुस्त्रितयोडुभिः ॥७०॥

सूर्यनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने और चक्र के अनुसार, शुभाशुभ फल विचारे, सूर्य नक्षत्र से तीन ३ नक्षत्र सजल, खंडजल, सजल निर्जल, उत्तम जल, खारा जल, कंकरीला, उत्तम जल खारा जल निकले॥७०॥

सूर्यभात्कूपचक्र

३	३	३	३	३	३	३	३	३
लजल	खं.ज.	सजल	निर्जल	उ.ज.	खा.ज.	कं.क.	उ.ज.	खा.ज.

चूड़ीधारण

अश्विन्यां च धनिष्ठायां रेवत्यां करपञ्चके ।
सुवर्णरत्नदन्तादिवस्त्राणां धारणं स्त्रियः ॥७१॥

अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा इन नक्षत्रों में सुवर्ण रत्न दन्त आदि और वस्त्रों का धारण करना स्त्रियों को हितकारी है॥७१॥

यावद्भास्करभुक्तिभानि दिवसे धिष्ण्यानि संख्या तथा
वह्नि ३ भूत ५ गुणा ३ ब्धि ५ सप्त ७ नयनं २ पृथ्वी १
करेन्दु १ क्रमात् । सूर्यारौ कविसौ म्यराहुरविजा जीवः
शशी केतवः क्रूरेऽसच्च शुभे शुभं च कथितं चक्रे करे
भूषणे ॥७२॥

सूर्यस्थित नक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिने ३।५।३।४।७।२।१।२।१ क्रम से सूर्य, मंगल,

शुक्र, बुध, राहु, शनि, बृहस्पति, चंद्र, केतु इनमें शुभ ग्रह में दिननक्षत्र हो तो शुभ, पाप ग्रह में हो तो अशुभ जानना यह चूड़ीचक्र पंडितों ने कहा है।।७२।।

सूर्यभात् चूड़ीचक्र

३	५	३	३	७	२	१	२	१
सू.	मं.	शु.	बु.	रा.	श.	बृ.	चं.	के.
अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ

मिष्टान्नशकुनमुहूर्त

चित्रामृगाश्विविधिकर्णसमैत्रभेषु तिष्यादितिर्दिनकरोर्यमविश्वभं स्यात् ।भौमार्कजीवभृगुवासरमिन्दुशुद्धे मिष्टान्नकर्म प्रवदन्ति मुनीन्द्रमुख्याः ।।७३।।

तथा-मृगादितिज्यकार्यभे कराश्विमैत्रत्वाष्ट्रभे बुधेन्दुशौरिवर्जिते विधौ बलं हि शाकुने। रविर्भतोऽगसायका गजाऽश्विबाणभेन्दुभं शुभाशुभं फलप्रदं रसोद्भवादिकक्रिये ।।७४।।

चित्रा, मृगशिरा, अश्विनी, रोहिणी, श्रवण, अनुराधा, पुष्य, पुनर्वसु, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा ये नक्षत्र और मंगलवार रविवार, गुरुवार, शुक्रवार हो तथा चन्द्रमा शुद्ध हो तो मिष्टान्नकर्म शुभ जानना, ऐसा मुख्य मुनिजन कहते हैं। अथवा मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी, अनुराधा, चित्रा ये नक्षत्र और बुध, चन्द्र, शनि इनसे रहित वार तथा चन्द्रमा बली हो तो मिष्टान्न शकुन शुभ है। सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिने और चक्र में देख के मिष्टान्न का शकुन बतावे।।७३-७४।।

सूर्यभाच्छकुनचक्र

७	५	८	२	५
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

संक्रान्तिपुण्यकाल

प्रागूर्ध्वा दश पूर्वतो षडवनिस्तद्वत्पराः पूर्वतस्त्रिंशत्षोडश पूर्वतोऽथ परतः पूर्वाः पराः स्युर्दश । पूर्वाः षोडश चोत्तरा

ऋतुभुवः पश्चात्खवेदास्तथा पूर्वाः षोडशचोत्तराः
पुनरथो पुण्यास्तु मेषादितः ।।७५।।

मेष की संक्रान्ति प्रवेश से पूर्व (पहले) दश घड़ी पुण्यकाल जानना, वृष के पूर्व की सोलह घड़ी, मिथुन के पीछे की सोलह घड़ी, कर्क के पहिले की तीस घड़ी, सिंह के पूर्व की सोलह घड़ी, कन्या के पीछे की सोलह घड़ी, तुला के दोनों ओर की दश घड़ी वृश्चिक के पहले की सोलह घड़ी, धनु के पीछे की सोलह घड़ी, मकर के पीछे की चालीस घड़ी कुंभ के पहिले की सोलह घड़ी और मीन के पीछे की सोलह घड़ी पुण्य काल की जानना।।७५।।

सूर्यास्तमनवेलायां मकरं याति भास्करः ।
प्रदोषे चार्द्धरात्रे वा तदा पुण्यं परेऽहनि ।।७६।।
पुण्याः षोडश नाड्यस्तु पराः पूर्वास्तु संक्रमात् ।
त्रिंशत्कर्कटके पूर्वाश्चत्वारिंशत्परा मृगे ।।७७।।

सूर्यास्त समय, प्रदोष समय अथवा अर्द्धरात्रि समय मकर की संक्रान्ति प्रवेश हो तो पर (पिछले) दिन पुण्यकाल होता है। संक्रान्ति प्रवेश से पर और पूर्व दिन पुण्यकाल जानना, कर्क की संक्रान्ति प्रवेश से तीस घड़ी पूर्व (पहिले की) पुण्यकाल जानना और मकर संक्रान्ति में पर पिछली चालीस घड़ी पुण्यकाल की जानना।। ७६-७७।।

यात्रामुहूर्त

हस्तेन्दुमैत्रश्रवणाश्वितिष्यपौष्णश्रविष्ठाश्च पुनर्वसुश्च ।
प्रोक्तानि धिष्ण्यानि नवप्रयाणे त्यक्त्वा त्रिपञ्चा-
दिमसच्च तारा ।।७८।।

हस्त, मृगशिरा अनुराधा, श्रवण, अश्विनी, पुष्य, रेवती, श्रवण, पुनर्वसु ये नव नक्षत्र यात्रा के निमित्त शुभ कहे हैं परंतु तीसरा, पांचवां पहला, तारा अशुभ कहा है सो त्याग करे।।७८।।

न षष्ठी च द्वादशी नाष्टमी नो सिताद्या तिथिः
पूर्णिमाऽमा न रिक्ता । हयादित्यमित्रेन्दुजीवेन्त्यहस्त-
श्रवोवासवैरेव यात्रा प्रशस्ता ।।७९।।

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, शुक्लप्रतिपदा, पूर्णिमा, अमावस्या, रिक्ता इन तिथियों में यात्रा शुभ नहीं है। अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में यात्रा श्रेष्ठ जानना।।७९।।

रोहिणी उत्तरा चित्रा मूलमार्द्रा तथैव च ।
षाढोत्तराभाद्रविश्वे प्रयाणे मध्यमाः स्मृताः ॥८०॥

रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, मूल, आर्द्रा, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, उत्तराषाढ़ा ये नक्षत्र यात्रा में मध्यम कहे हैं।।८०।।

पूर्वासु षोडशैवाद्याः कृत्तिकास्वेकविंशतिः ।
मघास्वेकादश त्याज्या भरण्याः सप्त नाडिकाः ॥८१॥
स्वात्याश्लेषाविशाखासु ज्येष्ठायाश्च चतुर्दश ।
यायाल्लग्नबले शेषनाडींष्वावश्यके सति ॥८२॥

पूर्वाफाल्गुनी की आदि की सोलह घड़ी, कृत्तिका की इक्कीस घड़ी, मघा की ग्यारह घड़ी, भरणी की सात घड़ी, स्वाति, आश्लेषा, विशाखा, ज्येष्ठा की चौदह घड़ी त्यागकर शेष घड़ी यात्रा के निमित्त शुभ जानना, परंतु लग्न बलवान् होवे।।८१-८२।।

दिक्शूल

दिक्शूलं पूर्वदिग्भागे ज्येष्ठायां शनिसोमयोः ।
पूर्वभाद्रपदे याम्यां तथैव गुरुवासरे ॥८३॥
रवौ शुक्रे च रोहिण्यां पश्चिमायां त्यजेद्बुधः ।
उदीच्यामुत्तराफाल्गुन्यभिधे मङ्गले बुधे ॥८४॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और शनि सोमवार को पूर्वदिशा में यात्रा न करे, तथा पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र और गुरुवार को दक्षिण दिशा की यात्रा न करे। रविवार, शुक्रवार और रोहिणी को पश्चिम दिशा में, उत्तराफाल्गुनी और मंगल-बुधवार को उत्तर दिशा में यात्रा न करे।।८३-८४।।

विदिक्शूल

आग्नेय्यां च गुरौ चन्द्रे नैर्ऋत्यां रविशुक्रयोः ।
ईशान्यां चन्द्रजे वायौ मङ्गले गमनं त्यजेत् ॥८५॥

गुरु सोमवार को अग्निकोण में, रवि शुक्रवार को नैर्ऋत्य में, बुधवार को ईशान में, मंगल को वायव्य में यात्रा न करै।।८५।।

कालवास

अर्कोत्तरे वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैर्ऋते च ।
याम्ये गुरो वह्निदिशा च शुक्रे मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति
कालम् ॥८६॥

रवि को उत्तर, सोम को वायुदिशा, भौम को पश्चिम, बुध को नैर्ऋत्य, गुरु को दक्षिण, शुक्र को अग्निकोण, शनि को पूर्वदिशा में काल का वास जानना ऐसा पूर्वाचार्य कहते हैं सो त्याग करे॥८६॥

नक्षत्रवाराद्यनुसारादिक्शूल

मूलश्रवणशाक्रेषु प्रतिपन्नवमीषु च ।
शनौ सोमे बुधे चैव पूर्वस्यां गमनं त्यजेत् ॥८७॥

मूल, श्रवण, ज्येष्ठा, नक्षत्र प्रतिपदा, नवमी तिथि शनि सोम और बुधवार को पूर्व दिशा की यात्रा न करे अर्थात् पूर्वमुख यात्रा इन नक्षत्रों, तिथियों और वारों में त्याग करे॥८७॥

पूर्वाभाद्रपदाश्विन्यौ पञ्चमी त्रयोदशीम् ।
गुरु धनिष्ठार्द्रा चैव याम्मे सप्त विवर्जयेत् ॥८८॥

पूर्वाभाद्रपदा, अश्विनी, पञ्चमी, त्रयोदशी, गुरुवार, धनिष्ठा आर्द्रा ये सातों दक्षिण दिशा की यात्रा में त्याग करे॥८८॥

रोहिण्यां च तथा पुष्ये षष्ठी चैव चतुर्दशी ।
भौमाऽर्कगुरुवारेषु न गच्छेत्पश्चिमां दिशम् ॥८९॥

रोहिणी, पुष्यनक्षत्र, षष्ठी, चतुर्दशी तिथि, भौम, सूर्य गुरुवार को पश्चिम दिशा की यात्रा न करे॥८९॥

करे चोत्तरफाल्गुन्यां द्वितीया दशमी तथा ।
बुधे रवौ भौमवारे न गच्छेदुत्तरां दिशम् ॥९०॥

हस्त, उत्तराफाल्गुनी, द्वितीया, दशमी, बुध, रवि, भौमवार को उत्तर दिशा की यात्रा न करे॥९०॥

शूलदोषनिवारणार्थभक्षण

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा ।
गुडमङ्गारके चैव बुधवारे तिलानपि ॥९१॥
गुरुवारे दधि ज्ञेयं शुक्रवारे यवानपि ।
माषान् भुक्त्वा शनेर्वारे शूलदोषोपशान्तये ॥९२॥

रविवार को घी, सोमवार को दूध, भौमवार को गुड़, बुधवार को तिल, गुरुवार को दधि, शुक्र को जौ, शनिवार को माष (उड़द) भक्षण करके यात्रा करे। यह उपाय शूलदोष की शान्ति के अर्थ करे॥९१-९२॥

रविदिनगुरुपूर्वे सोमशुक्रे च याम्ये
वरुणदिशि तु भौमे चोत्तरे सौरिसंस्थे ।

प्रतिदिनमिति मत्वा कालराहुर्दिशानां
सकलगमनकार्ये वामपृष्ठे च सिद्धिः ॥९३॥

रविवार और गुरुवार को पूर्वदिशा में गमन करे तो कालराहु वाम पृष्ठ भाग में जानिये और सोमवार, शुक्रवार को दक्षिण दिशा में गमन करे, भौमवार को पश्चिम दिशा में, शनिवार को उत्तर दिशा में गमन करे तो यात्रा में सिद्धि प्राप्त होवे अर्थात् कार्य सिद्धि होवे॥९३॥

क्षुधितराहु

इन्द्रे वायौ यमे रुद्रे तोयेऽग्नौ शशिरक्षसोः ।
यामार्धक्षुधितो राहुर्भ्रमत्येव दिगष्टके ॥९४॥
५ तिथिर्न च नक्षत्रं न योगो न च चन्द्रमाः ।
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि यात्रायां दक्षिणे रवौ ॥९५॥

पहले यामार्ध में क्षुधित राहु पूर्वदिशा में जानिये, दूसरे यामार्ध में वायव्य, तीसरे में दक्षिण, चौथे में ईशान, पांचवें में पश्चिम, छठे में आग्नेय, सातवें में उत्तर, आठवें में नैऋत्यदिशा में क्षुधितराहु जानना इस प्रकार क्षुधित राहु आठों दिशाओं में भ्रमण करता है। न तिथि, न नक्षत्र, न योग, न चन्द्रमा का विचार करे जो रवि (सूर्य) दक्षिण भाग में हो तो सब कार्य सिद्ध होते हैं॥९४-९५॥

वारानुसार स्वरशकुन

गुरौ शनौ रवौ भौमे शुभो वै दक्षिणः स्वरः ।
अन्यवारेषु वामस्तु स्वरश्चैव शुभः स्मृतः ॥९६॥
निर्गमे वामतः श्रेष्ठः प्रवेशे दक्षिणः शुभः ।
यः स्वरः स च नासाग्रे योगिनां मतमीदृशम् ॥९७॥

गुरु, शनि, रवि भौम इन वारों में दहिना स्वर शुभ होता है, शेष वारों में बायां स्वर शुभ होता है ऐसा कहा है। यात्रा में बायां स्वर प्रवेश में दहिना स्वर शुभ कहा है ऐसा योगियों का मत है॥९६-९७॥

कालवलविचार

पूर्वाह्ले चोत्तरां गच्छेत्प्राच्यां मध्याह्नके तथा ।
पक्षिणे चापराह्ले तु पश्चिमे त्वर्धरात्रके ॥९८॥

दिन के तीन भाग करे, पहले भाग में उत्तर दिशा की यात्रा करे, तथा मध्याह्न (दूसरे भाग) में पूर्वदिशा की यात्रा करे, आधी रात को पश्चिमदिशा की यात्रा करे तो शुभ है॥९८॥

चन्द्रवास

मेषे च सिंहे धनपूर्वभागे वृषे च कन्यामकरे च याम्ये ।
तुलासुकुम्भे मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशि चोत्तर-
स्याम् ॥९९॥

मेष, सिंह, धन का चन्द्रमा पूर्वदिशा में जानना; वृष कन्या और मकर राशि का चन्द्रमा दक्षिणदिशा में जानना; तुला, कुंभ और मिथुन का चन्द्रमा पश्चिम दिशामें जानना॥९९॥

सम्मुखश्चार्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः ।
पृष्ठे च प्राणनाशाय वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१००॥

दिशानुसार सम्मुख चन्द्रमा में यात्रा करे तो अर्थलाभ हो, दहिना हो तो सुख और सम्पदा बढ़ावे, पीछे हो तो प्राण नाश करे, बायें हो तो धन का क्षय करे॥१००॥

करणभगणदोषं वारसंक्रान्तिदोषं कुतिथिकुलिकदोषं
वामयामार्धदोषम् । कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं
हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः ॥१०१॥

करण, नक्षत्र, वार, संक्रान्ति, तिथि, कुलिक, वाम यामार्ध कुज (भौम), शनि, रवि, राहु, केतु, आदि के सब दोष को सम्मुख चन्द्रमा हरण करता है।।१०१॥

योगिनी वास

प्रतिपन्नवमी पूर्वे द्वितीयादश चोत्तरे ।
तृतीयैकादशी वह्नौ चतुर्द्वादशि नैर्ऋते ॥१०२॥
पञ्चत्रयोदशी याम्ये षष्ठी भूते च पश्चिमे ।
सप्तपूर्णासु वायव्ये अमावास्याष्टमी शिवे ॥१०३॥

प्रतिपदा और नवमी को पूर्व में, द्वितीया और दशमी को उत्तर में तृतीया और एकादशी को अग्निकोण में, चतुर्थी और और द्वादशी को नैर्ऋत्य में, पंचमी और त्रयोदशी को दक्षिण में, षष्ठी और चतुर्दशी को पश्चिम में, सप्तमी और पूर्णमासी को वायव्य में, अमावास्या और अष्टमी को ईशान में योगिनी का वास जानना॥१०२-१०३॥

पृष्ठे च शिवदा प्रोक्ता वामे चैव विशेषतः ।
योगिनी सा भवेन्नित्यं प्रयाणे शुभदा नृणाम् ॥१०४॥

पीठ पीछे योगिनी कल्याणकारी जानना। बायें ओर योगिनी विशेष फल करे है अर्थात् यात्रा में पीठ पीछे और बायें योगिनी शुभ फल देने वाली होवे है।।१०४।।

चरलग्ने प्रयातव्यं द्विस्वभावे तथा नरैः ।
लग्ने स्थिरे न गन्तव्यं यात्रायां क्षेममीप्सुभिः ।।१०५।।

चरलग्न (१।४।७।१०) में यात्रा करे, तथा द्विस्वभावलग्न (३।६।९।१२) में यात्रा करे। यात्राकाल में क्षेम की इच्छा से स्थिरलग्न (२।५।८।११) में यात्रा नहीं करे।।१०५।।

त्र्यहं क्षीरं च पञ्चाहं क्षौरं सप्तदिनं रतम् ।
वर्ज्यं यात्रादिनात्पूर्वमशक्तौ तद्दिने रतम् ।।१०६।।
यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधु च स्थापयेत्फलम् ।
विप्रादिकमतः सर्वं स्वर्णधान्याम्बरादिकम् ।।१०७।।
राजा दशाहं पञ्चाहमन्यो न प्रस्थितो वसेत् ।
अङ्गप्रस्थानसम्पूर्णं वस्तुप्रस्थानकेऽर्द्धकम् ।।१०८।।

यात्रा से तीन दिन पहले दूध न पीवे, पांच दिन पहले क्षौरकर्म न करे, सात दिन पहले रत (मैथुन) न करे। यदि अशक्त हो तो उस दिन रत न करे। ब्राह्मण यज्ञोपवीत, क्षत्री, शस्त्र, वैश्य, मधु, शूद्र फल का प्रस्थान करे और प्रस्थाननिमित्त सुवर्ण अन्न, वस्त्र आदि पदार्थ सबको हित है। राजा दश दिन तक प्रस्थान रक्खे, अन्य जन पांच दिन प्रस्थान रखकर निवास करे परंतु अंग के प्रस्थान में पूर्ण फल और वस्तु के प्रस्थान में आधा फल जानिये।।१०६-१०८।।

इति श्रीमन्मिश्रशोभारामसुतज्योतिर्वित्पंडितनारायणप्रसादविलिखिते
बालबोधाख्यज्योतिषसारसंग्रहे मुहूर्तरत्नं तृतीयं समाप्तम् ।।३।।



संस्काररत्नम्

अथ चतुर्थं संस्काररत्नं प्रारभ्यते

तत्रादौ ऋतुमतीस्नानम्

पुनर्वसुस्तथा चित्राज्येष्ठापुष्याभिधेषु च ।
स्नायादृतुमती नारी शुभे वारे शुभे तिथौ ।।१।।
रोहिणीद्वितये स्वातौ हस्ते वै रेवतीद्वये ।
स्नानात्तु युवती गर्भं विधत्ते शीघ्रमेव हि ।।२।।

पुनर्वसु, चित्रा, ज्येष्ठा, पुष्य इन नक्षत्रों में और शुभवार तथा शुभतिथि में रजोवती स्त्री स्नान करे। रोहिणी, मृगशिरा, स्वाति, हस्त, रेवती, अश्विनी इन नक्षत्रों में ऋतुमती स्त्री स्नान करे तो शीघ्र गर्भ धारण करे॥१-२॥

गर्भाधान

स्वातौ हस्तेऽनुराधायां रोहिण्यां श्रवणत्रये ।
त्र्युत्तरे मृगशीर्षे च शुभाहे शुभराशिषु ॥३॥
गर्भाधानं प्रशस्तं स्याच्चन्द्रे शस्ते पुमांसके ॥४॥

स्वाति, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों उत्तरा। मृगशिरा शुभ दिन और शुभराशि में गर्भाधान (गर्भधारण करना) शुभ होता है परंतु चन्द्रमा शुभ हो पुरुष राशि का नवांश हो॥३-४॥

पुंसवनसीमन्तकर्म

द्वितीये वा तृतीये वा मासि पुंसवनं स्मृतम् ।
मासि षष्ठेऽष्टमे वापि गर्भसीमन्तकं विदुः ॥५॥
पुनर्वसुद्वये मूले श्रवणे मृगहस्तयोः ।
गुरुभौमार्कवारेषु प्रोक्तं पुंसवनादिकम् ॥६॥
रेवत्यां त्र्युत्तरेऽप्येके शुक्रे चन्द्रे बुधे जगुः ॥७॥

दूसरे वा तीसरे मास में पुंसवन कर्म होता है और गर्भाधान से छठे आठवें मास में सीमन्तकर्म कहा है। पुनर्वसु, पुष्य, मूल, श्रवण, मृगशिरा, हस्त इन नक्षत्रों में और गुरु, भौम, रविवार में पुंसवन आदि कर्म शुभ कहा है। रेवती, तीनों उत्तरा और शुक्र, चन्द्र, बुधवार में भी कोई आचार्य पुंसवनादिकर्म शुभ कहते हैं॥५-७॥

संस्कारे विशेष ज्ञातव्य

विवाहे गर्भसंस्कारे चन्द्रशुद्धिः स्त्रिया अपि ।
भूपाम्बरादिकार्येषु भर्तुरवैन्दवं बलम् ॥८॥

विवाह, गर्भसंस्कार (पुंसवनसीमन्तादि) में स्त्री को भी चन्द्रबल विचारे और आभूषण वस्त्रधारण आदि कार्य में पुरुष के नाम से चन्द्रबल विचारे॥८॥

गर्भाधानादिसंस्कारे तथाऽन्नप्राशने शिशोः ।
न तत्र गुरुशुक्रास्तमन्नग्रासादिदूषणम् ॥९॥

गर्भाधान आदि संस्कार में तथा बालक के अन्नप्राशन में गुरु शुक्र के अस्त का दोष नहीं जानना। एवं नवान्नभोजन आदि में भी दोष नहीं जानना॥९॥

गण्डान्तमूल

अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः ।
रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसस्तथा ॥१०॥
आद्ये पादे पितुर्हन्ति द्वितीये जननीं तथा ।
तृतीये च धनं हन्ति चतुर्थे शुभमेव हि ॥११॥

अश्विनी के आदि की तीन घड़ी, मघा के आदि की चार घड़ी, मूल के आदि की नव घड़ी, रेवती के अंत की बारह घड़ी, आश्लेषा के अंत की ग्यारह घड़ी, ज्येष्ठा के अन्त की छः घड़ी गण्डांतमूल कही है। गंडांतमूल में उत्पन्न हुए बालक का मुख उसका पिता आठ वर्ष पर्यन्त न देखे अथवा शास्त्रोक्तानुसार शान्ति करे। मूल के प्रथम चरण में उत्पन्न बालक पिता को हानि कारक जानना, दूसरे चरण में माता को तथा तीसरे चरण में धन को चौथे चरण में शुभ फल को करे, परंतु आश्लेषा का फल विपरीत जानना॥१०-११॥

प्रसूतीस्नान

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम् ।
मूलमार्द्रा मघा हेया श्रवणो दशमस्तथा ॥१२॥
सोमशुक्रबुधा नारी प्रसूतिस्नानकर्मणि ।
हेया च प्रतिपत्षठी नवमी च तिथिक्षयः ॥१३॥

पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका, मूल, आर्द्रा, मघा, श्रवण ये दश नक्षत्र त्याग करे और चन्द्र, शुक्र बुधवार तथा प्रतिपदा, षष्ठी, नवमी तिथि क्षय को त्यागकर प्रसूता स्त्री स्नान करे॥१२-१३॥

नामकरण

मित्रादित्यमघोत्तराशतभिषक्स्वाती धनिष्ठाच्युतप्राजे-
शाश्विशशाङ्कपौष्णदिनकृत्पुष्ये तु राशौ स्थिरे । छिद्रां
पञ्चदशीं विहाय नवमीं शुद्धेऽष्टमे भार्गवज्ञाचार्यामृत-
पादभागदिवसे नामानि कुर्युः शिशोः ॥१४॥
अमासंक्रांतिविष्टयां तु प्राप्तकालेऽपि नाचरेत् ।
शर्मान्तं ब्राह्मणस्य स्याद्वर्मान्तं क्षत्रियस्य च ।
वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्यसंयुतम् ॥१५॥

अनुराधा, हस्त, मघा, तीनों उत्तरा, शतभिषा, स्वाती, धनिष्ठा, श्रवण, रोहिणी,

अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, पुष्य ये नक्षत्र और स्थिर लग्न में छिद्र तिथि व पूर्णिमा, नवमी तिथि को त्यागकर अष्टम स्थान शुद्ध हो ऐसी लग्न में, शुक्र, बुध, गुरुवार को पूर्वाह्न समय में बालक का नाम करण करे। अमावास्या, संक्रांति, भद्रा इनके प्राप्त काल में भी नामकरण न करे। ब्राह्मण बालक का नाम शर्मान्त रक्खे, जैसे देवदत्त शर्मा। क्षत्रिय का नाम वर्मान्त रक्खे, जैसे यज्ञदत्त वर्मा। वैश्य का नाम धनसंयुक्त तथा गुप्तांत रक्खे, जैसे धनपति चन्द्रगुप्त आदि। शूद्र का नाम दासान्त रक्खे, जैसे रामदास देवदास आदि। होड़ाचक्र में जिस नक्षत्र के जिस चरण में जो अक्षर जन्म समय हो उसी अक्षर पर नाम धरे।।१४-१५।।

जन्मसमये तात्कालिकलग्नज्ञान

तुलालिकुम्भोजकुलीरलग्ने वेद्यं प्रसूतागृहपूर्वद्वारे ।
कन्याधनुर्मीननृयुग्मलग्ने स्यादुत्तरद्वारः प्रतीचिगोस्थः
।।१६।। मृगारिलग्ने मकरे तथापि भवेत् प्रसूतागृह-
दक्षिणस्याम् । एवं हि लग्नात् परिचिन्तनीयं सूतीगृह-
द्वारमिदं प्रदिष्टम् ।।१७।।

जन्म समय तुला, वृश्चिक, कुंभ, मेष, कर्क ये लग्न हों तो प्रसूती के घर का द्वार उत्तर मुख का जानना, वृषलग्न हो तो पश्चिम मुख का होवे, सिंह तथा मकर लग्न हों तो प्रसूती का गृहद्वार दक्षिण मुख का जानना, इस प्रकार लग्न से प्रसूती के गृहद्वार निश्चय करके तात्कालिक लग्न जानना।।१६-१७।।

मीने मेषे च द्वे भार्ये चत्वारि वृषकुंभयोः ।
मकरे मिथुने पञ्च बाणाश्च धनकर्कयोः ।।
अन्यलग्ने भवेत्त्रीणि प्रवदन्ति मनीषिणः ।।१८।।

मीन मेष लग्न जन्म समय में हो तो दो स्त्री प्रसूती के निकट कहना, वृष कुंभ लग्न हो तो चार स्त्री कहना, मकर, मिथुन लग्न हो तो पांच स्त्री कहना, धन कर्क लग्न हो तो पांच स्त्री कहना, अन्य लग्न (सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक) जन्म समय हो तो तीन स्त्री कहना, ऐसा श्रेष्ठ पण्डित जन कहते हैं।।१८।।

लग्नचन्द्रान्तर्गतस्थैर्ग्रहैस्तत्रोपसूतिकाः ।
बहिरन्तश्च चक्रार्द्धे दृश्यादृश्येऽन्यथा परे ।।
अङ्गे चन्द्रे ग्रहमात्रादृष्टे निर्जने प्रसवः ।।१९।।

लग्न और चन्द्रमा के बीच में जितने ग्रह हों उतनी स्त्री सूतिका के निकट उपसूतिका कहना, चक्रार्द्ध अर्थात् लग्न से सातवें स्थान तक जितने ग्रह हों उतनी स्त्रियां भीतर तथा आठवें स्थान से बारहवें स्थान तक जितने ग्रह हों उतनी स्त्रियां सूतिका

गृह से बाहर जानना। लग्न में चन्द्रमा हो और कोई भी ग्रह न देखता हो तो प्रसूती के समीप कोई भी स्त्री नहीं होवे ऐसा कहना।।१९।।

पापैश्च विधवा नारी क्रूरैरपि कुमारिका ।
सौम्यग्रहैश्च सुभगा सूतिकायां विधीयते ।।२०।।

पापग्रहों करके विधवा, क्रूर ग्रह करके कुमारी, शुभ ग्रह से सौभाग्यवती स्त्री सूतिका के समीप कहना।।२०।।

मेषत्रिपश्चाननतौलिलग्ने विस्मृत्य सर्वं बहु रोदिति स्म ।
स्वल्पं घटे स्त्रीशिशुरन्यलग्ने रुद्याद्धि नो ज्ञानबलस्य सत्त्वात् ।।२१।।

मेष, मिथुन, सिंह, तुला इन लग्नों में बालक का जन्म हो तो वह बालक सब ज्ञान को भूलकर बहुत रोता है और कुंभ व कन्या लग्न में उत्पन्न बालक थोड़ा रुदन करता है, अन्य लग्नों (वृष कर्क, वृश्चिक, धन, मकर, मीन) में उत्पन्न बालक ज्ञानबल के प्रभाव से बहुत नहीं रोता है।।२१।।

मेषे सिंहे धनुः कर्के कन्यामीने तथा तुले ।
अन्तरिक्षं भवेज्जन्म शेषे भूमिर्निगद्यते ।।२२।।

मेष, सिंह, धनु, कर्क, कन्या, मीन, तुला इन लग्नों में जन्म हो तो शय्या पर जन्म कहना। शेष लग्न (वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर कुंभ) में बालक उत्पन्न हो तो पृथ्वी पर जन्म कहना।।२२।।

छागसिंहे वृषे लग्ने वृश्चिके नालवेष्टितः ।
नृलग्ने दक्षिणे पार्श्वे वामे स्त्रीलग्नके तथा ।।२३।।

मेष, सिंह, वृष, वृश्चिक इन लग्नों में बालक का जन्म हो तो नाल लिपटा हुआ जन्म कहना, पुरुष लग्न से दाहिनी ओर, स्त्री (सम) लग्न से बाईं ओर लिपटा कहना।।२३।।

छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थे मन्देऽथवा कुजे ।
राश्यंशसदृशे गात्रे जायते नालवेष्टितः ।।२४।।

मेष, सिंह, वृष इन लग्नों में जन्म हो और लग्न में शनि वा मङ्गल स्थित हो तो लग्न स्थित नवांशक की राशि के अंग में नाल लिपटा हुआ कहना।।२४।।

यत्र राहुस्तत्र शिरो मङ्गले भूमिखण्डनम् ।
रविस्थाने भवेद्दीपः शनौ लोहं निगद्यते ।।२५।।

जन्म समय लग्न में जहां राहु स्थित हो उस दिशा में बालक का शिर कहना, जिस

दिशा में मंगल हो वहां पर भूमि खंडित अथवा गड्ढ़ा कहना, जहां सूर्य हो उस दिशा में दीपक कहना, जहां शनि स्थित हो वहां लोहे की स्थिति जानना, यहां जन्मलग्न को पूर्वदिशा, सातवें स्थान को पश्चिम दिशा, चौथे स्थान को उत्तर दिशा, दशवें स्थान को दक्षिण दिशा जानना, एवं चारों दिशाओं के बीच में चारों कोण जानना। यहां कोई ऐसा भी कहते हैं कि, रात्रि दिन में सूर्य पूर्व आदि आठों दिशाओं में घूमता है उस समय संचारवश से जिस दिशा में सूर्य हो उस दिशा में दीपक कहना।।२५।।

चरलग्ने चरो दीपः स्थिरे स्वस्थानसंस्थितः ।
द्विदेहभे करस्थः स्यादिति केचिद्बुधा जगुः ।।२६।।

जन्म समय चर लग्न हो तो दीपक चलायमान रहा, स्थिर लग्न हो तो अपने स्थान में स्थिर रहा, द्विस्वभाव लग्न हो तो हाथ में दीपक रहा ऐसा कोई पंडित कहते हैं।।२६।।

पितुर्जातः परोक्षस्य लग्नमिन्दावपश्यति ।
विदेशस्थस्य चरभे मध्याद् भ्रष्टे दिवाकरे ।।२७।।

जन्म समय लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो बालक का जन्म पिता के परोक्ष (पीछे) कहना और मध्य से भ्रष्ट अर्थात् दशवें स्थान से रहित (नवम, अष्टम, एकादश, द्वादश) स्थानों में सूर्य चर राशि का हो तो बालक के जन्म समय पिता विदेश में स्थित कहना ये बारह श्लोक तात्कालिक लग्न जानने के हैं इसी से इन श्लोकों को लग्न वार भी कहते हैं। प्रसूती के भोजन और वस्त्रों का रंग आदि लग्न के वर्णपर से कहना सो मेषादि लग्न का वर्ण प्रसंगवश आगे लिखेंगे।।२७।।

जलपूजा

पुनर्वसुद्वये हस्ते मृगे मूलाऽनुराधयोः ।
श्रवे गुरौ बुधे चन्द्रे सत्तिथौ जलपूजनम् ।।२८।।

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, अनुराधा, श्रवण ये नक्षत्र और गुरु, बुध, चन्द्रवार, शुभ तिथि में प्रसूती स्त्री कूएं पर जाय अथवा तालाब वा बावडी के समीप जाय जल की पूजा करे।।२८।।

दोलारोहण

खट्वारोहस्तु कर्तव्यो दशमे द्वादशेऽपि वा ।
षोडशे दिवशे वापि द्वाविंशे दिवसेऽपि वा ।।२९।।
स्तनपानोक्तनक्षत्रे कुर्याद्दोलाधिरोहणम् ।।३०।।

दशवें वा बारहवें, सोलहवें वा बाईसवें दिन दोलापर बालक को बिठावे। स्तनपान

में कहे नक्षत्रों में बालक को झूले पर चढ़ावे, स्तनपान नक्षत्र वे ही हैं जो नक्षत्र अन्नप्राशन में आगे हम लिखते हैं।।२९-३०।।

अन्नप्राशनमुहूर्त

युग्मेषु मासेषु च षष्ठमासात्संवत्सरे वा नियतं शिशूनाम् ।
अयुग्ममासेषु च कन्यकानां नवान्नसंप्राशनमिष्टमेतत् ।।३१।।

छठे से सम मास में अर्थात् ६।८।१० मास हो अथवा साल भर में जो समय नियत हो उस समय बालक का और विषम मास पांचवें मास से (५/७/९) कन्या का नवान्नप्राशन शुभ कहा है।।३१।।

रेवतीद्वितये पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ।
श्रवणादित्रये हस्तत्रितये रोहिणी मृगे ।।
कर्णवेधं तथा पानं क्षुरकर्मान्नभोजनम् ।।३२।।

रेवती, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाति, रोहिणी, मृगशिरा ये नक्षत्र कर्णवेध (कान छेदन) तथा दुग्धपान, मुंडन, नवान्न भोजन में शुभ कहे हैं।।३२।।

पट्टबन्धनचौलान्नप्राशने चोपनायने ।
शुभदं जन्मनक्षत्रमशुभं त्वन्यकर्मणि ।।३३।।

राज्याभिषेक, मुंडन, अन्नप्राशन, उपनयन इन कर्मों में जन्म नक्षत्र शुभफल देने वाला जानना, अन्य कर्म में अशुभ जानना।।३३।।

हित्वा रिक्तां तथा मन्दामष्टमीं द्वादशीं तथा ।
तिथेः क्षयममां वारान् शनिभौमार्कसंज्ञकान् ।।३४।।

रिक्ता (४।९।१४) नन्दा (१।६।११) अष्टमी, द्वादशी, तिथिक्षय, अमावास्या इन तिथियों को और शनि, मंगल और रविवार को त्याग देवे।।३४।।

कर्णवेधमुहूर्त

ज्येष्ठादित्यसमीरणार्कशतभे पुष्ये श्रविष्ठाश्विनी
चित्रावैष्णवमित्रपौष्णमृगभे वारे बुधादित्रये ।
त्र्यायारिः स्वगते खले च शुभदे केन्द्रत्रिकोणे स्थिते
वर्षे वायुजि कर्णवेधनविधिः पक्षे सिते शोभने ।।३५।।
जन्मर्क्षे जन्ममासे च रिक्तापर्वावमेषु च ।
भद्रायामशुभे चन्द्रे न कुर्यात्कर्णवेधनम् ।।३६।।

ज्येष्ठा, पुनर्वसु, स्वाति, हस्त, शतभिषा, पुष्य, धनिष्ठा, अश्विनी, चित्रा, श्रवण, अनुराधा, रेवती, मृगशिरा ये नक्षत्र बुध, गुरु, शुक्र, ये वार और तीसरा, ग्यारहवां, छठा ये घर पापग्रहयुक्त हों और शुभग्रह (पूर्ण चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) केन्द्र (१।४।७।१०) त्रिकोण (५।९) में स्थित हों विषम (१।३।५।) में वर्ष शुक्ल पक्ष में कर्णवेध (बालक का कान छिदवाना) शुभ होता है। जन्म नक्षत्र, जन्ममास, रिक्ता (४।९।१४) तिथि, पर्व, तिथिक्षय, भद्रा नेष्ट चन्द्रमा में कर्णवेध शुभ नहीं जानना।।३५-३६।।

क्षौरकर्म

श्रवणत्रितये हस्तत्रितये रेवतीद्वये ।
ज्येष्ठायां मृगशीर्षे च पुनर्वसुद्वये तथा ।।३७।।
क्षुरकर्म बुधैः प्रोक्तं त्यक्त्वा भौमशनिं रविम् ।
अनुराधामुफां चैव कृत्तिकां रोहिणीं मघाम् ।।३८।।

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य इन नक्षत्रों में पंडितों ने क्षुरकर्म (मुंडन) कहा है, मंगल, शनि, रविवार और अनुराधा उत्तराफाल्गुनी, कृत्तिका, रोहिणी, मघा नक्षत्र त्यागकर मुंडन शुभ कहा है।।३७-३८।।

न जन्ममासे न च जन्मभे तिथौ विधौ विरुद्धे शुभतार-
कासु । युग्माब्दमासे न च कृष्णपक्षे चूडा न कार्या खलु
चैत्रपौषे ।।३९।।

जन्ममास, जन्मनक्षत्र, जन्मतिथि, नेष्ट चन्द्रमा इनको त्याग करे और अशुभ नक्षत्र सम वर्ष महीना न हो, तथा कृष्णपक्ष और चैत्र पौष में चूड़ा कर्म न करे।।३९।।

षष्ठचष्टमी द्वादशी च रिक्तापर्वावमेषु च ।
गलग्रहे च भद्रायां क्षुरकर्म न कारयेत् ।।४०।।

षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, रिक्ता (४।९।१४) पर्व तिथिक्षय, गलग्रह और भद्रा में क्षौर कर्म न करे।।४०।।

अक्षरारंभमुहूर्त

सौम्यायने शुभे मासि स्वाध्यायदिवसे शुभे ।
रवौ जीवे बुधे शुक्रे लग्ने खेटबलान्विते ।।४१।।
रेवतीद्वितये पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ।
आर्द्राख्ये श्रवणे हस्ते स्वातौ चित्राभिधे तथा ।।४२।।

हेरम्बाम्बे च वाग्देवी तथाभ्यर्च्येष्टदेवताः ।
पञ्चमाऽब्दे नरः कुर्याल्लिप्यारम्भो बुधः सदा ।।४३।।

सौम्यायन सूर्य, शुभमास, स्वाध्याय शुभदिवस, रवि, गुरु बुध, शुक्रवार में, लग्न में ग्रह बलवान् हो, रेवती अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, आर्द्रा, श्रवण, हस्त, स्वाति, चित्रा ये नक्षत्र हों गणेश शारदा, सरस्वती, देवी और इष्टदेवता इनका पूजन करके पांचवें वर्ष में पंडित अक्षरारंभ करावे।।४१-४३।।

व्रतबन्धमुहूर्त

आषोडशाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते ।
आद्वाविंशाद्ब्रह्मबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ।।४४।।

सोलह वर्ष तक ब्राह्मण की सावित्री वर्तमान रहती है अर्थात् सोलह वर्ष तक ब्रह्म तेज रहता है तब तक यज्ञोपवीत संस्कार हो जाना उचित है। बाईस वर्ष तक क्षत्रिय का, चौबीस वर्ष तक वैश्य का यज्ञोपवीत हो जाना ठीक है।।४४।।

बटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः ।
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये प्रपूज्योन्यत्र निन्दितः ।।४५।।

ब्रह्मचारी वा कन्या की जन्मराशि से त्रिकोण। ५।९ ग्यारहवें दूसरे, सातवें गुरु शुभ जानना और दशवें छठे तीसरे, जन्म का गुरु पूज्य जानना। अन्य ४।८।१२ गुरु निन्दित जानना।।४५।।

साधारणं च मासेषु माघादिषु च पञ्चसु ।
विनर्तुना वसन्तेन कृष्णपक्षे गलग्रहे ।।४६।।

माघ आदि पांच (माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ) महीने में व्रत बन्धकर्म करे कृष्णपक्ष और गलग्रह तिथि विना वसन्तऋतु के त्याग करै।।४६।।

कृष्णपक्षे चतुर्थी च सप्तम्यादिदिनत्रयम् ।
त्रयोदश्याश्चतुष्कं च अष्टावेते गलग्रहाः ।।४७।।

कृष्णपक्ष में चतुर्थी, सप्तमी आदि तीन तिथि (सप्तमी, अष्टमी, नवमी), त्रयोदशी से चार तिथि (त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावास्या, प्रतिपदा) ये आठ तिथियां गलग्रह हैं।।४७।।

द्वित्र्यैकादशदिक्पंचद्वादशप्रमिते तिथौ ।
अश्विनीमृगचित्रासु हस्ते स्वात्यां च शक्रभे ।।४८।।
पुष्ये च पूर्वाफाल्गुन्यां श्रवणे पौष्णभं तथा ।
वासवे शतातारासु व्रतबन्धः प्रशस्यते ।।४९।।

द्वितीया, तृतीया, एकादशी, दशमी, पञ्चमी, द्वादशी ये तिथि हों और अश्विनी, मृगशिरा, चित्रा, हस्त, स्वाति, ज्येष्ठा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, श्रवण, रेवती, धनिष्ठा, शतभिषा इन नक्षत्रों में व्रतबन्ध शुभ होता है॥४८-४९॥

चैत्रे मासे भास्करे मीनसंस्थे कुर्यान्मौञ्जीबन्धनं ब्राह्मणानाम् । शुक्रस्यास्तं वाक्पतेर्नावलोक्यं नैव ग्राह्या चन्द्रगुर्वोच्चशुद्धिः ॥५०॥ मीनस्थितेऽर्के द्विजपुङ्गवानां व्रतस्य बन्धं खलु मासि चैत्रे । न जीव ॥ दोषोऽब्द-विरुद्धदोषो गलग्रहाऽनध्ययनादिदोषः ॥५१॥

चैत्र मास में सूर्य मीन राशि में स्थित हो तो ब्राह्मणों का मौंजीबन्धन (यज्ञोपवीतकर्म) करे, शुक्र और बृहस्पति के अस्त का दोष न देखे और न चन्द्रमा वा बृहस्पति की शुद्धि का विचार करे। मीन स्थित सूर्य चैत्र मास में श्रेष्ठ द्विजों का व्रत बन्धकर्म करे और गुरुदोष, वर्ष विरुद्धदोष, गलग्रह तिथि व अनध्याय तिथि के दोष पर ध्यान न धरे॥५०-५१॥

विवाहमुहूर्त

गुरुशुद्धवशेन कन्यकानां समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात् । रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणामुभयोश्चन्द्रविशुद्धितो विवाहः ॥५२॥

बृहस्पति के शुद्धिवश से कन्याओं का छः से उपरान्त सम वर्षों में विवाह करे, सूर्य शुद्धि के वश से पुरुषों का विवाह करे और वर कन्या दोनों को चन्द्रमा का बल देखना॥५२॥

रेवत्युत्तररोहिणी मृगमघामूलाऽनुराधाकरस्वातीषु प्रमदातुलामिथुनगो लग्ने विवाहः शुभः । मासाः फाल्गुन-माघमार्गशुचयो ज्येष्ठस्तथा माधवः शस्ताः सौम्यदिने तथैव तिथयो रिक्ता कुहूवर्जिताः ॥५३॥

रेवती, उत्तराफाल्गुनी, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, मूल, अनुराधा, हस्त, स्वाति इन नक्षत्रों में और कन्या, तुला, मिथुन, वृष इन लग्नों में विवाह शुभ होता है तथा फाल्गुन, माघ, मार्गशीर्ष, आषाढ़, ज्येष्ठ, वैशाख इन महीनों में शुभ दिन में शुभ जानना, रिक्ता (४।९।१४) अमावास्या तिथि वर्जित हैं, यहां एक वात लिखना परमावश्यक है कि, उत्तरायण सूर्य अर्थात् मकर से मिथुन की संक्रांति पर्यंत विवाह करे, चैत्रमास अर्थात् मीन की संक्रांति त्याग करे॥५३॥

ज्येष्ठविचार

जन्ममासि न च जन्मभे तिथौ नैव जन्मदिवसेऽपि कारयेत् । आद्यगर्भदुहितुः सुतस्य वा ज्येष्ठमासि न च जातु मंगलम् ।।५४।।

जन्ममास, जन्मनक्षत्र, जन्मतिथि, जन्मवार में आद्य (पहले) गर्भवाले कन्या वा पुत्र का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं करे।।५४।।

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तौ एकज्येष्ठः शुभप्रदः ।
ज्येष्ठत्रयं न कुर्वीत विवाहः सर्वसम्मतः ।।५५।।

दो ज्येष्ठ मध्यम कहे हैं, एक ज्येष्ठ शुभदायक होता है, तीन ज्येष्ठ (वर जेठा, कन्या जेठी, ज्येष्ठ मास) नहीं करे विवाह में यह सबका मत है।।५५।।

अज्येष्ठा कन्यका यत्र ज्येष्ठपुत्रो वरो यदि ।
व्यत्ययो वा तयोस्तत्र ज्येष्ठो मासः शुभप्रदः ।।५६।।

जो कन्या जेठी न हो और वर ज्येष्ठ हो अथवा इससे विपरीत हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह शुभ होता है।।५६।।

अवश्य ज्ञातव्य

दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता ।
तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धे पाणिग्रहो मतः ।।५७।।
द्वादशाऽब्दपरे कन्या षोडशाऽब्दपरे वरे ।
व्ययवेदाष्टमे सूर्ये जीवे चैव न दोषभाक् ।।५८।।

दशवर्ष के अनन्तर कन्या शुद्ध रहित होती है उसका विवाह ताराशुद्धि चन्द्र शुद्धि और लग्नशुद्धि देख के करना योग्य है। बारह वर्ष के उपरांत कन्या और सोलह वर्ष के उपरान्त वर को बारहवें चौथे आठवें सूर्य और कन्या को चौथे आठवें बारहवें गुरु का दोष नही जानना।।५७-५८।।

मङ्गलविचार

लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे ।
पत्नी हन्ति स्वभर्तारं भर्ता भार्यां विनाशयेत् ।।५९।।

लग्न में, बारहवें, चौथे, सातवें, आठवें, मंगल हो तो विवाह ठीक नहीं करना, कन्या के इन स्थानों में मंगल हो तो वर को हनन करे और वर के हो तो भार्या को विनाश करे, दोनों मंगली हो तो ठीक है।।५९।।

भौमपरिहार

जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा ।

नवमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते ॥६०॥
कुजजीवसमायुक्तो युक्तो वा कुजचन्द्रमाः ।
चन्द्रः केन्द्रगतो वापि तस्य दोषो न मङ्गली ॥६१॥
न मङ्गली चन्द्रभृगौ द्वितीये न मङ्गली पश्यति जीव यस्य । न मङ्गली चन्द्रगतश्च केन्द्रे न मङ्गली मङ्गल-राहुयोगे ॥६२॥

सातवें, लग्न में, चौथे, नववें, बारहवें स्थान में शनि हो तो मङ्गल का दोष नहीं जानना। मङ्गल गुरु एक साथ हो अथवा मङ्गल चन्द्रमा का योग हो वा चन्द्रमा केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में हो तो मङ्गली होने का दोष नहीं जानना। चन्द्रमा, शुक्र दूसरे स्थान में हो तो मङ्गली का दोष नहीं जानना, चन्द्रमा केन्द्र (१।४।७।१०) में हो तो मङ्गली का दोष नहीं और मङ्गल राहु का योग हो तो मङ्गली का योग नहीं जानना॥६०-६१॥

वरकन्ययोः प्रीतिविचारः

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।
गणमैत्री भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥६३॥

१ वर्ण, २ वश्य, ३ तारा, ४ योनि, ५ ग्रहमैत्री, ६ गणमैत्री, ७ भकूट (राशि मेलन) ८ नाड़ी ये गुण क्रम से जानना जैसे वर्ण में १ गुण वश्य में २ गुण इत्यादि॥६३॥

वर्णज्ञान

मीनालिकर्कटा विप्रा नृपाः सिंहाजधन्विनः ।
कन्यानक्रवृषा वैश्पाः शूद्रा युग्मतुलाघटाः ॥६४॥

वर्णगुणचक्र

		वरवर्ण			
		ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
व	ब्राह्मण	१	०	०	०
धू	क्षत्रिय	१	१	०	०
व	वैश्य	१	१	१	०
र्ण	शूद्र	१	१	१	१

मीन, वृश्चिक, कर्क राशियां ब्राह्मण हैं; सिंह, मेष, धनु ये क्षत्रिय वर्ण हैं; कन्या, मकर, वृष, ये वैश्यवर्ण हैं, मिथुन, तुला कुंभ ये शूद्र वर्ण हैं; जहां तक हो कन्या उत्तम वर्ण न हो। वर्ण में १ गुण जानना।।६४।।

वश्यविचार

द्वन्द्वचापघटकन्यकातुला मानवा अजवृषौ चतुष्पदौ ।
कर्कमीनमकरा जलोद्भवाः केसरी वनचरालि-
कीटकाः ।।६५।।

मिथुन, धनु, कुंभ, कन्या, तुला ये मानव राशियां हैं, मेष, वृष ये दोनों राशियां चतुष्पद हैं, कर्क, मीन, मकर ये जलचर हैं सिंह वनचर और वृश्चिक कीटराशि है।।६५।।

हित्वा मृगेन्दं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च
भक्ष्याः । सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां
व्यवहारतोऽन्यत् ।।६६।।

मृगेद्र (सिंह) को छोड़ नरराशि के सब वश में हैं, तथा जलचर भक्ष्य हैं और सिंह के वश में वृश्चिक के विना सब वश में हैं अन्यत् मनुष्यों के व्यवहार से वश्यावश्य का विचार कर लेना।।६६।।

वश्यगुण

वैरभक्ष्ये गुणाभावो द्वयोः सौम्यगुणद्वयम् ।
वश्यवैरे गुणश्चैको वश्यभक्ष्ये गुणार्धकम् ।।६७।।

वश्यगुणचक्र

		वर				
		चतुष्पद	मानव	जलचर	वनचर	कीट
	चतुष्पद	२	॥	१	०	२
व	मानव	॥	२	०	०	०
धू	जलचर	१	०	२	२	२
	वनचर	०	०	२	०	०
	कीट	१	०	०	०	२

शत्रु और भक्ष्य में गुण शून्य, एक जाति में गुण २ वश्य और बैर में गुण १, वश्य और भक्ष्य में गुण आधा॥६७॥

ताराबलविचार

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि ।
गणयेन्नवभिः शेषे त्रिष्यद्रिभमसत्स्मृतम् ॥६८॥

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक और वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिने और पृथक् पृथक् नव का भाग देवे शेष ३।५।७ रहे तो अशुभ जानना, जैसे कन्या का नक्षत्र रोहिणी, वर का नक्षत्र श्रवण, रोहिणी से श्रवण तक संख्या १९ में नौ का भाग देने से शेष १ पहला तारा भया और श्रवण से रोहिणी तक संख्या १० में नौका भाग देने से शेष १ पहला तारा वर का भी भया॥६८॥

तारागुण

एकतो लभ्यते तारा शुभा चैवाशुभान्यतः ॥
तदा सार्धो गुणश्चैकस्ताराशुद्धौ मिथस्त्रयः ।
उभयोर्न शुभा तारा तदा शून्यं समादिशेत् ॥६९॥

तारागुणचक्र

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

एक का शुभ एक का अशुभ तारा हो तो डेढ़ गुण और दोनों का एक तारा अथवा

शुभ तारा हो तो गुण ३ और जो दोनों का तारा अशुभ हो तो गुण शून्य जानना।।६९।।

योनिविचार

अश्वः शतभिषाश्विन्यौ रेवती भरणी गजः ।
छागश्च कृत्तिकापुष्यौ नागौ च मृगरोहिणी ।।७०।।
आर्द्रामूलमपि श्वानौ मूषकौ भगपैत्रिकौ ।
मार्जारोदितिराश्लेषा आपो विष्णुश्च मर्कटौ ।।७१।।
अहिर्बुध्न्यार्यमे गावौ मित्रज्येष्ठामृगौ तथा ।
वसुप्रौष्ठपदे सिंहौ हस्तस्वाती च माहिषौ ।।७२।।
विशाखात्वाष्ट्र्व्याघ्राख्यौऽभिजिद्विश्वे च बभ्रुको ।
योनयः कथिता भानां वैरं मैत्रीं विचारयेत् ।।७३।।

अश्विनी शतभिषा अश्वयोनि, रेवती भरणी गजयोनि, कृत्तिका पुष्य छागयोनि, रोहिणी, मृगशिरा सर्पयोनि, आर्द्रा मूल श्वानयोनि, पूर्वाफाल्गुनी मघा मूपकयोनि, पुनर्वसु आश्लेषा मार्जार (बिलाव) योनि, पूर्वाषाढ़ा श्रवण वानरयोनि, उत्तरा उत्तराभाद्रपदा गौयोनि, अनुराधा ज्येष्ठा हिरणयोनि, धनिष्ठा पूर्वाभाद्रपदा सिंहयोनि, हस्त स्वाति महिषयोनि, विशाखा चित्रा व्याघ्रयोनि, अभिजित् उत्तराषाढ़ा नकुलयोनि नक्षत्रों के आश्रय से ये योनि कही हैं वैर और मैत्री का विचार करना।।७०-७३।।

वैरयोनि

गोव्याघ्रं गुजसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च बभ्रूरगं वैरं वानर-
मेषयोश्च सुमहत्तद्वद्बिडालोन्दुरम् । लोकानां व्यवहारतो-
ऽन्यदपि च ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं दम्पत्योर्नृपभृत्ययोरपि
सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः ।।७४।।

गौ और व्याघ्र से वैर, गज और सिंह से वैर, घोड़ा और महिष का वैर कुत्ता और हिरण का वैर, नकुल और सर्प का वैर, वानर और मेष का वैर, बिडाल और मूषक का वैर, मनुष्यों के व्यवहार से भी वैर महावैर को यत्नपूर्वक जानकर स्त्री पुरुष, स्वामी सेवक के नक्षत्र से वैर भाव का विचार करना, शुभाकांक्षी पुरुष वैरयोनि को परित्याग कर देवे।।७४।।

योनिगुण

महावैरे च वैरे च स्वस्वभावे यथाक्रमात् ।

मैत्रे चैवातिमैत्र्ये च खेन्दुद्वित्रिचतुर्गुणा ।।७५।।

महावैर का गुण शून्य, दोनों की शत्रुता का गुण एक, एक स्वभाव के गुण दो, दोनों मित्रता के गुण तीन अतिमित्रता के गण ४ जानना।।७५।।

योनिगुणचक्र

	अ	ग	मे	स	श्वा	मा	मू	गौ	भै	व्या	ह	वा	न	सिं
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज.	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	२	२	०
मेघ	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
स्पर्श	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	३	२	४	०	२	२	२	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	१	२	३	२	३	२	२	४	५	०	३	२	२	१
भैंस	०	२	३	२	२	२	२	३	४	१	२	३	२	२
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	१	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	३	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुन	२	३	३	०	१	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	०	०	३	२	१	२	२	४

पक्षान्तर-राशिस्वामी

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
कन्यामिथुनयोः सौम्यो गुरुस्तु धनमीनयोः ।।७६।।
शनिर्नक्रस्य कुम्भस्य कर्कस्यैव तु चन्द्रमाः ।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकैःक्रमात् ।।७७।।

इन श्लोकों का अर्थ ११ पेज में देख लेना

ग्रहमैत्रीविचार

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवे-

स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः ।
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदा ज्ञोऽरिः सितार्कीं सयौ
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः सपाश्चापरे ।।७८।।
सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्येऽपरे त्वन्यथा
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावारी ।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य त्वन्ये रवेर्ये प्रोक्ताः
सुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेऽमी मया कीर्तिताः ।।७९।।

इन दोनों श्लोकों का अर्थ ग्रहमैत्री चक्र से जान लेना।।७८-७९।।

ग्रहमैत्रीचक्रम्

ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
मित्र	चंबृमं	सूबु	सूचंबृ	सुशु	सूचंमं	बुश	बुश
सम	बु	मंबृ शुशु	शुश	मंबुश	श	मंबृ	बृ
शत्रु	शुश	०	बु	चन्द्र	बुशु	सूचं	सूचंमं

ग्रहमैत्रीगुणचक्र

		वर						
		सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
वधू	सू.	५	५	५	३	५	०	०
	चं.	५	५	४	१	४	।।	।।
	मं.	५	४	५	।।	५	३	।।
	बु.	३	१	।।	५	।।	५	४
	बृ.	३	४	५	।।	५	।।	३
	शु.	५	।।	३	५	।।	५	५
	श.	५	।।	।।	४	३	५	५

मैत्रीगुण

वर कन्या दोनों का स्वामी एक हो तो मैत्री के गुण पांच जानना, समशत्रुत्व का गुण आधा जानना, शत्रुत्व मित्रत्व का गुण १, सम, मित्रत्व के गुण ४ जानना, समत्व समत्व के गुण २ शत्रुत्व शत्रुत्व का गुण शून्य, इस प्रकार ग्रहमैत्री के गुण अनुमान कर लेना योग्य है।।७९।।

गणमैत्री

अनुराधा मृगाश्विस्तु श्रवणोऽदितिपुष्यके ।
स्वाती हस्तो रेवती च नव देवगणाः स्मृताः ।।८०।।
पूर्वात्रयं रोहिणी च उत्तरात्रयमेव च ।
आर्द्रा तु भरणी चैव नवैते मानुषा गणाः ।।८१।।
आश्लेषा शतभं मूलं विशाखा कृत्तिका मघा ।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च नवैते राक्षसा गणाः ।।८२।।

अनुराधा, मृगशिरा, अश्विनी, श्रवण, पुनर्वसु, पुष्य, स्वाति, हस्त, रेवती ये नव नक्षत्र देवतागण कहे हैं। तीनों पूर्वा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, आर्द्रा भरणी ये नव नक्षत्र मनुष्यगण हैं। आश्लेषा, शतभिषा, मूल, विशाखा, कृत्तिका, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा ये नव नक्षत्र राक्षसगण हैं।।८०-८२।।

गणगुण

दोनो का गण एक हो तो ६ गुण, वर देवतागण हो वधू मनुष्य गण हो तो गुण ६, इससे विपरीत हो अर्थात् वर मनुष्यगण हो और वधू देवतागण हो तो गुण ५, वर राक्षसगण हो और वधू देवता गण हो तो गुण १, अन्यथा शून्य जानना।।

गणगुणचक्र

		वर		
		देव	मनुष्य	राक्षस
वधू	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	६	०	०

भकूटविचार

चतुर्थदशमे मित्रं तृतीयैकादशः शुभः ।

उभयोः सप्तमः साम्यमेकर्क्षं शुभमुच्यते ॥८३॥
षष्ठाष्टके भवेन्मृत्युर्नवमे पञ्चमे कलिः ।
द्विर्द्वादश च दारिद्र्यं कन्यर्क्षाद्‌गण्यते क्रमात् ॥८४॥

कन्या की राशि से चौथी राशि वर की हो और वर से दशवीं कन्या की राशि हो तो मित्रता जानना, एवं तीसरी ग्यारहवीं राशि हो तो शुभ जानना, दोनों की सातवीं दो राशि हो तो सम जानना एक राशि दोनों की हो तो भी शुभ जानना, छठी आठवी राशि मृत्युकारक जानना, नववीं पांचवीं राशि कलहकारक जानना, दूसरी बारहवीं राशि दारिद्यकारक जानना, कन्या की राशि से वर की राशि तक क्रम क्रम से गिने॥८३-८४॥

इसको स्पष्टरीति से कहते हैं

विषमात्कन्यकाराशेः षष्ठं षष्ठाष्टकं त्यजेत् ।
समात् षष्ठं शुभं ज्ञेयं विपरीतं न शोभनम् ॥८५॥

कन्या की राशि विषम हो और कन्या की राशि से छठी राशि वर की हो तो ऐसा षडष्टक त्याग करे, तथा कन्या की राशि सम हो और कन्या की राशि से छठी राशि वर की हो तो ऐसा षडष्टक शुभ होता है, इससे विपरीत शुभ नहीं जानना॥८५॥

मृत्युषडष्टक

कन्यामेषौ वृषचापौ कामाली घटकर्कटे ।
मृगसिंहे तुलामीने त्यजेन्मृत्युषडष्टकम् ॥८६॥

कन्या, मेष, वृष, धनु, मिथुन, वृश्चिक, कुंभ, कर्क, मकर, सिंह तथा तुला, मीन इन राशियों को मृत्युषडष्टक कहा है सो त्याग करे॥८६॥

प्रीतिषडष्टक

मेषाली मकरे युग्मे कन्याकुंभौ तुलावृषौ ।
सिंहे मीने धनुः कर्के षट्काष्टं प्रीतिवर्द्धकम् ॥८७॥

मेष वृश्चिक, मकर मिथुन, कन्या, कुंभ, तुला, वृष, सिंह मीन और धनु कर्क इन राशियों से जो षडष्टक है सो प्रीति को बढ़ाने वाला प्रीतिषडष्टक कहना॥८७॥

वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः ।
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ॥८८॥

वर से पांचवें कन्या और कन्या से नववें वर की राशि हो तो ऐसा नवपंचक ग्रहण करे यह पुत्र पौत्र के सुख को देने वाला है॥८८॥

भकूटगुण

राशि एक भिन्न चरण वा भिन्न नक्षत्र इनके गुण ७, तृतीय एकादश इनके और भिन्न राशि नक्षत्र एक इनके गुण ५, प्रीतिषडष्टक अथवा द्विर्द्वादश वा नवपंचक इनमें वरदूरत्व योनि शत्रुता होने पर भी भकूट के गुण ६ होते हैं। वरयोनि मैत्र व स्त्रीदूरत्व हो तो षडष्टक द्विर्द्वादश नवपंचमादि दुष्टकूटों के गुण ४ जानना। योनिमैत्र व स्त्रीदूरत्व इनमें से एक हो तो दुष्टकूट का एक गुण जानिये और एक नक्षत्र वा एक चरण हो तो ७ गुण जानना।।

नाड़ीविचार

अश्विन्यार्द्रा शतभिषक् ज्येष्ठा हस्तः पुनर्वसुः ।
पूर्वाभाद्रपदा मूलं चोत्तरा त्वाद्यनाडिका ।।८९।।

अश्विनी, आर्द्रा, शतभिषा ज्येष्ठा, हस्त, पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपदा, मूल, उत्तराफाल्गुनी ये नव नक्षत्र आद्यनाड़ी कहे हैं।।८९।।

पूर्वाषाढाऽनुराधा च धनिष्ठाभरणीमृगाः ।
पूर्वाफाल्गुनिका चित्रा पुष्योभा मध्यनाडिकाः ।।९०।।

पूर्वाषाढ़ा, अनुराधा, धनिष्ठा, भरणी, मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी चित्रा, पुष्य, उत्तराभाद्रपदा ये नव नक्षत्र मध्यनाड़ी कहे हैं।।९०।।

कृत्तिका रोहिणी स्वाती मघाश्लेषा च रेवती ।
श्रवणश्चोत्तराषाढा विशाखा त्वन्त्यनाडिकाः ।।९१।।

कृत्तिका, रोहिणी, स्वाती, मघा, आश्लेषा, रेवती, श्रवण, उत्तराषाढ़ा, विशाखा ये नव नक्षत्र अन्त्यनाड़ी कहे हैं।।९१।।

नाड़ीफल

अग्रनाडीव्यधे भर्ता मध्यनाडीव्यधे द्वयम् ।
पृष्ठनाडीव्यधे कन्या म्रियते नात्र संशयः ।।९२।।

स्त्री पुरुष की अग्र (आद्य) नाड़ी (व्यध) हों तो भर्ता को, दोनों की मध्यनाड़ी हो तो दोनों को और अन्त्यनाड़ी हो तो कन्या को, मृत्युदायक होती है।।९२।।

कन्यर्क्षाद्वरनक्षत्रमशुभं निकटे यदि ।
वरर्क्षाद्दूरगं त्र्यर्क्षं देवर्क्षैक्ये शुभं भवेत् ।।९३।।

कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र निकट हो तो अशुभ और वरनक्षत्र से कन्या का नक्षत्र दूर हो अथवा नक्षत्र एक हो वा दोनों की राशि का स्वामी एक हो तो शुभ फल जानना।।९३।।

राश्यैक्यै चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशि-युग्मं

तथैव। नाडीदोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥९४॥

वर की और कन्या की राशि एक हो और नक्षत्र पृथक् हो एवं नक्षत्र एक हो राशि पृथक् हो तो नाड़ी और गुणों का दोष नहीं होता तथा नक्षत्र एक हो और चरणभेद हो तो शुभ जानना, नाड़ी के गुण कहते हैं-एक नाड़ी हो तो गुण शून्य० और पृथक् २ नाड़ी हो तो गुण ८ जानना और परिहार से नाड़ी दोप रहित हो तो गुण ८ जानना॥९४॥

वर्गविचार

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम्।
सर्पाखुमृगावीनां निंजपञ्चमवैरिणामष्टो ॥९५॥

अ इ उ ए ओ इन पांच अक्षरों के नाम वाले का गरुड़वर्ग इत्यादि चक्र में जानना। अपने वर्ग से पांचवां वर्ग शत्रु जानना॥९५॥

वर्गचक्र

गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष
अ	क	च	ट	त	प	य	श
इ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
उ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स
ए	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	०	०

स्ववर्गे परमा प्रीतिर्मित्रे प्रीतिश्च कथ्यते।
उंदासीने प्रीतिरल्पा शत्रुवर्गे मृतिस्तथा ॥९६॥

वर कन्या का वर्ग एक हो तो परम प्रीति कहना, दोनों मित्र हों तो समान प्रीति कहना और उदासीन हों तो थोड़ी प्रीति कहना, शत्रुवर्ग हो तो मृत्यु कहना॥९६॥

न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके च। ताराविरुद्धे नवपञ्चमस्य मैत्री यदा स्याच्छुभदो विवाहः ॥९७॥

वर्ग, वर्ण, गण, योनि, द्विर्द्वादश, षडष्टक, ताराविरुद्ध, नवपञ्चक ये सब दोषयुक्त हो और मैत्री बनती हो तो विवाह शुभ होता है।।९७।। इस प्रकार वर कन्या की प्रीति का विचार भली भांति कर लेना और वर्ण से नाडीपर्यन्त ३६ गुण कहे हैं उन गुणों को देखना।।९७।।

गुणैः षोडशभिर्निन्द्या मध्यमा विंशतिस्तथा ।
श्रेष्ठं त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम् ।
सद्भकूट इति ज्ञेयं दुष्टकूटेऽथ कथ्यते ।।९८।।

सोलह गुण हों तो निन्दित और वीस गुण हों तो मध्यम तथा तीस गुण हों तो श्रेष्ठ तीस गुण से अधिक हों तो उत्तमोत्तम प्रीति जानना, सद्भकूट में यह गुण जानना, दुष्ट कूटके गुण आगे कहते हैं।।९८।।

निन्द्यगुणैर्विंशतिर्भिर्मध्यं बाणाधिकैर्मतम् ।
तत्परैः पञ्चभिः श्रेष्ठं ततः श्रेष्ठतरं गुणैः ।।९९।।
तथा च-एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात् ।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके ।।

वीस गुण हो तो निन्दित, पचीस तक मध्यम तीस तक श्रेष्ठ तीस से अधिक अतिश्रेष्ठ प्रीति जानना।।९९।।

नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु क्षत्रियः ।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान् ।।१००।।

ब्राह्मणों को नाड़ी का दोष, क्षत्रियों को वर्ण दोष, वैश्यों को गण दोष तथा शूद्रों को योनि दोष अवश्य विचारना योग्य है।।१००।।

गणदोषो योनिदोषो वर्णदोषः षडष्टकम् ।
चत्वारो नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत् ।।१।।

गणदोष, योनिदोष, वर्णदोष, षडष्टक ये चारों दोष अरिष्टता नहीं करते हैं जो राशि मैत्री शुभ बनती हो।।१।।

मत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापि स्याद्गुणानां न दोषः ।
खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटं प्रीतिश्चापि दुष्ट भकूटम् ।।२।।

वर कन्या के राशि स्वामियों में मित्रता होवे, अथवा राशि नवांश स्वामियों में मित्रता होवे तो गणों का दोष दूर हो जाता है और जो शत्रुता होवे तो सद्भकूट को नाश करे है तथा जो राशि स्वामि ग्रहों की प्रीति होवे तो दुष्टभकूट होने से भी शुभ कहना।।२।।

षडष्टके गोमिथुनं प्रदद्यात् कांस्यं सरूप्यं नव पञ्चमे च ।
नाड्यां सुधेन्वन्नसुवर्णवस्त्रं द्विर्द्वादशे ब्राह्मण-
तर्पणं च ।।३।।

षडष्टक दोष शांति निमित्त वत्ससमेत गोदान देवे, नवपञ्चक दोष शांति निमित्त चांदी समेत कांस्यपात्र प्रदान करे, नाड़ी दोष दूर करने के निमित्त विधिपूर्वक गोदान, अन्नदान, सुवर्ण और वस्त्रदान देवे, द्विर्द्वादश दोष शान्त्यर्थ ब्राह्मण को दान आदि से तृप्त करे।।३।।

निधनं मध्यनाड्यां तु दम्पत्योर्नैव पार्श्वयोः ।
करग्रहे पृष्ठनाड्यो न निन्द्ये इति तद्वचः ।।४।।

मध्यनाड़ी वध मृत्युपद होता है एवं पार्श्वनाड़ी वर कन्या की हो तो निन्दित नहीं जानना, विवाह में पार्श्वनाड़ी (आदि और अंत की) निन्दित नहीं कही है, परंतु यह परिहार क्षत्रियादिकों के विवाह में ग्रहण करना योग्य है।।४।।

कर्तरीदोषविचार

लग्नाच्चन्द्राद्व्ययार्थस्थौ पापखेटो यदा तदा ।
कर्तरी वर्जनीया सोद्वाहोपनयनादिषु ।।५।।
नहि कर्तरिजो दोषः सौम्ययोर्यदि जायते ।
शुभग्रहयुतं लग्नं क्रूरयोर्नास्ति कर्तरी ।।६।।

लग्न वा चन्द्रमा से बारहवे और दूसरे स्थान में पाप ग्रह जो, स्थित हों तो कर्तरी दोष विवाह उपनयन आदि शुभ कामों में वर्जित हैं। यदि शुभ ग्रहों से कर्तरी योग हो तो दोष नहीं जानना, शुभ ग्रह लग्न में हो तो क्रूर ग्रहों की कर्तरी भी दूषित नहीं जानना।।५-६।।

गुरुबलविचार

जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदो गुरुः ।
विवाहे च चतुर्थाष्टद्वादशस्थो मृतिप्रद ।।७।।

जो बृहस्पति १।३।१०।६ में स्थित हो तो पूज्य (दान योग्य) जानना अर्थात् दान करके शुभ फल देने योग्य होवे है और ४।८।१२ में स्थित गुरु विवाह में मृत्युप्रद होवे है।।७।।

नष्टात्मजा धनवती विधवा कुशीला पुत्रान्विता परस्ता
सुभगा विपुत्रा । स्वामिप्रिया विगतकोशगमा धनाढ्या
वन्ध्या भवेत्सुरगुरौ क्रमशो विवाहे ।।८।।

जो बृहस्पति पहला हो तो पुत्रों को नष्ट करे अर्थात् पहले बृहस्पति में जो कन्या का विवाह हो तो वह कन्या नष्टपुत्रों वाली होवे, दूसरा बृहस्पति हो तो धनवती होवे, तीसरा हो तो विधवा हो, चौथा हो तो कुशीला हो जावे, पांचवां हो तो पुत्रवती होवे, छठा हो तो परपुरुष गामिनी होवे, सातवां हो तो सौभाग्यवती होवे, आठवां हो तो पुत्रहीन होवे, नववां हो तो अपने पति की प्यारी होवे, दशवां हो तो धनहीन होवे, ग्यारहवां हो तो धनवती होवे और बारहवां हो तो बांझ होवे विवाह में इस प्रकार क्रम से बृहस्पति का फल कहा है।।८।।

गुरौ सिंहगते कार्यो न विवाहः कदाचन ।
मेषस्थिते दिवानाथे सिंहस्थोऽपि शुभप्रदः ।।९।।

सिंह का बृहस्पति हो तो विवाह न करे, मेष राशि के सूर्य से सिंहस्थ बृहस्पति भी शुभप्रद होवे है।।९।।

सूर्यबलविचार

एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेऽपि वा ।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ।।१०।।
जन्मन्यथ द्वितीयो वा पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।
नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ।।११।।
अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ।
विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ।।१२।।

जो सूर्य वर को ११।३।६।१० हों तो विवाह में शुभफल दायक जानना। और जो सूर्य १।२।५।७ हो तो विवाह में पूजा करने के योग्य जानना। और जो ४।८।१२ सूर्य हो तो विवाहित वर की मृत्यु को करे है इसमें संदेह नहीं जानना।।१०-१२।।

गर्गो मुनिश्चाथ वसिष्ठकश्यपौ पाराशराद्या मुनयो वदन्ति । द्वितीयपुत्राम्बुगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात् परतः शुभावहः ।।१३।।

विवाह में वर को २।५।४ सूर्य हो तो तेरह दिन के उपरांत शुभ जानना ऐसा गर्ग, वसिष्ठ, कश्यप पारासर आदि मुनि कहते हैं।।१३।।

मासान्तादि

मासान्ते दिनमेकं तु तिथ्यन्ते घटिकाद्वयम् ।
घटिकात्रितयं भान्ते विवाहे परिवर्जयेत् ।।१४।।

संक्रांन्ति के अंत का १ दिन, तिथि के अंत की २ घड़ी, नक्षत्र के अंत की ३ घड़ी विवाह में वर्जित हैं।।१४।।

शनैश्चरदिने चैव यदि रिक्ता तिथिर्भवेत् ।
तस्मिन्विवाहिता कन्या पतिसन्तानवर्धिनी ।।१५।।

यदि शनिवार को रिक्ता ४।९।१४ तिथि हो और कन्या विवाहिता हो तो वह कन्या पति संतान के वृद्धि करने वाली जानना अर्थात् पति को शुभ तथा अधिक संतान वाली होवे।।१५।।

भामिनीजन्मनक्षत्राद्द्वितीयं पतिजन्मभम् ।
न शुभं भर्तृनाशाय कथितं ब्रह्मयामले ।।१६।।

स्त्री के जन्मनक्षत्र से दूसरा नक्षत्र पति का जन्मनक्षत्र हो तो शुभ नहीं जानना, भर्ता को नाश करे है ऐसा ब्रह्मयामल में कहा है।।१६।।

दश महादोषविचार

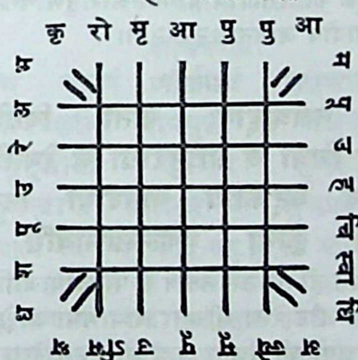
लत्तापातो युतिर्वेधो यामित्रं बुधपञ्चकम् ।
एकार्गलोपग्रहौ च क्रान्तिसाम्यं ततः परम् ।।१७।।
दग्धा तिथिश्च विज्ञेया दश दोषा महाबलाः ।
एतान्दोषान्परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ।।१८।।

१ लत्ता, २ पात, ३ युति, ४ वेध, ५ यामित्र, ६ बुधपञ्चक, ७ एकार्गल, ८ उपग्रह, ९ क्रांतिसाम्य, १० दग्धा तिथि ये दश दोष महाबलवान् जानिये इन दोषों को त्यागकर विवाह लग्न पंडित संशोधन करे।।१७-१८।।

पंचशलाकाचक्र

पञ्चोर्ध्वाःस्थापयेद्रेखाः पञ्च तिर्यङ्मुखास्तथा ।
द्वयोश्च कोणयोर्द्वंद्वे चक्रं पञ्चशलाककम् ।।१९।।

विवाहपञ्चशलाकाचक्र



ईशाने कृतिका देया क्रमादन्यानि भानि तु ।
ग्रहास्तेषु प्रदातव्या ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ।।२०।।
लग्नस्य निकटे या च गता भवति पूर्णिमा ।
तन्नक्षत्रे स्थितश्चन्द्रो दातव्यो गणकोत्तमैः ।।२१।।

पांच रेखा खड़ी खींचे तथा पांच तिरछी खींचे, दो दो रेखा कोणों पर खीचे यह पंचशलाका चक्र कहा है। ईशान में कृत्तिका नक्षत्र स्थापित करे, अन्य नक्षत्र क्रम से लिखे, जो ग्रह जिस नक्षत्र पर हो उसी नक्षत्र पर लिखें। और लग्न के निकट जो पूर्णमासी हो उस दिन के नक्षत्र पर चन्द्रमा धरे उत्तम पंडितों ने ऐसा कहा है।।१९-२१।।

नक्षत्रं द्वादशं भानुस्तृतीयं लत्तया कुजः ।
षष्ठं जीवोऽष्टमं मन्दो हन्ति दक्षिणतः सदा ।।२२।।
वामेन सप्तमश्चान्द्रिर्नवमं सिंहिकासुतः ।।
हन्ति भं पंचमं शुक्रो द्वाविंशं पूर्णचन्द्रमाः ।।२३।।

विवाहनक्षत्र से बारहवें नक्षत्र पर सूर्य हो तो सूर्य का लत्तादोष जानना, तीसरे नक्षत्र पर मंगल हो तो मंगल का लत्तादोष जानना, छठे नक्षत्र पर बृहस्पति का हो तो बृहस्पति का लत्तादोष जानना। आठवें नक्षत्र पर शनि हो तो शनि का लत्तादोष जानना ये सदा दक्षिण मार्ग अर्थात् आगे के नक्षत्रों पर स्थित होने से लत्तादोष करते हैं। बुध सातवें नक्षत्र पिछले पर स्थित हो तो बुध का लत्तादोष जानना, विवाह नक्षत्र से पीछे नवें नक्षत्र पर राहु स्थित हो तो राहु का लत्तादोष जानना, पांचवें नक्षत्र पर शुक्र हो तो शुक्र का लत्तादोष जानना और पूर्ण चन्द्रमा बाईसवें नक्षत्र पर हो तो चन्द्रमा का लत्तादोष जानना।।२२-२३।।

पातदोष

सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्राद्दोषः पातो विधीयते ।
मघा आश्लेषा चित्रा च साऽनुराधा च रेवती ।।२४।।
श्रवणोऽपि च षट्कोऽयं पातदोषो निगद्यते ।
अश्विनीमवधिं कृत्वा गणेल्लग्नभावधि ।।२५।।

सूर्य जिस नक्षत्र पर स्थित हो तो उस नक्षत्र से पातदोष जानिये सो इस प्रकार की सूर्य नक्षत्र से गणना करे और रेखा खींचता जाय मघा आश्लेषा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, श्रवण इन छः नक्षत्रों की गणना जहां आवे उस रेखा को तिरछी लिखे ऐसे

अट्ठाईसों नक्षत्रों की रेखा लिखकर अश्विनी से लग्न के नक्षत्र तक गिने जो पातदोष वाले नक्षत्र पर लग्न का नक्षत्र हो तो उसी नक्षत्र का पातदोष जानना।।२४-२५।।

युतिदोष

यत्र राशौ भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत् ।
युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभाः ।।२६।।

जिस राशि का चन्द्रमा होवे उस राशि पर कोई और ग्रह स्थित होवे तो युतिदोष जानना, परंतु बिना शुक्र के अन्य कोई भी पाप ग्रह वा शुभग्रह होवे तो युतिदोष होता है।।२६।।

वेधविचार

एकरेखास्थितिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ।
विवाहे तत्र मासे तु न जीवति कदाचन ।।२७।।

एक रेखा में सूर्य आदि ग्रहों करके वेद होता है, जैसे मृगशिरा की लग्न है तो मृगशिरा की रेखा पंचशलाका चक्र में देखो कि, मृगशिरा का उत्तराषाढ़ा से वेध है तो उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का सूर्य आदि कोई ग्रह होगा तो उसी ग्रह का वेध जानना, वेध में विवाह हो तो एक मास तक कदापि न जीवे ऐसा कहा है।।२७।।

वेधपरिहार

लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजाङ्गले ।
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ।।२८।।

लत्तादोष, मालवदेश में विचारे, पातदोष कुरुजांगल देश में, एकार्गल दोष काश्मीर देश में और वेध सर्वत्र विचारे ऐसा कहा है।।२८।।

यामित्रदोष

चतुर्दशं च नक्षत्रं यामित्रं लग्नभात्स्मृतम् ।
शुभयुक्तं तदिच्छन्ति पापयुक्तं च वर्जयेत् ।।२९।।
चन्द्रश्चान्द्रिर्भृगुर्जीवो यामित्रे शुभकारकाः ।
स्वर्भानुर्भानुमन्दारा यामित्रे न शुभप्रदाः ।।३०।।

लग्न के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो यामित्र जानिये शुभ ग्रह का यामित्र होने से विवाह हो जाने की इच्छा आचार्य करते हैं, परंतु पाप ग्रह का यामित्र वर्जित है सो त्याग करे। चन्द्र, बुध, शुक्र, इनका यामित्र शुभकारक है और राहु, सूर्य, शनि मंगल इनका यामित्र शुभ नहीं जानिये।।२९-३०।।

पञ्चकविचार

धार्या तिथि १५ र्मास १२ दशा १० ष्ट ८ वेदाः ४ संक्रान्तितो यातदिनैश्च योज्याः । ग्रहेर्विभक्ता यदि पंचशेषे रोगस्तथाग्निर्नृपचौरमृत्युः ।।३१।। व्रते रोगः पथे चौरः सेवायां राजपञ्चकम् । गृहे त्वग्निपरित्याज्यं विवाहे मृत्युपञ्चकम् ।।३२।।

१५।१२।१०।८।४ ये अंक धरे और संक्रांति के दिन से जितने दिन गये हों अर्थात् जितने अंश सूर्य संक्रांति के गत हों उतनी संख्या में पूर्वोक्त अंक संयुतकर देवे और नव का भाग देवे जो पांच शेष रहें तो पंचक जानना, संक्रांति के अंश में १५ जोड़कर नव का भाग देने से जो पांच शेष रहे तो रोग पंचक, १२ जोड़ने से नव का भाग देके ५ शेष रहने पर अग्निपंचक, १० जोड़कर नव का भाग दे पांच शेष रहने पर राजपञ्चक, ८ जोड़ ९ का भाग दे ५ शेष रहने पर चौरपञ्चक और ४ जोड़कर ९ का भाग दे ५ शेष रहने पर मृत्युपंचक जानिये। व्रतबन्धन में रोगपंचक, यात्रा में चौरपंचक, सेवाकर्म में राजपंचक, घर छावने बनाने में अग्निपंचक और विवाह में मृत्युपंचक वर्जित है सो जानने।।३१-३२।।

एकार्गलविचार

योगाङ्के विषमे चैको देयोऽष्टाविंशतिः समे । अर्द्धं कृत्वाऽश्विनीपूर्वमङ्कभं मूर्ध्नि दीयते ।।३३।। त्रयोदश तिरोरेखा एकोर्ध्वा मूर्ध्नि विस्तृता । योगाङ्के प्राप्तनक्षत्रे ज्ञेयमेकार्गलं बुधैः ।।३४।। सूर्यचन्द्रमसोर्योगे भवेदेकार्गलस्तदा ।।३५।।

विवाह के दिन जो योग हो वह योग यदि विषम हो तो एक जोड़े और सम हो तो अट्ठाईश जोड़े जैसे विष्कम्भ विषम, प्रीति सम, आयुष्मान् विषम, सौभाग्य सम इत्यादि। योगांक विषम में १ सम में २८ जोड़ आधा करके जो अंक हो उसी अंक संख्या को नक्षत्र अश्विनी से गिनकर एकार्गल चक्र तेरह रेखा तिरछी एक खड़ी रेखा वाला है उस चक्र के शिर पर रक्खे। सूर्य जिस नक्षत्र पर हो वहां सूर्य और विवाह नक्षत्र पर चन्द्रमा धरे, यदि सूर्य चन्द्रमा एक रेखा पर आमने सामने होवे तो एकार्गल वेध जानना।।३३-३५।।

एकार्गचक्र

रे—	अ
उ—	—भ
पू—	—कृ
श—	—रो
ध—	—आ
श्र—	—पु
उ—	—पु
पू—	—ऽश्ले
मू—	—म
ज्ये—	—पू
ऽनु—	—उ
वि—	—ह
स्वा—	—चि

उपग्रहविचार

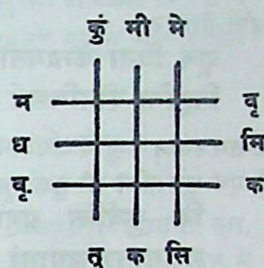
शराष्टदिक्शक्रनगातिधृत्यस्तिथिधृतिश्च प्रकृतेश्च पञ्च ।
उपग्रहाः सूर्यभतोऽब्जताराः शुभा न देशे कुरुबा-
ह्लिकानाम् ॥३५॥

सूर्य स्थित नक्षत्र से विवाह नक्षत्र तक गिने यदि विवाह नक्षत्र संख्या ५।८।१०।१४।७।१९।१५।१८।२१।२२।२३।२४।२५। हो तो उपग्रह दोष होता है सो कुरु और बाह्लिकदेश में शुभ नहीं जानना।।३६।।

क्रांतिसाम्यविचार

ऊर्ध्वास्तिस्त्रस्तिरस्तिस्त्रो मध्ये मीनं लिखेद्बुधः ।
सूर्यचन्द्रमसोर्दृष्टौ क्रान्तिसाम्यं निगद्यते ॥३७॥

तीन रेखा खड़ी तीन तिरछी लिखकर बीच रेखा पर मीन लिखे फिर पंडितजन इस प्रकार विचारे कि, सूर्य जिस राशि पर हो वहां सूर्य लिखे और चन्द्रमा अपनी राशि पर कि, जिस दिन विवाह हो, यदि सूर्य चन्द्रमा एक रेखा पर आमने सामने हों तो क्रांतिसाम्य दोष जानिये।।३७।।



दग्धातिथि

मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।
मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायुग्मेषु चाष्टमी ॥३८॥
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥३९॥

मीन और धन के सूर्य विवाह समय हो तो द्वितीया दग्धा तिथि जाननी, वृष कुम्भ के सूर्य हो तो चतुर्थी, मेष, कर्क के सूर्य हो तो षष्टी, कन्या मिथुन में अष्टमी, वृश्चिक सिंह में दशमी और मकर तुला में द्वादशी ये दग्ध तिथियां शुभ कर्म में वर्जित हैं, ये दश महादोष लिखे हैं।।३८-३९।।

विवाहलग्नशोधन

त्याज्या लग्ने व्यये मन्दः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः ।
रन्ध्रे चन्द्रादयः पञ्च सर्वेऽस्तेऽब्जगुरू समौ ॥४०॥

लग्न में और बारहवें शनि त्याग करे, छठे घर में शुक्र चन्द्रमा और विवाह लग्न स्वामी न हों, आठवें चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र न हों, सातवें कोई ग्रह न हो परंतु चन्द्रमा, बृहस्पति सातवें हो तो सम जानना।।४०।।

कर्कलग्नेऽथवा मेषे घटांशो यदि जायते ।
तुलायां मकरे चन्द्रे वैधव्यं जायते ध्रुवम् ।।४१।।

कर्क अथवा मेषलग्न में जो तुला का नवांश हो और तुला व मकर का चन्द्रमा हो तो निश्चय वैधव्य योग होता है।।४१।।

केन्द्रे सप्तमहीने च द्वित्रिकोणे शुभाः शुभाः ।
तृतीयैकादशे सर्वे पापाः षष्ठे च शोभनाः ।।४२।।

सप्तम स्थान रहित केन्द्र (१।४।७।१०) और दूसरे व त्रिकोण (२।५।९) में शुभ ग्रह शुभ होते हैं और तीसरे ग्यारहवें सब ग्रह शुभ होते हैं तथा पाप ग्रह छठे शुभ होते हैं।।४२।।

द्यूनं विना केन्द्रगतोऽमरेज्यस्त्रिकोणगो वापि हि लक्षमेकम् ।
निहन्ति दोषत्रिशतं भृगुश्च शतं बुधो वापि हि दृश्यमूर्तिः ।।४३।।

सप्तम स्थान केन्द्र में अथवा त्रिकोण में बृहस्पति हो तो एक लक्षदोषों को नाश करे हैं एवं शुक्र तीन सौ बुध एक सौ दो दोषों को नाश करे है।।४३।।

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
मत्तमातङ्गयूथानां शतं हन्ति च केसरी ।।४४।।

जिसके विवाह लग्न में बृहस्पति केन्द्र (१।४।७।१०) में हो तो अन्य ग्रह क्या कर सकते हैं? जैसे मत्त हाथियों के सैकड़ों यूथ को सिंह विनष्ट करता है तैसे ही केन्द्रगत गुरु सब दोषों को दूर करता है।।४४।।

द्विरागमनमुहूर्त

चरेदथौजहायने घटालिमेषगे रवौ रवीज्यशुद्धियोगतः
शुभप्रदस्य वासरे । नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके
द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽस्रपो मृदूडुभिः ।।४५।।

विवाह से विषम १।३।५।७ वर्ष हो और कुंभ, वृश्चिक, मेष के सूर्य हो और सूर्य, गुरु शुद्ध हो, शुभ हो, मिथुन, मीन, कन्या, तुला, वृष लग्न हो, लघु (हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्), ध्रुव (तीनों उत्तरा, रोहिणी), चर (स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शततारका), मूल, मृदु (मृग, रेवती, चित्रा, अनुराधा) इन नक्षत्रों में द्विरागमन (गौने) का मूहूर्त शुभ कहा है।।४५।।

सार्धाष्टमासे भृगुजश्च पूर्वे ततो धनेशे स्थितपञ्चपक्षः ।
ततः प्रतीच्यां नवमांशभुक्तमेकादशाहास्तमुदेति
पूर्वे ।।४६।।

साढ़े आठ महीने शुक्र पूर्व में उदय रहकर पांच पक्ष अर्थात् ढ़ाई महीनों तक अस्त रहता है, फिर पश्चिम में उदय होकर नव महीने उदय रहकर ग्यारह दिन अस्त रहता है, अनन्तर पूर्व में उदय होता है। द्विरागमन (गौने) में शुक्र का उदय होना परमावश्यक है परंतु सन्मुख और दाहिने न हो, बायें और पीछे शुभ कहा है। यदि लड़का लड़की सुयोग्य हों और गौना लेने की आवश्यकता हो तो नीचे लिखे अनुसार सन्मुख और दाहिने शुक्र का दोष नहीं जानना।।४६।।

रेवत्यादिमृगान्ते च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखो दक्षिणः शुभः ।।४७।।

रेवती से मृगशिरा तक स्थित चन्द्रमा में शुक्र अन्धा मानकर सन्मुख और दाहिने शुभ जाने और द्विरागमन कार्य करे।।४७।।

वधूप्रवेशमुहूर्त

हस्तत्रये ब्रह्मयुगे मघायां पुष्ये धनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु ।
मूलाऽनुराधाहयरेवतीषु स्थिरेषु लग्नेषु वधूप्रवेशः ।।४८।।

हस्त, चित्रा, स्वाती, रोहिणी, मृग, मघा, पुष्य, धनिष्ठा, श्रवण, तीनों उत्तरा, मूल, अनुराधा, अश्विनी, रेवती, इन नक्षत्रों और स्थित लग्न वृष सिंह, वृश्चिक, कुंभ में वधूप्रवेश शुभ जानना।।४८।।

सूर्ये रोगः कुजे मृत्युर्वैधव्यं च बुधे मृत्ता ।
जीवशुक्रार्किचन्द्रेषु प्रवेशे सम्पदे वधूः ।।४९।।

रविवार को वधूप्रवेश करे तो रोग होवे, मंगलवार को मृत्यु, बुधवार को विधवा होवे, गुरु, शुक्र, शनि, चन्द्र इन वारों में प्रवेश हो तो सम्पदा प्राप्त होवे।।४९।।

त्रिरागमनमुहूर्त

अलिधनमकरार्के पूर्वसंस्थो हि राहुः घटशफर तथाजे
दक्षिणस्थे च तस्मिन् ।वृषमिथुनकुलीरे पश्चिमे दिग्वि-
भागे हरियुवतितुलायामुत्तरस्थे च राहुः ।।५०।। अग्रतो
राहुर्वैधव्यं दक्षिणे सुतहा भवेत् । पृष्ठे पुत्रवती प्रोक्ता
वामे सौभाग्यवर्धनम् ।।५१।।

वृश्चिक, धनु, मकर के सूर्य हो तो राहु पूर्वदिशा में जानना, कुंभ, मीन, मेष के सूर्य

में दक्षिण में, वृष, मिथुन, कर्क ये सूर्य में पश्चिम में और सिंह, कन्या, तुला के सूर्य में उत्तर में राहु जानना। सम्मुख राहु हो तो गौना लेने से कन्या विधवा होवे, दाहिने राहु हो तो पुत्रनाश होवे, पीछे हो तो पुत्रवती होवे और बायें हो तो सौभाग्य बढ़े।।५०-५१।।

मेषे पूर्वे वृषे याम्ये मिथुने पश्चिमे स्थितः
कर्कटे चोत्तरे राहुर्मासिमासि विचारयेत् ।।५२।।

मेष के सूर्य हो तो राहु पूर्व, वृष में दक्षिण, मिथुन में पश्चिम कर्क में उत्तर एवं सिंह में पूर्व; कन्या में दक्षिण इत्यादि रीति से महीने महीने राहु का वास विचार करे, किसी आचार्य का मत है कि-

"त्रैमासिकं तडागादौ मासिकं ह्युद्वहकर्मणि ।
यामार्द्धं युद्धकार्येषु राहुस्तत्र विचारयेत् ।।"

परंतु प्रायः पंडित त्रिरागमन में त्रैमासिक राहु का विचार करते हैं।।५२।।

इति श्रीमन्मिश्रशोभाराममुतज्योतिर्वित्पण्डितनारायणप्रसादमिश्र-
विलिखिते बालबोधाख्यज्योतिषसारसंग्रहे
संस्काररत्नं चतुर्थं समाप्तम् ।।४।।



मिश्ररत्नम्

अथ पञ्चमं मिश्ररत्नं प्रारभ्यते

तत्रादौ जन्मपत्रलेखनप्रकारः

प्रथम आशीर्वादात्मक सहित मंगलाचरण श्लोक, फिर संवत्सर शाके, सम्वत्सरनाम, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, दिनमान, रात्रिमान, सूर्यांश, इष्टघटी, लग्न, पितामहादिनाम, नक्षत्रचरण, जन्मांग, चन्द्रकुंडली, ग्रहस्पष्ट, भावस्पष्ट, ग्रहमैत्रीचक्र षड्वर्ग, षड्वर्गकुंडली फलसहित, ग्रहभावफल, दृष्टिफल, अनन्तरदशा, अन्तर्दशा, आयुर्दाय, निर्याण आदि लिखना।।

लग्नप्रमाण

नागेन्दुदस्रा विधुबाणदस्रा रामाभ्ररामा गुणवेदरामाः ।
अद्र्यब्धिरामा वसुरामरामाः क्रमोत्क्रमान्मेषतुला-
दिमानम् ।।१।।

मेष और मीन का प्रमाण २१८ पल अर्थात् ३ घड़ी ३८ पल जानना, एक अंश ७ पल १६ विपल का हुआ। वृष कुंभ का प्रमाण २५१ पल अर्थात् ४ घड़ी ११ पल, एक अंश ८ पल २२ विपल का जानना, मिथुन मकर का प्रमाण ३०३ पल अर्थात् ५

घड़ी ३० पल, एक अंश १० पल ६ विपल का जानना, कर्क धन का प्रमाण ३४३ पल अर्थात् ५ घड़ी ४३ पल, एक अंश ११ पल २६ विपल का जानना, सिंह वृश्चिक का प्रमाण ३४७ पल अर्थात् ५ घड़ी ४७ पल, एक अंश ११ पल ३४ विपल का जानना, कन्या तुला का प्रमाण ३३८ पल अर्थात् ५ घड़ी ३८ पल, एक अंश ११ पल १६ विपलक जानना यह प्रमाण नैमिषमंडल का है॥१॥

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घड़ी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	३८	११	३०	४३	४७	३८	३८	४७	४३	३०	१	३८

तत्काललग्नज्ञान

जिस राशिपर सूर्य स्थित हो सूर्योदय समय वही लग्न होती है अर्थात् उसी लग्न का उदय जानना, जितने २ अंश सूर्य के भुक्त होते जाते हैं उतने अंश पिछले २ दिन रात्रि में भुक्त होते हैं। जैसे मेष के सूर्य १५ अंश गत हो तो ३ घड़ी ३८ पल मेष के प्रमाण में से आधा प्रमाण १ घड़ी ४९ पल भुक्त और १ घड़ी ४९ पल वर्तमान दिन में जानना। तिथि पत्रों में प्रायः लग्नसारिणी होती है। लग्न जानने की यह रीति है–

"यत्सूर्यराश्यंशसयानकोष्ठे घटयादिकं स्वेष्टघटीयुतं तत् ।
ततुल्यघटचादिभवेद्धि यत्र तत्तिर्यगूर्ध्वाङ्कमितं हि लग्नम् ॥"

सूर्य स्थित राशि अंश के समान कोठे में जो घड़ी पल हों उनमें इष्ट घड़ी पल जोड़ देवे जितनी घड़ी पल हों वह जिस राशि अंशके कोठे में हों वही लग्न उतने अंश जानना और जोड़ के घड़ी पल को कला विकला जानना॥१॥

जन्मपत्रलेखनोदाहरण

**स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयतु विघ्नानाम् ॥१॥**

अथ श्रीमन्नृपवरविक्रमार्कीयसम्वत् १९४८ तदंतर्गत-श्रीमच्छालिवाहनभूभर्तुःशाके १८१३ तत्र षष्टचब्दानां मध्ये शोभननाम्नि सम्वत्सरे तत्र याम्यायने भास्करे शरदृतौ मासानां मासोत्तमे आश्विनमासे कृष्णपक्षे तिथावेकादश्यां चन्द्रवासरे घटचादि० ४०।२९ पुष्यनक्ष त्रेघटचादि० २।१७ परत आश्लेषानक्षत्रे सिद्धियोगे

घटचादि० ५२।४१ बवनाम्नि करणे घटचादि ९।१० एवं परिशोधितपञ्चाङ्गे शुद्धेऽहनि तत्र दिनप्रमाणं घटचादि० २९।४० रजनीमानं घटचादि० ३०।२० अहोरात्रं षष्टिमितम् । कन्याऽर्कगतांशाः १३ ॥ भोग्यांशाः १७ तद्दिने श्रीसूर्योदयादिष्टघटचादि० ४।-१५ तदा तुलालग्नोदये श्रीमन्निश्रमिसिरीलालात्मज-जगन्नाथस्तद्गृहे पत्न्याः उभयकुलानन्दकरं पुत्ररत्नं प्रासूत । तस्य होडाचक्राऽनुसारेणाश्लेषानक्षत्रस्य प्रथम-चरणे जननत्वात् डीलशर्मेति शुभम् । उल्लापने तु अयोध्याप्रसादनामेतिलोके प्रसिद्धः देवद्विजाशीर्वच-नाच्चिरंजीवी सुखी च भूयात् । भयातम् १।५८ भभोगम् ६४।१८॥

चन्द्रकुण्डली

बु मं श ५
३
शु ६
चं ४
२ रा
सू
७
१
८ के
१०
१२
९
बृ ११

जन्माङ्गम्

के८
शु सू ६
मं
९
७
५श
बु
१०
४ चं
११बृ
१
३
१२
२ रा

इसी प्रकार जन्मपत्र लिखे विस्तार भय से यहां अधिक विस्तार नहीं किया। जन्मपत्री प्रदीप में अधिक विस्तार सहित जन्मपत्री लेखन प्रकार हम लिखेंगे।

द्वादशभाव

तनुर्धनं सोदरमित्रपुत्रशत्रुप्रियामृत्युशुभाः क्रमेण । कर्मायसंज्ञौ व्ययनामधेयो लग्नादिभावा विबुधैरि-होक्ताः ॥२॥

१ तनु, २ धन, ३ भ्रातृ, ४ मित्र, ५ पुत्र, ६ शत्रु, ७ स्त्री, ८ मृत्यु, ९ धर्म, १० कर्म, ११ लाभ, १२ व्यय, ये बारह भाव लग्न से बारहवें घर तक पंडितों ने कहे हैं॥२॥

योयो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तश्यास्ति वृद्धिः।पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्दिष्टव्या पृच्छतां जन्मतो वा ॥३॥

जो जो भाव अपने स्वामी से युक्त वा दृष्ट हो अथवा शुभ ग्रहों करके युक्त वा दृष्ट हो अर्थात् शुभग्रह उस भाव में स्थित हों अथवा उनकी दृष्टि हो तो उस उस भाव की वृद्धि कहिये और पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो उस भाव की हानि कहिये। प्रश्नसमय वा जन्म समय यह विचार करना।।३।।

दृष्टिविचार

पादैकदृष्टिर्दशमे तृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपञ्चमे च।
त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टके वा संपूर्णदृष्टिः किलसप्तके च ॥४॥
तृतीये दशमे मन्दो नवमे पञ्चमे गुरुः।
विंशतीं वीक्ष्यते विस्वांश्चतुर्थे चाष्टमे कुजः ॥५॥

सूर्य, चन्द्र, बुध शुक्र दशवें और तीसरे स्थान को एक चरण से, नववें पांचवें स्थान को दो चरण से, चौथे आठवें स्थान को तीन चरण से, सातवें घर को चारों चरण से अर्थात् सम्पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। तीसरे दशवें घर को शनैश्चर और नववें पांचवें घर को बृहस्पति चौथे आठवें घर को मंगल बीस विश्वा अर्थात् सम्पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।।४-५।।

पुरुषजातक

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः।
दशमोऽङ्गारकौ यस्य स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥६॥

जिसके मूर्ति में शुक्र, हो और केन्द्र (१।४।७।१०) में बृहस्पति हो तथा जिसके दशवें घर में मंगल हो उसको कुलदीपक जानिये।।।६।।

नास्ति शुक्रो बुधो नैव नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः।
दशमोऽङ्गारको नैव स जातः किं करिष्यति ॥७॥

जिसके जन्मसमय शुक्र, बुध, बृहस्पति केन्द्र (१।४।७।१०) में नहीं हों और दशम स्थान में मंगल न हो तो वह बालक क्या करेगा अर्थात् उसका जन्म वृथा जानना।।७।।

षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तमसम्भवः।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्य भार्या न जीवति ॥८॥

जो छठे घर में, मंगल, सातवें, राहु, आठवें घर में शनि हो तो उसकी स्त्री नहीं जीवे।।८।।

षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत् ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ।।९।।

छठे और बारहवें घर में जो पाप ग्रह होवे तो माता को भय जानना और चौथे दशवें घर में पाप ग्रह हों तो पिता को अरिष्ट जानना।।९।।

लग्नस्थाने यदा सौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ।
कुजस्तु सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ।।१०।।

जो लग्न में शनि, छठे चन्द्रमा सातवें स्थान में मंगल हो तो उसका पिता नहीं जीवे।।१०।।

जन्मलग्ने यदा राहुः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ।
जातो मृत्युमवाप्नोति कुदृष्ट्यां त्वपमृत्युना ।।११।।

जो जन्मलग्न में राहु, छठे चन्द्रमा हो तो उस बालक की मृत्यु होवे और पाप ग्रह की दृष्टि जन्म लग्न और चन्द्रमा पर हो तो अकाल मृत्यु होवे।।११।।

पातालस्थो यदा राहुश्चेन्दुःषष्ठाष्टमेऽपि च ।
पापदृष्टोऽपि शेषेण सद्यःप्राणहरःशिशोः ।।१२।।

जो राहु चौथे हो चन्द्रमा छठे वा आठवें हो और पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो शीघ्र उस बालक का प्राण हरण होवे।।१२।।

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शङ्करः ।।१३।।

जो जन्मलग्न में मंगल और आठवें बृहस्पति हो तो बारहवें वर्ष वह बालक मर जावे यदि शंकर रक्षक होवे तो भी नहीं जीवे।।१३।।

शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि ।।१४।।

शनिके क्षेत्र (मकर, कुंभ) में सूर्य हो और सूर्य के घर (सिंह) में शनि हो तो बारहवें वर्ष में देव रक्षित होने पर भी वह बालक नहीं जीवे।।१४।।

षष्ठोऽष्टमस्तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः ।
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शङ्करः ।।१५।।

जन्मसमय छठे आठवें तथा मूर्ति में जो बुध हो तो चौथे वर्ष में मृत्यु होवे, यदि शंकर रक्षा करे तो भी नहीं जीवे।।१५।।

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः ।
वर्षेऽष्टमेपि मृत्युर्वै ईश्वरो रक्षिता यदि ।।१६।।

मंगल के क्षेत्र (मेष, वृश्चिक) में जो बृहस्पति और छठे आठवें चन्द्रमा हो तो ईश्वर से रक्षित होने पर भी वह बालक आठवें वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होवे॥१६॥

दशमोऽपि यदा राहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् ।
वर्षे तु षोडशे मृत्युर्वै तन्नरस्य च ॥१७॥

जिसके दशवें घर में राहु जन्मसमय होवे तो उस बालक की सोलहवें वर्ष में मृत्यु जानिये॥१७॥

तनुस्थानगतग्रहफल

लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां पृथ्वीसुतो वितनुते
रुधिरप्रकोपम् । छायासुतःप्रकुरुते बहुदुःखभाजं जीवेन्दु-
भार्गवबुधाः सुखकान्तिदाःस्युः ॥१८॥

जो सूर्य जन्मलग्न में स्थित हो तो अंगपीड़ा हो, मंगल हो तो रक्तविकार को प्रगट करे, शनि हो तो बहुत दुःख करे और बृहस्पति, चन्द्रमा, शुक्र, बुध हों तो सुख शांति को बढ़ावें॥१८॥

धनस्थानगतग्रहफलः

दुःखावहा धनविनाशकराःप्रदिष्टा वित्ते स्थिता रवि-
शनैश्चरभूमिपुत्राः । चन्द्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थः ॥१९॥

सूर्य, शनि, मंगल, यदि धनस्थान में स्थित होवें तो दुःख बढ़ावें और धन का विनाश करें और चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र धनस्थान में हों तो नाना प्रकार से धन की वृद्धि करे॥१९॥

सहजगतग्रहफल

भानुःकरोति विरुजं रजनीकरोऽपि कीर्त्या युतं क्षिति-
सुतः प्रचुरप्रकोपम् । ऋद्धिं बुधः सुधिषणं सुविनीतवेषं
स्त्रीणां प्रियं गुरुकवी रविजस्तृतीये ॥२०॥

जो सूर्य तीसरे स्थान में हो तो निरोग, करे, चन्द्रमा हो तो कीर्ति को बढ़ावे, मंगल हो तो अतिक्रोधी करे, बुध हो तो सब कार्य सिद्ध करे और धन बढ़ावे, गुरु, शुक्र, शनि हों तो परम चतुर, स्वरूपवान् स्त्रियों का प्यारा बनावे॥२०॥

सुहृत्स्थानगतग्रहफल

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्कं कुर्वन्ति जन्मनि नरं
सुचिरं चतुर्थे । सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा
सौख्यान्वितं च नृपकर्मरतप्रधानम् ॥२१॥

जन्मसमय यदि चौथे स्थान में सूर्य मंगल शनि स्थित हों तो मनुष्य के शरीर को बहुत कालतक सुखहीन करते हैं और चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ये ग्रह चौथे घर में हों तो सुखी और राज्य में प्रधान राजकर्मचारी के पद को प्राप्त करें।।२१।।

सुतस्थानगतग्रहफल

**पुत्रे रविः पचुरकोपयुतं बुधश्च स्वल्पात्मजं शनिधरातनु-
जावपुत्रम् । शुक्रेन्दुदेवगुरवः सुतधामसंस्थाः कुर्वन्ति
पुत्रबहुलं सुखिनं सुरूपम् ।।२२।।**

यदि पांचवें सूर्य हो तो बहुत कोप करने वाला हो, बुध हो तो थोड़े पुत्र उत्पन्न होवे, शनि और मंगल हों तो सन्तान रहित होवे शुक्र, चन्द्र, गुरु हों तो बहुत पुत्र सुखी और स्वरूपवान् हो इस प्रकार पञ्चमस्थानगत ग्रह फल करते हैं।।२२।।

रिपुस्थानगतग्रहफल

**मार्तण्डभूमितनयौ ह्यरिपक्षनाशं मन्दः करोति पुरुषं
बहुराज्यमानम् । शुक्रो बुधो हि कुमतिं सरुजं च जीव-
श्चन्द्रःकरोति विकलं विफलप्रयत्नम् ।।२३।।**

जो सूर्य, मंगल छठे स्थान में हों तो शत्रुपक्ष का नाश होवे और शनि हो तो अनेक राजाओं के यहां मान होवे, शुक्र, बुध हों तो कुमति होवे, बृहस्पति हो तो रोग होवे, चन्द्रमा छठे स्थान में हो तो विकलता और प्रयत्न (उपाय) को निष्फल करता है।।२३।।

जायास्थानगतग्रहफल

**तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था जायां कुकर्म-
निरतां तनुसन्ततिं च । जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तां
रूपान्वितां जनमनोहररूपशीलाम् ।।२४।।**

जो सातवें स्थान में सूर्य, मंगल, शनि स्थित हों तो उसकी स्त्री कुकर्म करने वाली व थोड़े सन्तान वाली होवे और जो गुरु, चन्द्र, शुक्र, बुध सातवें स्थान में हो तो उसकी स्त्री बहुत पुत्रों वाली सुन्दरी मनुष्यों के मन को हरण करने योग्य रूप और शीलवती होती है।।२४।।

मृत्युस्थानगतग्रहफल

**सर्वे ग्रहा दिनकरप्रमुखा नितान्तं मृत्युस्थिता विदधते
किल दुष्टबुद्धिम् । शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रभागं
सौख्यैर्विहीनमतिरोगगणैरुपेतम् ।।२५।।**

जिसके सूर्य आदि सम्पूर्ण ग्रहों में से कोई भी ग्रह आठवें स्थान में स्थित हो तो उस

पुरुष की बुद्धि भ्रष्ट होवे, कोई अंग शस्त्र लगने से पीडित होवे, सुख से रहित और बहु रोगी होवे॥२५॥

धर्मस्थानगतग्रहफल

धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः कुर्वन्ति धर्मरहितं
विमतिं कुशीलम् । चन्द्रो बुधो भृगुसुतश्च सुरेन्द्रमंत्री
धर्मक्रियासु निरते कुरुते मनुष्यम् ॥२६॥

यदि नवम स्थान में सूर्य, शनि, मङ्गल हों तो मनुष्य को धर्म रहित, मतिहीन और कुशील करते हैं तथा चन्द्र, बुध, शुक्र, गुरु हों तो मनुष्य को धर्मक्रिया में निरत करते हैं॥२६॥

कर्मस्थानगतग्रहफल

आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः कुर्युर्नरं बहुकु-
कर्मरतं कुपुत्रम् । चन्द्रः सुकीर्तिमुशना बहुवित्तयुक्तं
रूपान्वितं बुधगुरू शुभकर्मभाजम् ॥२७॥

यदि सूर्य, भौम, शनि दशम स्थान में स्थित हों तो मनुष्य को कुकर्मी और कुपुत्र बनाते हैं, चन्द्रमा दशवें घर में हो तो कीर्तिमान् शुक्र हो तो बहु धनी और स्वरूपवान् करे, बुध गुरु हों तो शुभकर्म करने में प्रीति होवे॥२७॥

लाभस्थानगतग्रहफल

लाभस्थितो दिनकरो नृपलाभकारी तारापतिर्बहुधनं
क्षितिजश्च नारी । सौम्यो विवेकसततं सुभगं च जीवः
शुक्रः करोति धनिनं रविजः सुकीर्तितम् ॥२८॥

यदि लाभ स्थान में सूर्य हो तो राजा से लाभ करावे, चन्द्रमा हो तो बहु धनी, मंगल हो तो स्त्रीसुख प्रदान करे, बुध हो, तो निरंतर विवेकी (ज्ञानी) बनावे, बृहस्पति हो तो ऐश्वर्यवान् करे। शुक्र हो तो धनवान् करे तथा शनि ग्यारहवें घर में हो तो कीर्तिमान् करे॥२८॥

व्ययस्थानगतग्रहफल

सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशीलं काणं शशि क्षितिसुतो
बहुपापभाजम् । चन्द्रात्मजो गतधनं धिषणः कृशाङ्गं
शुक्रो बहुव्ययकरं रविजः सुतीव्रम् ॥२९॥

सूर्य जो व्यय (बारहवें) स्थान में हो तो पुरुष को दुःशील (दुष्टस्वभाव) करते हैं, चन्द्रमा बारहवें हो तो काणा करे, मंगल हो तो बहुत दुःखी करे, बुध हो तो धनहीन, बृहस्पति हो तो दुर्बल अंग, शुक्र हो तो बहुत खर्च करने वाला और शनि

हो तो तीक्ष्ण प्रकृति वाला करे॥२९॥

राहुकेतुफलं सर्वं मन्दवत्कथितं बुधैः ॥३०॥

राहु केतु जनित सम्पूर्ण फल शनिभाव फल के समान पंडितों को कहना चाहिये॥३०॥

उच्चनीचग्रह

रविर्मेषे तुले नीचो वृषे चन्द्रस्तु वृश्चिके ।
भौमश्च नक्रकर्के च स्त्रियां सौम्यो झषे तथा ॥३१॥
गुरुः कर्के च नक्रे च मीनकन्ये सितस्य च ।
मन्दस्तुलायां मेषे च कन्या राहुगृहस्य च ॥३२॥
राहुर्युग्मे तु चापे च तस्मात्सप्तमगः शिखी ।
प्रोक्तं ग्रहाणांमुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमाद्बुधैः ॥३३॥

सूर्य की मेष राशि उच्च, तुला राशि नीच जानना, चन्द्रमा की वृष राशि उच्च और वृश्चिक नीच राशि जानना, मंगल की उच्च राशि मकर और नीच राशि कर्क जानना; बुध की उच्च राशि कन्या और नीच राशि मीन जानना, बृहस्पति की उच्च राशि कर्क और मकर राशि नीच जानना, शुक्र की उच्च राशि मीन और नीच राशि कन्या जानना, शनैश्चर की उच्च राशि तुला और नीच राशि मेष जानना, कन्या राशि राहु का घर है, राहु की उच्च राशि मिथुन और धनु राशि नीच जानना, राहु से सातवें घर में केतु रहा करता है इस प्रकार ग्रहों की उच्च नीच राशियां क्रम से पंडितों ने कही हैं जो ग्रह जिस राशि का स्वामी है उस ग्रह का वह राशि घर है और जो ग्रह सूर्य के साथ सूर्य के मण्डल में हो वह ग्रह अस्त जानना॥३१-३३॥

त्रिभिः स्वस्थो भवेन्मंत्री त्रिभिरुच्चैर्भवेन्नृपः ।
त्रिभिर्नीचगतैर्दासः त्रिभिरस्तं गतैर्जडः ॥३४॥

तीन ग्रह जिसके जन्म समय अपने घर में स्थित हों वह मंत्री होवे, तीन ग्रह उच्च के हो तो राजा अथवा राजा के समान होवे तीन ग्रह नीचे के हों तो दासभाव को प्राप्त होवे, तीन ग्रह अस्त होवें तो जड़ होवे॥३४॥ यह पुरुष जातक अति संक्षेप से यहां लिखा विस्तार पूर्वक 'नारायणज्योतिष' के जातक भाग में लिखेंगे॥३४॥

स्त्रीजातक

सम विलग्ने यदि संस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दु-जीवाः । स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञान-विराजमाना ॥३५॥

यदि जन्मलग्न सम राशि हो और उसमें शुक्र, बुध चन्द्र, बृहस्पति बली होके स्थित हों तो वह स्त्री ब्रह्मविचार में चर्चा करने वाली और श्रेष्ठ ज्ञान से युक्त होवे।।३५।।

सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरा भवेत् ।
कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरा भ्रमति वेश्मसु ।।३६।।

जिसके सातवें घर में शुक्र हो तो वह स्त्री कुल को दूषित करे जो कर्क राशि में मंगल स्थित हो तो वह स्त्री स्वेच्छानुसार दूसरे के घर में वास करे।।३६।।

पापयोरन्तरे लग्ने चद्रे वा यदि कन्यका ।
जायते च तदा हन्ति पितृश्वशुरयोःकुलम् ।।३७।।

लग्न अथवा चंद्रमा यदि पाप ग्रहों के बीच में हो तो वह स्त्री दोनों वंश (पिता श्वशुर के कुल) को विनष्ट करने वाली होवे।।३७।।

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे पतिः ।
म्रियते चाष्टमे वर्षे चन्द्रः षष्ठाष्टमे यदि ।।३८।।

जिस स्त्री के जन्म समय लग्न में और सातवें पाप ग्रह हो तो उसका पति सातवें वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होवे और चद्रमा छठे वा आठवें होवे तो आठवें वर्ष पति की मृत्यु जानना। परंतु यहां शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो नहीं।।३८।।

द्वादशे चाष्टमे भौमे क्रूरे तत्रैव संस्थिते ।
लग्ने च सिंहिकापुत्रे रण्डा भवति कन्यका ।।३९।।

बारहवें अथवा आठवें मंगल हो और वहीं क्रूर ग्रह स्थित हो और लग्न में राहु हो तो ऐसे योग से कन्या रंडा होती है।।३९।।

लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात् सप्तमगोऽपि वा ।
सद्यो निहन्ति दम्पत्योरेकं नास्त्यत्र संशयः ।।४०।।

लग्न के सातवें अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो विवाह से थोड़े ही काल में स्त्री पुरुष में से एक की निस्संदेह मृत्यु होवे।।४०।।

निशाकरःपापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति ।
पापे स्मरस्थेऽन्यखगे च धर्मे किलाङ्गना प्रव्रजित-
त्वमेति ।।४१।।

जो चंद्रमा पापग्रह के मध्य में स्थित हो तो शस्त्र से मृत्यु कहना और जो चन्द्रमा मंगल की राशि में स्थित हो तो अग्नि से जलकर नाश कहना, तथा जो पापग्रह सातवें स्थान अथवा नवमस्थान में अन्य शुभ ग्रह हो तो वह स्त्री काषाय वस्त्रधारी

वेदान्तिनी होती है।।४१।।

रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् ।
किल जलोदरसंजनिता तदा निधनता वनितासु तु कीर्तिता ।।४२।।

जो शनैश्चर कर्कराशि में हो और चन्द्रमा मकर राशि में हो तो जलोदर रोग से स्त्री का नाश हो।।४२।।

सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता क्षोणिजे च विधवा खलु बाल्ये ।
पापखेचरविलोकनयाते मन्दगे च युवती जरती स्यात् ।।४३।।

जो सातवें स्थान में सूर्य हो तो उस स्त्री को उसका पति त्याग देवे और मंगल सातवें स्थान में हो तो बाल्यावस्था में विधवा हो तथा जो सातवें पाप ग्रह हो तो यौवनावस्था में विधवा हो और जो सातवें स्थान में शनैश्चर हो तो बुढ़ापे में विधवा होवे।।४३।।

तनुस्थानगतग्रहफल

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत्कुजश्च राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम् । शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी-मायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरीशः ।।४४।।

मूर्ति में सूर्य मंगल हों तो उस स्त्री को विधवा करें, राहु हो तो सन्तानहीन, शनि हो तो दरिद्रा, शुक्र बुध गुरु हों तो साध्वी, चन्द्रमा हों तो आयु क्षय करे।।४४।।

धनस्थानगतग्रहफल

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमा दारिद्र्यदुःखमतुलं नियतं द्वितीये । वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्या नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः ।।४५।।

सूर्य, शनि, राहु, भौम यदि दूसरे स्थान में हो तो दारिद्र्य और दुःख को करते हैं। गुरु, शुक्र, बुध हों तो धनवती और सौभाग्यवती करते हैं; चन्द्रमा दूसरे हों तो स्त्री को बहुपुत्रवती करे।।४५।।

सहजस्थानगतग्रहफल

शुक्रेन्दुभौमगुरुसूर्यबुधास्तृतीये कुर्युः सतीं बहुसुतां धन-भोगिनीं च । कन्यां करोति रविजो बहुवित्तयुक्तां पुष्टिं करोति नियतं खलु सैंहिकेयः ।।४६।।

शुक्र, चन्द्र, भौम गुरु, सूर्य, बुध, तीसरे स्थान में हों तो उस स्त्री को पतिव्रता, बहुत पुत्रोंवाली, धनवती, ऐश्वर्यवती करे, शनि तीसरे घर में हो तो बहुत कन्या और धन से युक्त करे, राहु तीसरे हो तो शरीर को पुष्ट करे।।४६।।

सुहृत्स्थानगतग्रहफल

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुते चतुर्थे सौभाग्यशीलरहितां कुरुते शशाङ्कः । राहुः सपत्निसहितां क्षितिवित्तलाभं दद्याद्बुधः सुरगुरुर्भृगुजश्च सौख्यम् ।।४७।।

मङ्गल, शनि चौथे हो तो उस स्त्री के दूध स्वल्प होवे, चन्द्रमा हो तो सौभाग्य और शील रहित होवे, राहु हो तो भूमि और धन का लाभ होवे, बुध, गुरु, शुक्र हों तो सुख प्राप्त होवे।।४७।।

सुतभावगतग्रहफल

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ चन्द्रात्मजो बहुसुतां गुरुभार्गवौ च । राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं कन्याप्रसूतिनिरतां कुरुते शशाङ्कः ।।४८।।

सूर्य, मंगल पांचवें घर में हों तो वह स्त्री संतानहीन होवे बुध, गुरु, शुक्र हों तो बहुत पुत्रवती होवे, राहु हो तो मरण होवे, शनि हो तो रोग होवे, चंद्रमा पांचवें स्थान में स्त्री के जन्म समय हो तो उसके कन्या अधिक उत्पन्न होवें।।४८।।

रिपुभावगतग्रहफल

षष्ठे शनैश्चरदिवाकरराहुजीवा भौमः करोति सुभगां पतिसेविनीं च । चन्द्रः करोति विधवामुशना दरिद्रां वेश्यां शशाङ्कतनयः कलहप्रियां वा ।।४९।।

जिस स्त्री के छठे स्थान में शनैश्चर, सूर्य, राहु, गुरु, भौम हों तो वह स्त्री सौभाग्यवती और पति की सेवा करने वाली होवे, चंद्रमा हो तो विधवा, शुक्र हो तो दरिद्रा, बुध हो तो वेश्या अथवा कलहप्रिया होवे।।४९।।

सप्तमभावगतग्रहफल

सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्रा दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः । वैधव्यबन्धनभयं क्षयवित्तनाशं व्याधिप्रवासनियतं च यथाक्रमेण ।।५०।।

शनि, मंगल, गुरु, बुध, राहु, सूर्य, चंद्र शुक्र ये ग्रह सातवें स्थान में स्थित हों तो क्रम से मरण, वैधव्य, बंधन, भय, क्षय, धननाश, रोग, विदेशवास होवे यह फल करते हैं।।५०।।

मृत्युभावगतग्रहफल

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोगं मृत्युं शशी भृगुसुतश्च
तथैव राहुः । सूर्यः करोति विधवां सुभगां महीजः
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च ।।५१।।

जिस स्त्री के आठवें स्थान में गुरु बुध हों तो पति से वियोग होवे चन्द्रमा शुक्र तथा राहु हो तो मृत्यु होवे, सूर्य आठवें हो तो उस स्त्री को विधवा करे, मङ्गल सौभाग्यवती और शनि बहुपुत्रवती व पति की प्यारी करे है।।५१।।

धर्मभावगतग्रहफल

धर्मस्थिता भृगुदिवाकरभूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतां
शशिजः सुभोगाम् । राहुस्तथाऽर्कतनयश्च करोति वन्ध्यां
नारीं प्रसूतितनयां कुरुते शशाङ्कः ।।५२।।

जिस स्त्री के नववें स्थान में शुक्र, सूर्य, मंगल, गुरु स्थित हों तो वन्ध्या (संतानहीन) करे, चन्द्रमा नववें स्थान में होने से स्त्री को बहुत पुत्रों के उत्पन्न करने वाली करे।।५२।।

कर्मभावगतग्रहफल

राहुर्नभःस्थलगतो विधवां करोति पापे रतिं दिनकरश्च
शनैश्चरश्च । मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुलटां च चन्द्रः शेषा
ग्रहा धनवतीं शुभगां च कुर्युः ।।५३।।

जो राहु दशवें घर में स्थित हो तो उस स्त्री को विधवा करे, सूर्य शनि हो तो पापकर्म में प्रीति बढ़ावे, मङ्गल मृत्यु करे, चन्द्रमा धनहीन व कुलटा करे, शेष ग्रह बुध, गुरु, शुक्र दशवें स्थान में हों तो स्त्री को धनवती और सौभाग्यवती करे।।५३।।

लाभभावगतग्रहफल

आये रविर्बहुसुतां धनिनीं शशाङ्कः पुत्रान्विता क्षितिसुतो
रविजो धनढ्याम् । आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजःसुपुत्रां
राहुःकरोति सुभगां सुखिनीं बुधश्च ।।५४।।

जो स्त्री के ग्यारहवें स्थान में सूर्य हो तो बहुपुत्रवती होवे, चन्द्रमा हो तो धनवती होवे, मंगल हो तो पुत्रवती होवे, शनि हो तो धनवती होवे, बृहस्पति हो तो अधिक आयुवाली होवे, शुक्र हो तो सुन्दर पुत्रोंवाली होवे, राहु ग्यारहवें हो तो सुभगा और बुध हो तो सुखयुक्त करे हैं।।५४।।

व्ययभावगतग्रहफल

अन्त्ये धनव्ययकरां दिनकृच्छनिश्च वन्ध्यां कुजःपररतां कुटिलां च राहुः । साध्वीं सितेज्यशशिजा बहुपुत्र-पौत्रैर्युक्तां विधुःप्रकुरुते व्ययगो दिनान्धाम् ॥५५॥

जो बारहवें स्थान में सूर्य शनि हों तो वह बहुत धनव्यय करने वाली होवे, मंगल हो तो वंध्या होवे, राहु हो तो परपुरुष गामिनी और व्यभिचारिणी होवे, शुक्र गुरु, बुध हों तो सरल स्वभाव वाली और बहुत पुत्र व पौत्रों से युक्त होवे, चन्द्रमा बारहवें हो तो स्त्री को दिनांध करे॥५५॥ यहं संक्षेप से स्त्री जातक लिखा विस्तारपूर्वक 'नारायणज्योतिष' ग्रंथ के जातक भाग में लिखेंगे॥५५॥

गोचरविचार

मांस शुक्रबुधादित्याः सार्धमासं तु मङ्गलः ।
वर्षमेकं गुरुश्चैव सपादद्विदिनं शशी ॥५६॥
राहुरष्टादशान्मासान् त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः ।
राहुवत्केतुरुक्तस्तु राशिभोगाःप्रकीर्त्तिताः ॥५७॥
राशिप्रवेशे सूर्यारौ मध्ये शुक्रबृहस्पती ।
राहुश्चन्द्रःशनिश्चान्ते सौम्यश्चैव सदा शुभः ॥५८॥

शुक्र, बुध, सूर्य, ये ग्रह एक २ महीनरा एक राशि को भोग करते हैं, डेढ़ महीना मंगल, एक वर्ष तक गुरु, सवा दो दिन चन्द्रमा, अठारह महीने राहु, तीस महीने शनैश्चर, अठारह महीने केतु एक राशि पर रहता है। इस प्रकार राशि भोग कहा है। सूर्य मंगल राशि में प्रवेश करते ही फल प्रदान करते हैं; राशि के मध्य में शुक्र बृहस्पति, राहु, चन्द्रमा, शनि ये राशि के अन्त में होने पर अपना (शुभाशुभ) फल देते हैं और बुध सदा फल देता है॥५६-५८॥

शुभा एकादशे सर्वे त्रिषष्ठदशगो रविः ।
व्ययाष्टतुर्यगाःसर्वे नेष्टाः सौम्याः शुभा ग्रहाः ॥५९॥

ग्यारहवें सब ग्रह शुभ होते हैं, तीसरे छठे दशवें सूर्य शुभ जानना और बारहवें आठवें चौथे सब ग्रह (पाप ग्रह शुभ ग्रह) नेष्ट जानना॥५९॥

दशसप्तत्रिषष्ठाद्यसंस्थितश्चन्द्रमाः शुभः ।
शुक्लपक्षे तु नवमो द्वितीयः पंचमोऽपि च ॥६०॥

दशवें, सातवें, तीसरे, छठे, पहले जो चन्द्रमा हो तो शुभ जानना। शुक्ल पक्ष में नववें, दूसरे, पांचवें हो तो शुभ जानना॥६०॥

दिगयाश्विविनदाख्यो गोचरे शुभदो बुधः ।
बृहस्पतिः शुभः प्रोक्तो द्विपञ्चनवसप्तगः ॥६१॥

दशवें, ग्यारहवें, दूसरे, तीसरे, नववें बुध गोचर में शुभ होता है। बृहस्पति दूसरे, पांचवें, नववें, सातवें शुभ कहा है।।६१।।

एकद्वित्रिशायेषुनवाद्रिगभृगुः शुभः ॥६२॥

पहले, दूसरे, तीसरे, दशवें, ग्यारहवें, पांचवें, नववें, सातवें, शुक्र हो तो शुभ जानना।।६२।।

द्विपंचमसप्तमनन्दगता चतुराङ्गगद्वादशरन्ध्रयुताः ।
धनधान्यहिरण्यविनाशकरारविराहुशनैश्चरभूमिसुताः ॥६३॥

दूसरे, पांचवें, सातवें, नववें, चौथे, पहले, बारहवें, आठवें सूर्य राहु, शनि मङ्गल हो तो धनधान्य और हिरण्य का विनाश करने वाला जानना।।६३।।

जन्मनि दशमचतुर्थे त्रिषडाष्टद्वादशे तथा हि ।
व्याधिं विदेशगमनं मित्रविरोधं सुरगुरुः कुरुते ॥६४॥

पहले, दशवें, चौथे, तीसरे, छठे, आठवें, बारहवें यदि बृहस्पति गोचर में हो तो व्याधि (रोग), विदेशगमन, मित्रविरोध, यह फल करे।।६४।। गोचर सम्बन्धी विशेष विचार हम 'नारायण ज्योतिष' मुहूर्तभाग में लिखेंगे।।६४।।

दिनदशाविचार

जन्मभं च चतुर्गुण्यं तिथिवारसमन्वितम् ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥६५॥
रविणा शोकसन्तापौ शशाङ्के क्षेमलाभकौ ।
भूमिपुत्रे त्वनिष्टःस्याद्बुधे प्रज्ञाविवर्धनम् ॥६६॥
गुरौ वित्तं भृगौ सौख्यं शनौ पीडा न संशयः ।
राहुणा घातपातौ च केतोर्मृत्युसमं फलम् ॥६७॥

जन्मनक्षत्र की संख्या को चौगुणा करे और तिथि वार संख्या को जोड़ देवे, नव का भाग देवे जो शेष रहे सो दशा जानना।एक शेष रहे तो सूर्यदशा शोक संताप करे, दो शेष रहे तों चन्द्र दशा क्षेम, और लाभ करे, तीन शेष रहें तो मङ्गल की दशा मृत्युकारक जानना, चार शेष रहें तो बुध दशा बुद्धि बढ़ावे, पांच शेष रहें तो गुरु दशा धनलाभ करे, छः शेष रहें तो शुक्र दशा सुख करे, सात शेष रहें तो शनिदशा पीड़ा करे, आठ शेष रहें तो राहुदशा घातपात करे, नव शेष रहें तो केतुदशा मृत्युसम करे यह दिन दिन की दशा फल सहित जानना।।६५-६७।।

छिक्काविचार

अग्रे कलहकृत् छिक्का चात्मछिक्का महद्भयम् ।
ऊर्ध्वं चैव शुभं ज्ञेयं मध्ये चैव महद्भयम् ॥६८॥
आसने शयने चैव दाने चैव तु भोजने ।
वामाङ्गे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्का हि शुभावहाः ॥६९॥

समुहे की छींक कलहकारी जानना, अपनी छींक महाभयकारी जानना ऊँची छींक शुभ जानना, नीची छींक महाभयकारी जानना। आसन (बैठे), शयन (सोते समय), दानसमय, भोजन समय बाई ओर पीठ पीछे छींक शुभ जानना अर्थात् ये छः छींक शुभ हैं॥६८-६९॥

पल्लीपतन

पल्ली पतेत्तु शिरसे बहुराज्यलक्ष्मीश्चाग्रे पतेद्भुवितले
बहुदुःखजालम् । वामाङ्गभागे धनहानिमृत्युःसुखप्रदा
स्यात्स्त्रियदक्षिणाङ्गे ॥७०॥

यदि स्त्रियों के शिर पर पल्ली (छिपकली) गिरे तो अधिक राज्यलक्ष्मी देवे, आगे पृथ्वी पर गिरे तो बहुत दुःख मिले, बाँयें अङ्गपर यदि छिपकली गिरे तो धनहानि और मृत्यु तुल्य करे, दाहिने अंगपर गिरे तो सुख देवे॥७०॥

यदि पतति च पल्ली दक्षिणाङ्के नराणां सुजनजन-
विनाशो[1] लाभकृद्वामभागे । उदरशिरसि कण्ठे[2] पृष्ठभागे
च मृत्युः करपदहृदि गुह्ये सर्वसौख्यं करोति ॥७१॥

यदि मनुष्यों के दाहिने अंगपर छिपकली गिरे तो सुजन जनों का? विनाश हो, अथवा सुजनों से विरोध होवे, बायें अंगपर गिरे तो लाभ करे और उदर (पेट), शिर, कंठ वा वक्षःस्थल (छाती) पर, पीठपर गिरे तो मृत्युतुल्य करे तथा हाथ, पांव, हृदय, गुदा इन अंगों पर गिरे तो सब प्रकार सुखी करे॥७१॥

अंगस्फुरण

अङ्गस्य दक्षिणे भागे प्रशस्तं स्फुरणं भवेत् ।
अप्रशस्तं तथा वामे पृष्ठस्य हृदयस्य च ॥७२॥

यदि पुरुष का दाहिना अंग फरके तो शुभ कहना तथा बायां अंग व पीठ हृदय फरके तो अशुभ कहना, स्त्री का इससे विपरीत कहना॥७२॥

---

१ विरुद्धम् २ वक्षः इत्यपिपाठः

नेत्रस्फुरण

नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मानसं दुःखजालं नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नासिकान्ते च मृत्युः । नेत्रस्याधःस्फुरणमसकृत्सङ्गरे भङ्गहेतुर्वामे चैतत् फलमविकले दक्षिणे वैपरीत्यम् ।।७३।।

यदि पुरुष के नेत्र का ऊपरी भाग फरके तो मन का सब दुःख दूर हो जावे और नेत्र के समीप फरके तो धनलाभ, हो, नासिका के अंतभाग समीप नेत्र फरके तो मृत्युसमान होवे, नेत्र के नीचे भाग फरकने से युद्ध में वारंवार पराजय होवे, स्त्रियों के नेत्र का फल इससे विपरीत कहना अर्थात् पुरुष का दाहिना नेत्र और स्त्री का बायां नेत्र फरके तो यह पूर्वोक्त फल कहना।।७३।।

कार्याकार्यप्रश्न

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।
अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं सत्त्वं रजस्तमः ।।७४।।
सिद्धिस्तात्कालिकी सत्त्वे रजसा तु विलम्बता ।
तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्या प्रश्नकोविदैः ।।७५।।

तिथि, प्रहर, नक्षत्र, वारसंख्या को जोड़कर तीन का भाग देवे १ शेष रहे तो सत्त्व, २ से रज, ३ से तम जानना, सत्त्व से तत्काल कार्य की सिद्धि कहना, रज से विलम्ब कहना, तम से निष्फल कहना इस प्रकार पंडितों को प्रश्न जानना चाहिये।।७४-७५।।

पंथाप्रश्न

तिथिःप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।
वर्तमानं च नक्षत्रं गणयेत्कृत्तिकादितः ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं तु फलमादिशेत् ।।७६।।

तिथि, प्रहर, नक्षत्र वारकी संख्या को जोड़े अथवा वर्तमान नक्षत्र तक कृत्तिका से गिने सात का भाग देवे जो शेष रहे सो फल कहना।।७६।।

एकशेषे भवेत्स्थाने द्वितीये पथि वर्तते ।
तृतीये चार्धमार्गे तु चतुर्थे ग्रामसन्निधौ ।।७७।।
पञ्चमे पुनरावृत्तिःषष्ठे व्याधियुतं वदेत् ।
शून्यं ज्ञेयं सप्तमे वै चैतत्प्रश्नस्य लक्षणम् ।।७८।।

एक शेष रहे तो स्थानहीन कहना, दो शेष रहें तो मार्ग में कहना, तीन शेष रहें तो

आधे मार्ग में कहना, चार शेष रहें तो ग्राम के समीप कहना, पांच शेष रहें तो आकर फिर लौट जाना कहना, छः शेष रहें तो रोगयुक्त होना कहना, सात शेष रहें तो शून्य फल कहना ये पंथाप्रश्न के लक्षण कहे॥७७-७८॥

कार्यसिद्धिप्रश्न

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥७९॥

दिशा, प्रहर, नक्षत्र, वार की संख्या को जोड़कर आठ का भाग देवे शेषांक से प्रश्न का फल कहे॥७९॥

पञ्चके त्वरिता सिद्धिः षट्तुर्ये च दिनत्रयम् ।
त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ ॥८०॥

५।१ शेष रहें तो तुरंत सिद्धि होवे, ६।४ शेष रहें तो सिद्धि ३ दिन में होवे, ३।७ शेष रहें तो विलम्ब से कार्यसिद्धि होवे और २।८ शेष रहें तो कार्यसिद्धि नहीं होवे॥८०॥

गर्भिणीप्रश्न

तत्प्रश्नलग्ने रविजीवभौमे तृतीयसप्ते नवपंचमे च ।
गर्भःपुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतश्चान्यग्रहे स्त्री विबुधैः प्रणीता ॥८१॥

प्रश्न समय यदि लग्न में, तीसरे, सातवें, नववें, पांचवें सूर्य गुरु मंगल हों तो गर्भिणी के गर्भ से पुत्र की उत्पत्ति कहना और अन्य ग्रह चन्द्र, बुध, शुक्र शनि हों तो कन्या की उत्पत्ति कहना ऐसा ऋषियों ने कहा है॥८१॥

मेघप्रश्न

आषाढस्यासिते पक्षे दशम्यादिदिनत्रये ।
रोहिणीकालमाख्याति सुखदुर्भिक्षलक्षणम् ॥८२॥
रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघडम्बरम् ।
मध्याह्ने जलबिन्दुः स्यात्तदा दुर्भिक्षकारणम् ॥८३॥

आषाढ़ के कृष्णपक्ष की दशमी से तीन दिन(१०।११।१२) रोहिणी नक्षत्र हो तो सुभिक्ष, मध्यम, दुर्भिक्ष ये फल क्रम से जानना रात्रि मेघ रहित हो, प्रातःसमय मेघ गर्जे, मध्याह्न समय जल की बूंदे गिरें ऐसे लक्षण हों तो दुर्भिक्ष का कारण जानना॥८२-८३॥

कुंभकर्कवृषा मीनमकरौ वृश्चिकस्तुला ।

जललग्नानि चोक्तानि लग्नेष्वेतेषु सूर्यभम् ।
भवत्येव सदा वृष्टिर्ज्ञातव्या गणकोत्तमैः ।।८४।।

कुंभ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक, तुला ये जललग्न हैं इनमें यदि सूर्य नक्षत्र प्रवेश हो तो पंडितों करके वृष्टि होना जानना चाहिये।।८४।।

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघासु च ।
स्वात्यां प्रविशते भानुर्वर्षते नाऽत्र संशयः ।।८५।।

अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, रेवती, श्रवण, मघा, स्वाति इन नक्षत्रों में सूर्य प्रवेश हो तो निःसंदेह वर्षा होवे।।८५।।

आर्द्रादिदशकं स्त्रीणां विशाखास्त्रिनपुंसकम् ।
मूलाच्चतुर्दश पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ।।८६।।
वायुर्नपुंसके भे च स्त्रीणां भे चाभ्रदर्शनम् ।
स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ।।८७।।

आर्द्रा आदि दश नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक, विशाखा से तीन नक्षत्र नपुंसकसंज्ञक; मूल से चौदह नक्षत्र पुरुषसंज्ञक जानना, नपुंसकनक्षत्र नपुंसकनक्षत्र में प्रवेश हो अथवा नपुंसकनक्षत्र में स्त्रीनक्षत्र प्रवेश हो तो वायु चले, स्त्रीनक्षत्र में स्त्रीनक्षत्र प्रवेश हो तो मेघों की छाया रहे परंतु वर्षा नहीं होवे और स्त्रीनक्षत्र पुरुषनक्षत्र में प्रवेश हो वा पुरुषनक्षत्र स्त्रीनक्षत्र में प्रवेश हो तो निश्चय वर्षा होवे।।८६-८७।।

सूर्यचन्द्रमण्डलफल

रविशशिपरिवेषे पूर्वयामे च पीडा रविशशिपरिवेषे
मध्ययामे च वृष्टिः। रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये
रविशशिपरिवेषे राज्यभङ्गश्चतुर्थे ।।८८।।

सूर्य वा चन्द्रमा का मंडल जो पहले प्रहर में हो तो मनुष्यों को पीड़ा होवे, दूसरे प्रहर में हो तो वृष्टि होवे तीसरे प्रहर में हो तो धान्य का नाश होवे, चौथे प्रहर में हो तो राज्यभंग होवे।।८८।।

पशुप्रश्न

द्युमणिभान्नवभेषु वने पशुं तदनु षट्सु च कर्णपथे स्थितम् ।
अचलभेषु गतं गृहमागतं द्वयगतं गतमेव मतं त्रिषु ।।८९।।

जो सूर्य नक्षत्र से नव नक्षत्र तक पशु खो जावे तो वन में कहना अनंतर छः नक्षत्र तक मार्ग में कहना, फिर ७ नक्षत्र तक घर में आया कहना, तदनंतर २ नक्षत्र तक आने वाला नहीं ऐसा कहना, फिर ३ नक्षत्र तक मर गया कहना। प्रश्न विषय का पूरा

विचार 'प्रश्नमार्त्तण्ड' में लिखेंगे।।८९।।

अन्धादि नक्षत्र ज्ञान

अन्धकं तदनु मन्दलोचनं मध्यलोचनमतःसुलोचनम् ।
रोहिणीप्रभृतिभं चतुर्विधं साभिजिच्च गणयेत्पुनः।।९०।।

रोहिणी को लेके चार नक्षत्र क्रम से अन्ध, मन्दलोचन, मध्यलोचन, सुलोचन संज्ञावाले जाने सो चक्र से स्पष्ट गणना की रीति जानना।।९०।।

अन्ध	रो	पु	उ	वि	पू	ध	रे
मंदलोचन	मृ	ऽश्ले	ह	ऽनु	उ	श	अ
मध्यलोचन	आ	म	चि	ज्ये	अ	पू	भ
सुलोचन	पु	पू	स्वा	मू	श्र	उ	कृ

नष्टवस्तुप्रश्न

अन्धे सद्यःप्राप्यते वस्तु नष्टं कष्टात्प्राप्यं मन्दनेत्रे च तद्वत् । दूराच्छ्राव्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे ।।९१।।

अन्ध नक्षत्र में खोई वस्तु शीघ्र मिले, मन्दलोचन में खोई वस्तु कष्टपूर्वक (यत्न से) मिले, मध्य नक्षत्र में खोई वस्तु दूर से सुन पड़े, सुलोचन में खोई वस्तु न सुन पड़े और न प्राप्त होवे।।९१।।

मघादि चार्यमान्तं च समीपे वस्तु दृश्यते ।
हस्तादिवसुपर्यन्तमन्यहस्ते च दृश्यते ।।९२।।
शतताराद्यमान्तं तु स्वगृहे वस्तु दृश्यते ।
अग्नयादिसार्पपर्यन्तमदृष्टं दूरगं तथा ।।९३।।

मघा से उत्तराफाल्गुनी तक खोई हुई वस्तु समीप दीख पड़े हस्त से धनिष्ठा तक खोई हुई वस्तु दूसरे के हाथ में दीख पड़े, शतभिषा से भरणी तक खोई वस्तु नहीं दीख पड़े, कृत्तिका से आश्लेषा तक खोई वस्तु नहीं दीख पड़े और दूर सुन पड़े।।९२-९३।।

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् ।
दिक्संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ।।९४।।

एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद्भाण्डसंस्थिम् ।
तृतीये जलमध्यस्थमन्तरिक्षे चतुर्थके ॥९५॥
तुषस्थं पञ्चमे तु स्यात्षष्ठे गोमयमध्यगम् ।
सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥९६॥

तिथि, वार, नक्षत्र, प्रहर इनकी संख्या को मिलाय जिस दिशा में प्रश्नकर्त्ता बैठा होवे, पूर्वादि उस संख्या से गुणे अथवा दिशा आठ कही है सो आठ से गुणे अथवा दिक् नाम दश का है सो दश से गुणे और सात का भाग देवे जो १ शेष रहे तो पृथ्वी में वस्तु जानना २ शेष रहें तो किसी पात्र में वस्तु जानना, ३ शेष रहें तो जल के बीच वस्तु जानना, ४ शेष रहें तो अन्तरिक्ष में वस्तु रक्खी जानना, ५ शेष रहें तो तुष (भूसी) में वस्तु जानना, ६ शेष रहे तो गोबर में वस्तु जानना, ७ शेष रहें तो भस्म (राख) में वस्तु जानना यह प्रश्न का लक्षण कहा है।।९४-९६।।

विशेषज्ञातव्य

ताराशुद्धं क्षौरं रविगुरुशुद्धा व्रतं दीक्षा ।
शुक्रविशुद्धा यात्रा सर्वं शुद्धं शशाङ्केन ॥९७॥

क्षौरकर्म में तारा की शुद्धि, व्रत और दीक्षा में सूर्य और गुरु की शुद्धि, यात्रा में शुक्र की शुद्धि, सब कामों में चन्द्रमा की शुद्धि देख के मुहूर्त बताना।।९७।।

सम्वत्सरफल

प्रभवाद्द्विगुणं कृत्वा त्रिभिन्यूनं च कारयेत् ।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषाङ्के फलमादिशेत् ॥९८॥
एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पंचद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ।
त्रिषष्ठं तु समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ॥९९॥

प्रभव आदि सम्वत्सर संख्या को दूना करके तीन घटा देवे सात का भाग देवे जो अंक शेष रहे उससे फल कहे, जो १।४ शेष रहें तो दुर्भिक्ष जानना, ५।२ शेष रहें तो सुभिक्ष कहना, ३।६ शेष रहें तो सम भाव जानना, शून्य शेष रहे तो पीड़ा जानना।।९८-९९।।

वारानुसारमासफल

पञ्चार्कवासरे रोगाःपञ्च भौमे महद्भयम् ।
पञ्चार्किवारा दुर्भिक्षं शेषा वाराः शुभप्रदाः ॥१००॥

महीने में पांच रविवार हो तो रोग होवे, पांच मंगल होने से महाभय होवे, पांच शनि हो तो दुर्भिक्ष होवे, शेष (चन्द्र, बुध, बृहस्पति शुक्र) होवें तो शुभ जानना।।१००।।

चन्द्रग्रहणविचार

भानोःपञ्चदशे ऋक्षे चन्द्रमा यदि तिष्ठति ।
पौर्णमास्या निशाशेषे चन्द्रग्रहणमादिशेत् ।।१०१।।

सूर्य नक्षत्र से पन्द्रहवें नक्षत्र में जो चन्द्रमा हो तो पूर्णमासी को प्रतिपदा की सन्धि में रात्रि समय चन्द्रग्रहण होता है।।१०१।।

सूर्यग्रहणविचार

विधूनग्रहस्तनक्षत्रात्षोडशं यदि सूर्यभम् ।
अमावास्यादिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ।।१०२।।

जिस चान्द्रमास में पूर्णिमा के नक्षत्र से सोलहवां नक्षत्र सूर्य स्थित नक्षत्र हो अथवा प्रतिमास की अमावस्या के दिन सूर्य चन्द्र एक राशि पर होते हैं परंतु एक नक्षत्र पर उस दिन हों तो प्रतिपदा की संधि में दिन के समय सूर्यग्रहण होता है।।१०२।।

घातचन्द्रविचार

जन्मस्थो मेषराशे स्याद्वृषभस्य तु पञ्चमः ।
नवमो मिथुनस्येन्दुद्वितीयः कर्कटस्य च ।।१०३।।
षष्ठस्तु सिंहराशेश्च कन्यायां दशमःस्मृतः ।
तृतीयस्तु तुलाराशेर्वृश्चिकस्य च सप्तमः ।।१०४।।
चतुर्थो धन्विनो ज्ञेयो मकरस्याष्टमस्तथा ।
कुम्भस्यैकादशःप्रोक्तो मीनस्य द्वादशःस्मृतः ।।१०५।।
घातचन्द्रा इमे वर्ज्या यात्रायां राजदर्शने ।
विवाहे वाहनारोहे युद्धे भैषज्यसेवने ।।१०६।।

मेषराशि वाले को जन्मचन्द्रमा, वृष को पांचवां, मिथुन को नववां, कर्क को दूसरा, सिंह को छठा, कन्या को दशवां, तुला को तीसरा, वृश्चिक को सातवां, धनु को चौथा, मकर को आठवां, कुंभ को ग्यारहवां, मीन को बारहवां चन्द्रमा घातक कहा है। यात्रा, राजदर्शन, विवाह, वाहन के चढ़ने युद्ध और औषधसेवन में वर्जित करे।।१०३-१०६।।

तीर्थयात्राविवाहान्नप्राशनोपयनयादिषु ।
माङ्गल्यसर्वकार्येषु घातचन्द्रं न चिन्तयेत् ।।१०७।।

तीर्थयात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन आदि मङ्गल कार्य में घातचन्द्र का विचार न करे।।१०७।।

ऋणिधनिविचार

स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं योऽधिकःस ऋणी भवेत् ।।१०८।।

अपने वर्ग को दूना करके परवर्ग संख्या जोड़कर आठ का भाग देवे एवं परवर्ग को दूना कर निज वर्गसंख्या मिलाय आठ का भाग देवे जिसका शेष अंक अधिक संख्यावाला हो वह ऋणी जानना।।१०८।।

तत्कालपंचांग

सूर्योदयाद्गतघटीदलमिश्रिता च वारर्क्षयोगतिथयो
निजभागहार्य्याः । सद्यो हि राजगमनाय सुखं प्रदिष्ट-
मुद्दालकेन मुनिना भणितं पुरस्तात् ।।१०९।।

सूर्योदय से गत घटी में उससे आधी संख्या मिलाय अर्थात् इष्ट घटी को डचौढ़ा करे उसमें ७ का भाग देके शेषांक से सूर्यादि वार जाने। २७ का भाग देके अश्विन्यादि नक्षत्र और विष्कंभ आदि योग जानना, १५ का भाग देके प्रतिपदादि तिथि जानना, शीघ्र राजयात्रा के निमित यह पंचाग विचारे यह उद्दालक मुनि ने पूर्व वर्णन किया।।१०९।।

गुर्वादित्यविचार

यद्येकराशौ गुरवोऽर्कयोगे न कारयेत्सर्वशुभं वरिष्ठम् ।
ऋक्षान्तरेऽर्केज्ययदेकराशौ तदा न दोषः कथितो
मुनीन्द्रैः ।।११०।।

यदि गुरु, सूर्य एक राशि पर हों तो शुभ कार्य नहीं करे परंतु यदि नक्षत्रभेद हो और जो एक राशि पर सूर्य गुरु हों तो कुछ दोष नही ऐसा मुनियों ने कहा है।।११०।।

चन्द्रभ्रमणविचार

अजमुखहरिचापाद्यादिचारुक्रमेण भ्रमतितर
दिशायां चन्द्रमाश्चाष्टदिक्षु । घनातिथिशशि
नेत्रे भूपमेघाश्रुतीन्दुखबुजतिथिघटीभिर्दक्षि
णाग्रे शुभं स्यात् ।।१११।।

मेष, सिंह, धनु आदिका चन्द्रमा पूर्व आदि आठों दिशाओं में क्रम से २१।१५।२१।१६।१७।१४।२०। १५ घटीपर्यंत भ्रमण करता है, चन्द्रराशि १३५

ई.	पू.	अ.
१५	१७	१५
उ.	सर्वघटी	द.
९०	१३५	२१
वा.	प.	नै.
१४	१७	१६

में क्रम से चक्र में लिखे अनुसार दिशा जानकर आवश्यक कार्य निमित्त चन्द्रमा दहिने और समुहे शुभ विचारकर बताना।।१११।।

नामराशिप्रधानता

देशे ज्वरे ग्रामगृहप्रवेशे सेवासु युद्धे व्यवहारकार्ये । द्यूते च दानादिषु नामराशिर्यात्राविवाहादिषु जन्मराशिः तथाच–देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके । नाम-राशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ।।११३।।

देश, ज्वर, ग्रामवास, गृहप्रवेश, सेवा, युद्ध, व्यवहारकार्य द्यूत कर्म, दान आदि कामों में नाम राशि से विचार करे, यात्रा विवाह आदि कार्यों में जन्मराशि से विचार करना योग्य है।।११२-११३।।

विवाहादौ पत्नीस्थितिविचार

**सीमन्ते च विवाहे च चतुर्थीसहभोजने ।
दाने व्रते मखे श्राद्धे च पत्नी तिष्ठति दक्षिणे ।।११४।।**

सीमन्तकर्म, विवाह, चतुर्थी और भोजनकर्म, दान, व्रत, यज्ञ श्राद्ध में स्त्री दाहिनी ओर बैठती है।।११४।।

द्वादशस्थचन्द्रपरिहार

**पट्टबन्धनचौलान्नप्राशने चोपनायने ।
पाणिग्रहप्रयाणे च चन्द्रमा व्ययगःशुभः ।।११५।।**

पट्टबंधन, मुंडन, अन्नप्राशन, उपनयन, विवाह, यात्रा इन कर्मों में चन्द्रमा बारहवां शुभ होता है।।११५।।

ग्रंन्थसमाप्तिसमय

**रामर्त्वङ्कचन्द्रेऽब्दे माधवस्यासितेतरे ।
पञ्चम्यां शनिवारे च ग्रन्थःसम्पूर्णतां गतः ।।
भाषेयं रचिता प्रेम्णा श्रीनारायणशर्म्मणा ।
अत्र कुत्राप्यशुद्धं चेत्क्षन्तव्यं विबुधैर्नरैः ।।**

विक्रमीय सम्वत् १९६३ वैशाखशुक्ल पञ्चमी शनिवार को यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ। यह भाषा प्रेम से पंडित नारायणप्रसादमिश्र ने रचना करी, यहां कहीं कुछ भी अशुद्धता हो तो पंडितजनों को क्षमा करना चाहिये

इति श्रीनन्मिश्रशोभारामसुतज्योतिर्वित्पंडितनारायणप्रसादमिश्रविलिखिते बालबोधज्योतिषसारसंग्रहे मिश्ररत्नं पंचमं समाप्तम् ।।५।।

इति बालबोधज्योतिषसारसंग्रहः समाप्तः

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

